प्रकाशक—
धन्नोमल कपूरचन्द जौहरी,
मालीवाड़ स्ट्रीट, दिल्ली।

To be had of
DHANNOMAL KAPOORCHAND Jewellers,
Maliwar Street,
DELHI.

पुस्तक मिलनेका पता—
धन्नोमल कपूरचन्द जौहरी,
मालीवाड़ स्ट्रीट, दिल्ली।

मुद्रक—
शिवचन्द तिवारी,
जगदीश प्रेस
१०८, काटन स्ट्रीट,
कलकत्ता।

भूमिका



आजकल कतिपय जैन नामधारी व्यक्तियों ने अपने विपरीत मन्तव्यों द्वारा दया-दान आदि पवित्र महावीर स्वामी के सिद्धान्तों का जिस निष्ठुरता के साथ विरोध किया है उसका अवलोकन करते हुये कहना पड़ता है कि—तीर्थंकरों के उक्त सिद्धान्तों की इन निर्दय सिद्धान्तों से बचाना प्रत्येक धार्मिक जैन का कर्त्तव्य है।

मारवाड़ और मेवाड़ आदिमें रहनेवाली बहुसंख्यक जनता अशिक्षित तथा शास्त्र सम्बन्धी ज्ञान से रहित होकर दान, दया के विपरीत सिद्धान्त को मानती है; उसके सुधार तथा शिक्षा का कोई उपयुक्त साधन सम्प्रति नहीं है, बल्कि दया-दान के विरोधी नामधारी "जैन साधुओं" की बनाई हुई ढालों (पद्यों) के फेर में पड़कर बुरी तरह से अज्ञानान्धकार में फंसी हुई है।

इनके उद्धार का उपाय—तर्क वितर्क करना—सच्छास्त्र अवलोकन करना, अत्यन्त निषेध (सख्त मना) किया गया है। अतः इनके उद्धार तथा धर्म सम्बन्धी शास्त्रीय ज्ञान का एक यही उपाय शेष रह गया है। वह है अनुकम्पा आदि विषयक ग्रन्थों का प्रचार करना।

नाथो बाई तथा पिता का नाम श्री जीवराज था। आप ओसवाल वंश में कुवाड़ गोत्रीय थे। सांसारिक विषयों को विष के समान समझ कर पूर्ण वैराग्य सम्पन्न हो, आत्म कल्याणार्थ मुनी श्री १००८ श्री मगन मुनी जी से सं० १६४६ वि० में दीक्षा ग्रहण की। अतः आपका जन्म मारवाड़ में न होने से मातृ-भाषा मारवाड़ी नहीं है। तथापि अपनी विमल प्रतिभा से थोड़े ही समय में मारवाड़ी भाषा भी अच्छी प्रकार जानली।

धर्म सम्बन्धी सिद्धान्तों को यदि मारवाड़ी भाषा में न बना कर शुद्ध हिन्दी में रचना करते तो जिस सिद्धान्त को लक्ष्य करके इसकी रचना की गई है उससे सर्वथा नहीं तो अधिकांश में जनता को उस ज्ञान से वंचित रहना पड़ता, क्योंकि प्रत्येकप्राणी अपनी मातृ भाषा में जितना शीघ्र किसी ज्ञान को धारण कर सकता है, उतना किसी अन्य भाषा से नहीं। ऐसा निश्चय कर पूज्यश्रीजी ने इन ढालों को मारवाड़ी भाषा में उसी तर्ज और उदाहरण पर रचा, जिस तर्ज और उदाहरणमें दया-दान को पाप बतला कर धर्म विरुद्ध ढालें बनाई गई थीं।

पूज्यश्रीजी ने भाषा और कविता पर उतना ध्यान नहीं दिया है जितना इन तेरह पंथी नामधारी साधुओं के अध्यारोपित दान-दया के विरुद्ध जमे हुये भावों के मिटाने पर दिया है। आपने अपनी कवित्व-शक्ति का परिचय देने के लिये नहीं, किन्तु भयंकर अंधकार में पड़ी हुई जनता का उद्धार करनेके लिये ही इनका निर्माण किया है अतः पाठक वृन्द इस पुस्तक

को कविता की दृष्टि से नहीं, भावों की दृष्टि से देखने की कृपा करेंगे।

पूज्य श्रीजीने यद्यपि शास्त्रानुकूल ही ढालों की रचना की है तथापि अपने दृष्टि दोष से यन्त्रालय की या किसी कार्यकर्ता की असावधानी से (ऐसा होना स्वाभाविक है) कोई भूल रह गई हो तो उसके लिये कार्यकर्ता ही उत्तरदायी है। पुस्तक के आदि में शुद्धिपत्र लगा दिया गया है परन्तु मात्रायें यंत्रालय चलते २ टूट जाती हैं। अतः कुल पुस्तक का शुद्धिपत्र होना किसी अंश में असम्भव नहीं तो दुस्साध्य अवश्य है।

इस संस्करण में पूज्य श्री १००८ श्री जवाहिरलाल जी महाराज के सुयोग्य शिष्य श्री घासीलाल जी महाराज की बनाई हुई ढालें भी उपयुक्त समझकर अन्त में सम्मिलित कर दी गई हैं। हमें पूर्ण विश्वास और आशा है कि निष्पक्ष तथा सरल मनोभाव से अध्ययन करने पर अज्ञान का पर्दा अवश्य खुल जायगा।

विनीत—

[illegible]

विषय-सूची

पहली ढालके दोहे

ढाल पहली

तीसरी ढालके दोहे

ढाल तीसरी

—-—

सातवीं ढाल के दोहे—पेज २००

ढाल—सातवीं पेज-२०६

——

श्री गब्बूलालजी कृत ढालें

॥ इति शुभम् ॥





चित्रमय अनुकम्पा-विचार

दोहा

करुणा वरुणालय प्रभो, मङ्गलमूल अनन्त।
जय-जय जिनवर विबुधवर, सुखमय सुषमावन्त ॥१॥
अनन्त जिन हुआ केवली, मनपर्य्यव मतिमन्त।
अवधिधर मुनि निर्मला, दशपूर्व लगि सन्त ॥ २ ॥
आगम चलिया ये सहू, भाषे आगम सार।
वचन न श्रद्धे तेहना, ते रूलसे संसार ॥ ३ ॥
अनुकम्पा आछी कही, जिन-आगम रे मांय।
अज्ञानी सावज कहे, खोटा चोज लगाय ॥ ४ ॥
हालां नहिं, जालां हुई, अनुकम्पा री धान।
पंचमकाल प्रभाव थो, हा ! हा ! त्रिभुवन तान ॥५॥
अनुकम्पा उठायवा, मांडो माया जाल।
मूरख मछला ज्यों फँस्या, रुले अनन्तो काल ॥ ६ ॥
दुःखनि आरे पंचने, कुगुरु चलायो पन्थ।

अनुकम्पा खोटी कहे, नाम धरावे सन्त ॥ ७ ॥
आक-थोर ना दूध सम, अनुकम्पा बतलाय।
मन सों सावज नाम दे, भोलाने भरमाय ॥ ८ ॥
सपाप सावज नाम है, हिन्सादिक थी होय।
अनुकम्पा हिंसा नहीं, सावज किस विध होय ॥ ९ ॥
अनुकम्पा रक्षा कही, दया कही भगवन्त।
पाप कहे कोई तेहने, मिथ्या जाणो तन्त ॥ १० ॥
अमृत एक सो जाणज्यो, अनुकम्पा विण एक।
भेद प्रभू नहिं भाखियो, सुनर मांही देख ॥ ११ ॥
तो विण कुगुरु कदाग्रहे, चढ़िया मिथ्या घाँस।
मन सूं करे परूपणा, करड़ी ज्यांरी रीस ॥ १२ ॥
निरवद्यने सावद्य वलि, अनुकम्पा रा भेद।
अण हूंता कुगुरु करे, ते सुण उपजे खेद ॥ १३ ॥
भरमजाल नाशन भणी, रच्यूं प्रबन्ध रसाल।
धारो भवजीवां! तुम्हे, वरतें मंगलमाल ॥ १४ ॥



ढाल-पहली

१—अधिकार मेघकुंवरका

(तर्ज—धिग धिग छे उणी नागश्रीने)

मेघकुंवर हाथी रा भवमें,
करुणा करी श्री जिनजी बनाई।
प्राणी, भूत, जीव, सत्व री,
अनुकम्पा की, समकित पाई।
अनुकम्पा सावद्य मन जागो ॥ अनु० ॥१॥
निज देह री परवा नहिं राखी,
पर अनुकम्पा रो हुवो रसियो।
बीस पहर पग ऊंचो राख्यो,
पर-उपकार सूं मन नहिं खसियो ॥अनु०॥ २॥
पड़तसंसार कियो तिण विरियां,
श्रेणिक घर उपनो गुन पाई।

आठ रमणी तज दीक्षा लीधी;
ज्ञाता अध्ययने गनधर गाई ॥अनु०॥ ३ ॥
(कहे) "बलता जीव दावानल देखी,
सुण्डसूँ पकड़के नाग बचाया।"
मूढ़मत्यांरी या खोटी कल्पना,
बलता जीव सुगर न बचाया ॥अनु०॥४॥
मण्डल जीवां थी पूरण भरियो,
शसं पैठन नै स्थान न मिलियो।
जीव लाय किण जीगां मेले,
खोटो—पक्ष मिथ्यानी झालियो ॥अनु०॥५॥
मुसलो न मार्यो अनुकम्पा बतावे,
(तो) एक जोजन मण्डल रे मांई।
जीव घणा जामें आइने बसिया,
(त्यां) सगलांने हाथी नो मारया नाहीं ॥अनु०॥६॥
(जो) मुसलो न मारया रो धर्म बताओ,
(तो) दूजा (ने) न मारयां रो क्यों नहिं केवो।
(जो) मुसला रो प्राण बचाया धर्म है,
तो दूजा जीव बचाया रो (पिण) केवो ॥अनु० ॥७॥
जोजन मन्डले जीव जो बचिया,

हाथी भवमें मेघकुमार।

ढाल पहली गाथा ७, ८ का भाव चित्र।

"(जो) सुसल्यो न मार्यो रो धर्म बतायो,
(तो) दूजा (नें) नमार्यां रो क्यों नहिं केयो ॥

(जो) सुसलारा प्राण बचाया धर्म है,
तो दूजाजीव बचाया रो (पिण) केयो॥ अनु० ॥७॥

जोजन मण्डल जीव जो बचिया,
मंडमली ताने पाप बतावे ॥

त्यांरे लेखे सुसला बचियारो,
"धर्म" कहो आ किण विध थावे ॥अनु०॥८॥





जीव दया सब जगने बताया,
आदर्शी हिंसा मेटण काजे ।
पंचेन्द्रिय प्राणी रा प्राण बचाया,
प्रत्यक्ष न्याय प्रभुजी रो राजे ॥ अनु०॥२॥
इत्यादि उपकार रे अर्थे,
न्याय करणो रो पाप ज थापी ॥
स्नान आदि पाणी बहु ढोल्यां,
जामें भी जीव जावे बहु घाणी ॥अनु०॥३॥
जिन बहु-जन्तु री हिंसा मोटी,
रक्षा जिण न्यारी मोटी जाणी ।
या ही भेद सब जगने बताया,
स्नान बिना सूतक री या वाणी ॥ अनु०॥४॥
मन्द मर्म बहु जीव मरीया,
पंचेन्द्री एकेन्द्री भेद न जाणे ।
छोटी मोटी हिंसा रा भरम,
केई अनुकंपा माहि [illegible] ॥अनु०॥ ५ ॥
जो पर प्रजा [illegible] रा [illegible],
या पाप ने [illegible] न [illegible] ।
बाहर रा जीवां री अनुकम्पा से,

भगवान श्री नेमीनाथजी का जीव छुड़ाना।

ढाल पहली गाथा ३, ४ और १३, १४ का भाव चित्र।

इत्यादि उपकार रै अर्थे,
　　　　व्यापकरणरो बातज मानी ॥
ज्यान अर्थे पाणी बहु ढोल्यो,
　　　　जामेंभी जीव जाणे बहु ज्ञानी ॥३॥
तिण पशु पक्षीरी हिंसा मोटी,
　　　　गृहस्था तिण ज्यांरी मोटी जाणे ॥
याहां भेद सब जगने बताया,
　　　　ज्ञान कियो सूतरी या वाणी ॥४॥
"म्हारे काज मरै बहु प्राणी,
　　　　हिंसा सूं डरिया निर्मल ज्ञानी ॥
मारग पशुआंरा मनस्या जाणी,
　　　　आया ने छोड़ दिया अभय दानी ॥१३॥
मन शुद्धमें नेमजी हरख्या,
　　　　बतलानी कानी सूत्रमें गाई ॥
कुंडल मुगट अरु कणदोरो,
　　　　सर्व आभूषण दीया वधाई ॥१४॥

आमिष (मांस) भक्षी रे भोजन सारू,
बांध्या छे घात दिल ठानी ॥अनु०॥ ११॥
सारथि वचने रु ज्ञान से जाणी,
दीन दयालु दया दिल आणी ।
जीवां तणो हित वंछ्यो स्वामी,
आतम सम जाण्या ते प्राणी ॥अनु०॥१२॥
ब्याह रे काज मरें बहु प्राणी,
हिंसासे डरिया निर्मल ज्ञानी ।
सारथि प्रभुजी री मनस्या जाणी,
जीवांने छोड़ दिया अभयदानी॥अनु० ॥१३॥
जीव छुट्या सूँ नेमजी हरख्या,
बत्तीसी दीनी सूत्र में गाई ।
कुण्डल युग्म अरू कणदोरो,
सर्व आभूषण दीया बधाई ॥अनु०॥१४॥
पीछे वरषीदान जो दीधो,
दान-दया दोनूँ ओलखाया ।
संजम सहस्त्रावनमें लीधो,
केवल ले प्रभु मोक्ष सिधाया ॥अनु०॥१५॥
(कड़ी) "जीवां रो हित मांहि नेमजी वंछ्यो"

दीपिकादिक री साख बतावे ।
दीपिकामें हितकारी (अर्थ) * भाख्यो,
उणने अज्ञानी आग छिपावे ॥अनु०॥१६॥
नहिं मारण ने हित बताओ,
(तो) जीव बचाया अहित किम थावे ।
नहिं मारण निज हित पहिचाणो,
मरतो बचाया स्व-परहित पावे ॥अनु०॥१७॥
जीव बचे जेनि रक्षा कही प्रभु,
देही (जीव) री रक्षा ने दया बताई ।
शास्त्रठोर में पाठ उघाड़ो,
मन्दमती रे मन नहिं भाई ॥ अनु० ॥१८॥
"जीवांनि नेमजी नाथ छुड़ाया,
मन्दमती एवो दान उथापें ।
"अवचूरी दीपिका टीका" अर्थ ने,
मन्दमति उल्टो भाव विचारे ॥ अनु० ॥१९॥

* "अनुकंपे हितैषिणो"
([illegible])
टीका—अनुकंपक [illegible]
[illegible] ।

जीव छुड्या री पक्षीसी दीठी,

"अवचूरी दीपिका टीका †" देखो ।

---

†—"जइ मज्झ कारणा एए, हम्मंति सुबहू जिया । न मे एयं तु निस्सेसं परलोगे भविस्सई ॥ सो कुण्डलाण जुयलं, सुत्तगं च महायसो । आभरणाणि य सव्वाणि, सारहिस्स पणामई ॥

(उत्त० सूत्र अध्य० २२ गाथा १९-२०)

दीपिका—तदा नेमिकुमारः किं चिन्तयति यदि मम विवाहादि कारणेन एते सुबहवः प्रचुरा जीवाः हनिष्यन्ते । मारयिष्यन्ते तदा एतत् हिंसाख्यं कर्म परलोके परभवे निःश्रेयसं कल्याणकारि न भविष्यति परलोक भीरुत्वस्य अत्यन्तं अभ्यस्तत्वात् एवं अभिधानं अन्यथा भगवतश्चरमदेहत्वात् अतिशय ज्ञानवत्त्वाच्च कुत एवं विधा चिन्ता इति भावः ॥ १९ ॥ स नेमिकुमारो महायशाः नेमिनाथस्याऽभिप्रायात् सर्वेषु जीवेषु बन्धनेभ्यो मुक्तेषु सत्सु सर्वाणि आभरणानि सारथये प्रणामयति ददाति तान्याभरणानि कुण्डलानां युगलं पुनः सूत्रकं कटिदवरकं चकारात् आभरण शब्देन हारादीनि सर्वाङ्गोपाङ्ग भूषणानि सारथये ददौ ॥ २० ॥

टीका—भवान्तरेषु परलोक भीरुत्वस्यात्यन्तमभ्यस्ततयैवमभिधानमन्यथा चरम शरीरत्वादतिशय ज्ञानित्वाच्च भगवतः कुत एवंविध-चिन्तावसरः ? एवं च विदित भगवदाकूतेन सारथिना मोचितेषु सत्त्वेषु परितोषितोऽसौ यत्कृतवान् तदाह—'सो' इत्यादि 'सुत्तकं' कटिसूत्रम्, अर्पयतीति योगः, किमेव देवेत्याह—आभरणानि च सर्वाणि शेषाणीति गम्यते ।

मूल पाठे पक्षीसा भाषी,

मन्दमती ! जरा समझो लेखो।अनु०॥२०॥

आज पिन या परतख दीखे छे,

मनशानें कांमसे स्वामी रीझे।

जद राजी हो पक्षीसो देवे,

पंडित न्याय विचारी लीजे ॥अनु०॥२१॥

जीव छुट्या प्रभु राजी न होना,

पक्षीस नेनजी काहेको देना।

"निर्दय ऐसो न्याय न लेखे,

करुनाकर यों परगट केना ॥अनु०॥२२॥

३-धर्मरुचिजीका करुणा अधिकार

कटुक आहार जेहर सम जानी,

परठन री गुरु आज्ञा दीनी।

खावन री निषेध जो कीनो,

धर्मरुचिजी 'महन' कर लीनी ॥अनु०॥ १ ॥

कटुक आहार सुँ किड़ियां मरती,

अनुकम्पा मुनि मन मांही आनी।

कड़ुवा तुम्बा री भोजन कीवो,

धर्मरुचीजी ! धन गुणखानी ॥अनु०॥२॥
गुरु आज्ञा बिन आहार कियो मुनि,
किड़ियां री अनुकम्पा आणी ।
विशुद्ध भाव मुनि रा अति आछा,
आराधिक हुया गुणखानी ॥ अनु० ॥३॥
कहता कुमती "धर्मरुचीजी [नो],
किड़ियां बचावण भाव न ल्याया ।
आपां सूँ मरता जीव जाणी ने,
पाप हटा मुनि कर्म खपाया" ॥ अनु० ॥४॥
जीव बचावा में पाप बताया,
इण विध भोला [जन] ने भरमावे ।
न्यायवादी ज्ञानीजन पूछे,
[तो] मंदमती ने ज्वाब न आवे ॥ अनु० ॥५॥
अचित नहीं मुनि बिन्दू परठ्यो,
किड़ियां मारण रा नहिं कामी ।
ज्ञान बिना किड़ियां क्या मरतीं,
आगे बचावण कामी स्वामी ॥ अनु० ॥६॥
अचित न परठ्यां पाप जो लागे,
तो गुरु परठण री आज्ञा न देता ।

उच्चारादि तिन मुनि परठे,
उपजे मरे जीव त्यां माहीं केता ॥ अनु० ॥७॥
तिण री हिंसा मुनि ने नहिं लागे,
सूतर मांहीं गणधर भाखे ।
धर्मरुचीजी तो विष ने परठ्यो,
जिनने पाप कुनकीं दाखे ॥ अनु० ॥८॥
जो मुनि कड़वो तुम्बो न खाता,
तो परठ्यां दोष मुनी ने न कांईं ।
करुणासागर किड़ियां रे खातिर,
निज तन री परवा नहिं लाई ॥ अनु० ॥९॥
या अधिकाई जीवदया री,
सूतर में गणधरजी गाई ।
"परानुकम्पे नो आयानुकम्पे*"
चौथा ठाणामें यो दरसाई ॥ अ० ॥१०॥

*—चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०—आयाणुकंपए, [illegible] नो [illegible] ॥
(ठाणांग ठाणा ४ उद्दे० ४ सूत्र ३५२)

टीका—आत्मानुकम्पक—आत्महित प्रवृत्तः प्रत्येकबुद्धो जिनकल्पिको वा [illegible] वा निर्दय:, परानुकम्पक: निष्ठितार्थतया तीर्थकर: आत्मानपेक्षो वा दयैकरसो [illegible], उभयानुकम्पक: [illegible] उभयानुकम्पक: पापात्मा कालशौकरिकादिरिति ॥

परजीवां रा प्राण बचावन,
अपना प्राण री परवा न राखे।
ऐसा तो विरला इण जग में,
धर्मरुची सा शास्तर साखे ॥ अनु० ॥११॥

४—श्री महावीरस्वामीका गोशालकपर अनुकम्पाका अधिकार

केवलज्ञानी वीर जिनेश्वर,
गौतमजी को भेद बतायो।
दयाभाव [से] अनुकम्पा करने,
में पिण गोशाला ने बचायो ॥ अनु० ॥१॥
गोशाल बचाया में पाप होतो तो,
गौतमजीने क्यों नहिं कीनो।
"पाप किया में, तुम मत करज्यो,"
यो उपदेश प्रभू क्यों न दीनो ॥ अनु० ॥२॥
केवली री अनुकम्पा देखे,
मन्दमती वामें पाप बतावे।
ज्ञानी वचन मन झूठां रा माने,
वे नर मोह मिथ्यातम पावे ॥ अनु० ॥३॥

असंजती रो नाम लेई ने,
गोशाल बचाया रो पाप जो केवे।
माखी-मूषक पात्र से काढ़े,
ज्यांरा तो जाय सरल नहिं देवे ॥ अनु० ॥४॥
जूँवां असंयति ने जो पोखे,
पाप जाणे तो क्यों नहिं फेंके।
जद कहे म्हारी दया उठ जावे,
तो वीरने दोष कहो कुण लेखे ॥ अनु० ॥५॥
प्राणि आदि अनुकम्पा करने,
वैसायण जूँवां शिर धारे।
सूत्र भगोती सतक पन्द्रहवें,
केवल ज्ञानी वचन उचारे ॥ अनु० ॥६॥
प्राणी भूत जीव सत्वानुकम्पा,
साताबेदनी रो कारण भाख्यो।
सप्तम शतक छठे उद्देशे,
वीर प्रभु गौतम ने दाख्यो ॥ अनु० ॥७॥
मेघकुँवर अधिकार पाठ यों,
प्राणी भूतादि जीवदया रो।
यां पाठां में असंजति आया,

पाप नहीं अनुकम्पा किया रो ॥ अनु० ॥८॥

अनुकम्पा उठायन कारण,
वीरने छेपी पाप बतावे ।
सूत्र रो न्याय बतावे ज्ञानी,
तो मंदमती ने जवाब न आवे ॥ अनु० ॥९॥

[कहे] "दोय साधां ने क्यों न बचाया,
गोशाला री बलता जाणी ।"
(उत्तर) आयुष आयो ज्ञानी जाण्यो,
न्याय न मोले खेंचाताणी ॥ अनु० ॥१०॥

विहार करायां तो थारे [लिए] लेखे,
दोष तो काई लेश न लागे ।
क्यों न विहार करायो स्वामी,
घात जाणता [वा] दोनांरी मागे ॥ अनु० ॥११॥

जद कहे "निश्चय ज्ञानमें देख्यो,
दोनां री घात यहां इज आई ।
आगे विहार करायो नाहीं,
भवितव्यता टाली नहिं जाई" ॥ अनु० ॥१२॥

मरण भाव यों ही तुम जाणो,
अनुकम्पा में [तो] पाप न कांई ।

ज्ञानी ज्ञान देखे ज्यों घरते,
    तिणरी खोंच करो मन भाई ॥ अनु० ॥१३॥
अनुकम्पा सावज थापण नें,
    सूत्रपाट रा अरथ ने ठेले ।
छे लेश्या छद्मस्थ वीर रे,
    बोल मिथ्यानी पापको झेले ॥ अनु० ॥१४॥
किसन, नील, कापोत लेश्या रा,
    भावमें साधुपणो नहिं पावे ।
प्रथम शतक दूजे उद्देशे*,
    (तो) वीरमें षट्लेश्या किम थावे ॥अनु० ॥१५॥
"कषाय कुशील" रो नाम लेई ने,
    अज्ञानी भोला (ने) भरमावे ।
मूल-उत्तर गुण दोष न सेवे,
    भाव माठी लेश्या किम पावे ॥ अनु ० ॥१६॥
कषाय कुशील भाव लेश्या जो माठी,
    दोनों (तो) अपड़िसेवी क्यों कहता ।
इन लेखे द्रव्य लेश्या छः जाणो,
    भाव लेश्या (रा) शुध भाव वदीता ॥अनु०॥१७॥

* भगवती सूत्र

'कषायकुशील' 'सामायिक' चारित्रे,
छे लेश्या रो काम जो आयो ।
प्रथम शतक दूजे उद्देशे,
टीकामें तिण रो भेद बतायो ॥ अनु० ॥१८॥
किसन नील कापोत द्रव्य लेश्या (में),
साधुपणों शुद्ध भावे जाणो ।
छ लेश्या तिण लेखे कहिये,
भावे तो तीनों ही शुद्ध पिछाणो ॥अनु० ॥१९॥
तेथी छे लेश्या द्रव्य कहिये,
भावे तो तीनों ही शुद्ध पिछाणो ।
कषायकुशील अरु संजम मांही,
भाव भली लेश्या मन आणो ॥अनु० ॥२०॥
छेदोपस्थापन अरु सामायिक,
संयम छे लेश्या द्रव्य जाणो ।
यां रो न्याय समरथपणे,
भावे तो तीनों ही शुद्ध पिछाणो ॥अनु० ॥२१॥
इण न्याय द्रव्य छ लेश्या पावे,
ज्ञानी न्याय आगममें बतावे ।
डाहा होय विवेक सूं तोले,

खोटी भाणवे समकित जावे ॥अनु० ॥२२॥
पुलाक पडिसेवन कुशील ने,
मूल उत्तरगुण दोषी भाष्या ।
ते (पिण) तीनूं भाव शुद्ध लेश्यामें,
मूलपाठे सूतर में दाख्या ॥ अनु० ॥२३॥
बुकस पिण उत्तरगुण दोषी,
तीन भावलेश्या निर्मल पावे ।
कषायकुशील तो दोष न सेवे,
खोटी लेश्यां रा भाव क्यों आवे ॥अनु० ॥२४॥
कल्पातीत अरु आगम विहारी,
छद्मस्थपणे प्रभु पाप न कीनो ।
आचारंग नवमें अध्ययने,
केवलज्ञानी परकाश यूं दीनो ॥अनु० ॥२५॥
अनुकम्पा कर गोशालो बचायो,
मन्दमती रे मन नहीं भायो,
अछती रे लेश्या प्रभु रे लगाई,
अनुकम्पा-द्वेषी आल चढ़ायो ॥अनु० ॥२६॥

५—जिनऋषीका अधिकार

(कहे) "जिनऋषि यह अनुकम्पा कीधी,
रेणादेवी सामो निण जोयो।
शैलक यक्ष हेठो उतार्यो
देवी आय तिण खड्ग में पोयो।
आ अणुकम्पा सावज जाणो"

(अनु० ढाल १ गा० १०)

सूत्र विरुद्ध यों वात उठा केई,
अनुकम्पा सावज बतलावे।
अनुकम्पा पाठ तिहां नहिं चाल्यो,
अज्ञानी झूठा गोला चलावे ॥अनु०॥१॥
"कलुणारसे रयणा जद बोली,
जिन ऋषियां रे कलुणारस आयो।
कलुण पाठ ज्ञातासूत्रमें,
तो पिण गोला भरम फैलायो ॥अनु०॥२॥
कलुणारस अनुयोग दुवारे,
आठवों (रस) पाठमें वीर बतायो।

प्रिय रो वियोग हुआ थो आवे,
ऐसो श्री गणधरजी गायो ॥ अनु० ॥३॥
करुण रस जिण करिणां रे आयो,
रेणादेवी रा वियोग थी पायो ।
दोनूं सूतर रो पाठ सरीखो,
लक्षण से भी तुल्य दिखायो ॥ अनु० ॥४॥
मोह करुणरसमें अनुकम्पा,
भेषधारयां ए झूठी गाई ।
शंका होवे ना सूतर देखो,
मन पड़ग्यो झूठा फंद मांई ॥ अनु० ॥५॥
ठाणाङ्ग दशमें ठाण रे मांही,
अनुकम्पा-दान प्रथम बतायो ।
कारुणी दान रो पाठ है न्यारो,
अर्थ दोन्यां रो न्यारो दिखायो ॥ अनु० ॥६॥
'करुण' (रस) 'अनुकम्पा' एक नहीं छे,
"ज्ञानार्णव" रो भेद बतायो ।
अनुकम्पा, दया, रक्षा कहिये,
कारुण (रस) दुःख वियोगमें गायो ॥अनु०॥७॥
रात-दिवस ज्यों दोनों ही न्यारा,

(तासूँ) हिरणगमेषी ने पाप बतावे ।
जायण आवण रो नाम लेई ने,
अनुकम्पा ने सावज गावे ॥ अनु० ॥२॥
जावण आवण री तो किरिया न्यारी,
अनुकम्पा (तो) परिणामां में आई ।
जिन वन्दन देव आवे ने जावे,
[तो] वंदना सावज जिन ना बताई ॥अनु०॥३॥
आवण जावण [से] अनुकम्पा जो सावज,
[तो] वन्दना ने पिण सावज कहणी ।
[जो] आवण जावण वंदना नहिं सावज,
[तो] अनुकम्पा पिण निरवद वरणी ॥अनु०॥४॥
मंदमती ऊंधी श्रद्धा सूं,
अनुकम्पा सावज बतलावे ।
वन्दना ने तो निरवद के वो,
जाणे म्हारी पूजा उठजावे ॥ अनु० ॥५॥
देव करी सुलसा री करुणा,
ते थी छेहूं बाल बचाया ।
कंस रा भय थी निरभय कीधा,
अभयदान फल देवना पाया ॥ अनु० ॥६॥

सांचा हेतू जक्ष सुणाया,
[जद] ब्राह्मण बालक मारण जोया।
राजकुमारी भद्रा वारया,
तो पिण मूढ़ नहीं शरमाया ॥ अनु० ॥४॥
यक्षदेवने कोप जो आयो,
कष्ट देई ब्राह्मण समझाया।
कूटनहार ने जक्षे कूट्या,
शास्तर मांहे प्रगट बताया ॥ अनु० ॥५॥
अनुकम्पा थी तो वचन उचारया,
पिण न दया थी ब्राह्मण मारया।
भवजीवां ! तुमें सांची शरधो,
अज्ञानी खोटा वचन उचारया ॥ अनु० ॥६॥

८—अधिकार धारणीकी गर्भ विषयक अनुकम्पा

गर्भ री अनुकम्पा करी राणी,
धारणी जजतना सहु टारी।
जयणा सूं बैठे ने जयणा सूं उठे,
खाटामीठा भोजन तजे भारी ॥ अनु० ॥१॥

अँाधा री लारे आंधा जावे ॥ अनु० ॥५॥
श्रावक रा पहला व्रत मांहि,
पञ्चम अनि चारे प्रभु येपे ।
अशन समय भात पाणी न देवे,
[तो] अतिचार लागे व्रत नहिं रेवे ॥अनु०॥६॥
भातपाणी छोड़ाया हिंसा,
[तो] गर्भ भूखे मारया किम धर्मो ।
अज्ञानी इतनो नहिं सोचे,
गर्भ रा दया उठाई अधर्मो ॥ अनु० ॥७॥
जो बालक ने बाप चुंखाचे,
[तो] पेहलों व्रत श्राविका रो जावे ।
[जो] गर्भने पाई भूखों मारे,
तो तपव्रत तिण रे किम थावे ॥ अनु० ॥८॥
गर्भवती ने तपस्या करावे,
उपवासादि रो उपदेश देवे ।
गर्भ मरे तिण री दया नांहीं,
प्रगट अधर्म ने धर्म वे केवे ॥अनु०॥९॥
गर्भ आहार माता रे आहारे,
'भगवती' मांहीं वीरजी भाषे ।

वूड़ा रे घर निज हाथ पुगाई ।
दुरगुण नाशक सद्गुण भासक,
अनुकम्पा री रीत दिखाई ॥२॥
मोह-अनुकम्पा इणने बतावे,
अज्ञानी ऊंधा हेतु लगावे ।
स्वार्थ रहित अनुकम्पा धरम ने,
सावज कहि कहि जन्म गमावे ॥३॥
ईंट तोकण जिन आज्ञा न देवे,
तिन सूं अनुकम्पा सावज केवे ।
ऊंधी श्रद्धा थी ऊंधो सूझे,
निणथी कुहेतू पहुला देवे ॥४॥
अनुकम्पा परिणाम में आई,
ईंट तोकण किरिया छे न्यारी ।
[जो] नेमवन्दन री मनसा जागी,
[तब] चतुरंगी सेना सिणगारी ॥५॥
सेन्या री जिन आज्ञा नहिं देवे,
वन्दनभाव तो निर्मल जागे ।
(तिम) ईंट तोकण री आज्ञा न देवे,

(जिण) अनुकम्पा जिन आछी जाणी ॥६॥

वन्दनकाजे सेना चलाई,
अनुकम्पा काजे ईंट उठाई ।
सेना चले वन्दन नहिं सावज,
अनुकम्पा ईंट री सावज नाहिं ॥७॥

ईण मांत्र वन्दन फल आख्यां,
कल्याणगत ! गुणगांन रे मांही ।
अनुकम्पा फल सातावेदनी,
भगवतिसूत्रे जिन फुरमाई ॥८॥

दोनों कारज आज्ञा मांहीं,
समदृष्टी रे आज्ञा मांहीं ।
भवछेदन (संसार घटन) सकाम निर्जरा,
ज्ञानादिक गुण में आई ॥९॥

पुण्य बंधे अनुकम्पा सूं,
अकाम निर्जरा में जिन भाखे ।
आगे पहुंचे समकित पाय,
यह ना जिन आज्ञा में आवे ॥१०॥

दुनियादार देव दर्शित सावी,

पंचेंद्रिय जीवां ने मारण धावे ।
मांस अर्थी भूख दुःख रा पीड़्या,
थां अज्ञानी जीवांने कोण चेतावे ॥११॥
दयावन्त [वाने] उपदेशे वारयां,
अचित वस्तु देई कारज सारया ।
पंचेन्द्रिय जीव रा प्राण बचाया,
हिंसक हिंसादि पाप ज टारया ॥१२॥
मूरख इणमें पाप बतावे,
ज्ञानी पूछे जब जाब न आवे ।
जो हिंसा उपदेशे छुड़ावे,
वाहिज साज देई ने छुड़ावे ॥१३॥
हिंसा छूटी दोनों हि ठामे
जिण में फर्क न दीसे कांई ।
साज सूँ हिंसा छुटी तिण मांहीं,
एकान्तपाप री कुमति ठेराई ॥१४॥
साज सूं हिंसा छुट्या मांहो पापो,
तो घोड़ा दोड़ावण* जुक्ति यी लायो ।

* जैसा कि ये कहते हैं :—
न्याय राजाने इम कहे, सांभल्यो महाशयजी ।

जिम श्रावक परदेशी राय ने
केशी समण जद धर्म बताणी ॥१८॥
थांरा दोखाई राजाने ल्याया,
इण में तो धर्मदलाली बताये ।
(तो) साज देई ने हिंसा छुड़ाने,
(आने) पाप बतावतां लाज न आवे ॥१९॥
सुबुद्धि प्रधान थो जितशत्रु राजा,
पाणी परिणाम थी समझाणो ।
था पण धर्म दलाली जाणो,
आप हुयां मे अरुण दिखाणो ॥२०॥
नातर सूरा रा नाम लेई ने,
कुमतो भोलां ने भरमावे ।

[illegible] ।
[illegible] ॥१॥
[illegible] ने, [illegible]
[illegible] ॥२॥
[illegible] ।
[illegible] ॥३॥
([illegible] —१०)

सचित देई सूखादि छुड़ावे,

जारी तो चर्चा मूल न लावे ॥१८॥

सचित साहाय अनुकम्पा जो होवे,

(तो) सचित समदृष्टि क्यांने खवावे ।

ऊंधा हेतु अणहुंता लगावे,

ज्ञानी रे सामे जवाप न आवे ॥१९॥

१०—अधिकार धूपमें पडे हुए जीवाके सम्बंधमें ।

तड़के तड़फत जीवां ने देखी,

दया लाय कोई छाया* में मेले ।

अज्ञानी तिण में पाप बतावे,

खोटा दांव कुगुरु यों खेले ।

अनुकम्पा सावज मत जाणो ॥ १ ॥

---

* जैसा कि वे कहते हैं:—

जाड़ी जो मेले छाया, असंजमो रो वियावच लागे ।

या अनुकम्पा साधु करे तो, जाय पांचों ही महाव्रत भागे ।

आ अनुकम्पा सावज जाणो ॥ १८ ॥

भगवति पन्द्रहवें शतक में,
वीर प्रभु गौतम ने भाखे
तप तपे वैशायण नामां,
बेले-बेले पारणो राखे ॥ २ ॥
सूरज आतापना लेतो ऊंचो,
माथा लाम्बा सूं जीव पड़ता ।
प्राणी, भूत, जीव दया आणी,
ज्यांने उठाई माथा धरता ॥ ३ ॥
बाल तपस्वी दया जूंआं पर,
पड़ता सूं लेकर मस्तक मेले ।
गोशाल देख ने नाम बताये,
दया उठावण माया खोले ॥ ४ ॥
मन मां विचारा निरमल केवे,
अनुकम्पा आगम कहि देवे ।
अनुकम्पा प्रभु निरमल भाखी,
सूत्रे स्थान सुगम में देवे ॥ ५ ॥
तीर्थंकर-सर्वज्ञने शास्त्र में देवे,
असंयमी री सावद्य केवे ।

भेषधारी कहे "साधु मेले तो,
त्यांरा पांचो ही (महा) व्रत नहिं रेवे" ॥ ६ ॥
चतुर पूछे कोई भेषधारी ने,
जूंवां असंजति ने घे पोखो ।
नीचे पड़ी ने पाछो उठावो,
महाव्रत रो थारे रखो न लेखो ॥ ७ ॥
दशवैकालिक चौथे अध्ययने,
त्रसजीवां अनुकम्पा काजे ।
साधुने प्रभुजी विधी बतावे,
मूलपाठ में इणविध राजे ॥ ८ ॥
उपासरा पलि उपधी मांई,
त्रसजीव देख दया दिल लावे ।
रक्षा रे ठामे त्यां ने मेले,
दुःख रे ठाम नहां परठावे ॥ ९ ॥
जीव बचाया जो महाव्रत भागे,
(तो) शास्त्रमें आज्ञा प्रभु किम देवे ।
'भारीकर्मा लोगांने भोल्प करण ने'
दया में पाप मिथ्याती केवे ॥ १० ॥

११—अधिकार अभयकुमारकी अनुकम्पाका

अभयकुंवर तप तेलो करने,
पोषधमें सहित पांचों कर बेठो।
पूरब संगति देव ने समरयो,
मन एकाग्रह राख्यो बेठो।
अनुकम्पा सावज मत जाणो ॥ १ ॥
मोटो दिन रे बरसत प्रभाते,
आकाश बादला दीसता देखे।
तेहना री अनुकम्पा आई,
धारणीरो दुख मन रे हेते ॥ २ ॥
"अनुकम्पा कर वरसायो पाणी,"
मिथ्यात्वी रो वीं पूरो चावे।
अनुकम्पा रो मन ही आई,
इणरो तो नाम छिपाई ने राखे ॥३॥
जब जलअनुकम्पा कारज ठाणो,
जिहाँ अनुकम्पा रो नाम न जाणो।
मूढा नाम सूतर रा कहिने,

अनुकम्पा रो धर्म उठायो ॥४॥

(तप) संयमीरी अनुकम्पा करे कोइ,
समण माहाण पर प्रेम ज लावे ।
उत्तर वैक्रिय कर गुणरागी,
दर्श उमंग धरी देव आवे ॥५॥

दर्शण अनुकम्पा गुण राग तो,
निर्मल श्रीवुत्त जिन फुरमावे ।
वैक्रिय करण आवण जावण री,
क्रिया तो निण थी न्यारी बनावे ॥६॥

क्रिया योगे गुन-राग न सावज,
निन अनुकम्पा सावज नाहीं ।
सांचो न्याय सुनि मूढ़ भड़के,
खोटा पक्ष री ताण मचाई ॥७॥



१२—अधिकार पशु बांधने छोड़नेका

कहे "साधु थी अनेरा प्रगजीवां ने,
अनुकम्पा थी बांधे ने छोड़े ०।
चौमासो इण साधु ने आवे,
गृहस्थ रे (तिण) पापरो पन्थ चौड़े" ॥१॥

अनुकम्पा आगम इण ठेणें,
अज्ञानी यों पाप प्रचारे।
'निशीथ' पाठ रो अर्थ उथापर,
भोला इण्या मिथ्या मढावे।
अनुकम्पा भावत मन जाणो ॥२॥

न्याय सुणो हिंवे निशीथ पाठ रो,
"कोलुणवडियाए" प्रम आ आणो।

[illegible]
साधु [illegible],
अनुकम्पा [illegible]
[illegible],
साधु [illegible]
[illegible] अनुकम्पा [illegible] ॥
([illegible] २३)

डाभमु ज चरमादि रे फांसे,
बांधे न छोड़े मूनर री वाणो ॥३॥
डाभ चाम लक्कड़ रा फांसा,
साधु रे पास में रेवे नाहीं ।
(तो) साधु इण फांसे किम बांधे,
पण्डित न्याय तोलो मनमाहीं ॥४॥
चूरणी भाष्यमें न्याय बतायो,
सेजानर रा घर री या वातो ।
जिणरी जानामें साधु उतरिया,
तहां ये जोग मिले साक्षातो ॥ ५ ॥
साधु आचार सेजानर न जाणे,
जद वो साधु ने घर संभलावे ।
कोन खला रे कामे जानां,
बांधण छोड़ण पशु रो बतावे ॥ ६ ॥
साधु कहे हम बांधां न छोड़ां,
गृहस्थ रा घर रीचिन्ता न टावे ।
तब तो मुनि ने प्रायश्चित नाहीं,
बांधे छोड़े तो अनुकम्पा जावे ॥७॥

भाग्य चूरणी थी मिले ते नो सांधो,
विपरीत तो विपरीत बखाणो ॥१२॥
'कोत्तुण पडिया' सूत्तर पाठ रो,
चूरणी भाग्य थी अर्थ विचारो।
सांध्या छोड्या अनुकम्पा न रेवे,
दोष लागे कीनो निरधारो ॥१३॥
कुण कुण दोष बांधण में लागे,
भाग्य, चूरणी दस्या में देखो।
आपणी पर री घात ज होवे,
तिणरो बनायां इण विध लेखो ॥१४॥
बांध्या थी पशु पीड़ा पावे,
आंटी खाय रखे मर जावे।
अन्तराय बांध्या थी लागे,
तड़फड़तो अति ही दुःख पावे ॥१५॥
पर री विराधना या बतलाई,
साधु घात री हिवे सुणो वातो।
सींग थी मारे ने खुर थी चांपे,
क्रोध चढ्यो करे मुनि री घातो ॥१६

करुणा, दया, शान्ति, ऋषि चावे,
तिण रो दण्ड मुनी नहिं पावे ॥२१॥
अनुकम्पा लायां रो प्राछित केवे,
झूठा नाम सुतर रा लेवे।
भाष्य, सुतर, चूरणि, टब्बा में,
कठेहि न चाल्यो तो पिण केवे ॥२२॥
अनुकम्पा रा द्वेषी घेषी,
झूठा नाम लेता नहिं लाजे।
अज्ञान अंधेरे स्याल ज्यों कूके,
ज्ञान प्रकाशे डरकर भाजे ॥२३॥
खाड़ में पड़तां ने अग्नि में जलतां,
सिंह थी खाता साधू जाणे।
लाय दया बांधे छोड़े तो,
प्राछित नाहीं अर्थ प्रमाणे ॥२४॥
प्राचीन भाष्य अरु चूरणि में,
करुणानुकम्पा करणी बनाई।
मरतां जाण बांधे अरु छोड़े,
इणविधि में कछु प्राछित नाँई ॥२५॥

"भोष्य चूरणि" "टब्बा" री युक्ति,
क्यों नहिं मानो ? सुगुरु यों वेवे ॥१०॥
मन रे मने मनहीणा पाले,
शुद्ध-परम्परा सूत्र ने ठेले।
मारगी ने तो पावे अरु छोड़े,
दूजा जीवां री कुयुक्ति क्यों मेले ? ॥११॥
सूत्र निशीथ उद्देशे द्वादश,
इणरे नाम थी द्वन्द मचाया।
तिण कारण यों में कियो खुलासो,
सूत्र रो सांचो अर्थ बतायो ॥१२॥
जिण बांध्या अनुकम्पा न रेवे,
तिण रो प्रायश्चित निश्चय जाणो।
बांध्या छोड़्यां जीव बचे तो,
दण्ड नहीं नजा खेंचाताणो ॥१३॥

१२—अधिकार व्याधिमिटावण विषयक

व्याधि बहुत कोढ़ादिक सुण ने,
वैद्य अनुकम्पा तिणरी लावे।
प्रासुक औषध दुःख मिटावे,

साधु थी दूजा ने साता जो देवे,
पाप लगे अज्ञानी केवे।
नारिभोग दृष्टान्त देई ने,
दुर्गुणि केई मिथ्यामत सेवे ॥६॥
नारिभोगे पंचेन्द्रिय हिंसा,
मोह उदेरणा दोनां रे होवे।
यो दृष्टान्त दया (अनुकम्पा) रे जोड़े,
जो देवे वो भव-भव रोवे ॥७॥
रोग छुड़ावण तिरिया सेवण,
दोनां ने कोई सरीखा केवे।
त्यां दुर्गुण रो भेद न जाण्यो,
खोटा हेतु कुपन्थी देवे ॥८॥
रोग तो वेदनीं कर्म उदय में,
नारिभोग मोहकर्म में जाणो।
रोग मिटाया दुःख मिट जावे,
नारिभोग मोह बंधवा रो ठाणो ॥९॥
रोग मिटावामें पाप घणेरो,
नारीभोग समान बतावे।

जिन जिन देश तीर्थङ्कर जावे,
सौ-सौ कोसां रो दुःख मिट जावे।
धान (रो) उपद्रव मूल न होवे,
'ईति' मिटण अतिशय यो थावे ॥॥१५ ॥
मिरगी रे रोग मनुज बहु मरता,
जिनजी गया मिरगी नहिं रेवे,
लाखों मनुष्य मरण थी बचिया,
मिथ्यानी इणने दुर्गुण केवे ॥ १६ ॥
देश री सेन्या देशने मारे,
स्वचक्री नृप रो भय थावे।
ए गुणतीस अतीसे प्रभावे,
भीति (भय) मिटे जन शान्ति पावे ॥ १७॥
'पर' राजा री सेना आई,
देश लूटे वो दुःख अति देवे।
प्रभु परतापे भय मिट जावे,
तीस अतिशय सूत्तर केवे ॥ १८ ॥
अति वर्षा बहु जन दुःख पावे,
नदी री बाढ़े जन घबरावे।

"समवायंग चौंतीस" में देखो,
यो वृत्तान्त तो पाठमें गायो ।
सौ-सौ कोसां उपद्रव टलतो,
केवल ज्ञानी आप बतायो ॥२४॥
टलियो उपद्रव दुर्गुण जाणा,
ना प्रभुजी रा जोग सूँ दुर्गुण मानो ।
प्रभु जोगे दुर्गुण नहिं होवे,
तो मिटियो उपद्रव गुणमें बखानो ॥२५॥
आरत रुद्र जीवां रा टले अरु,
प्रभु ऊपर शुद्ध भाव ज आवे ।
परतख लाभ यों दुःख मिट्या सूँ,
प्रभु अतिशय गणधर फरमावे ॥२६॥
"रायपसेणी" सूतर में देखो,
चित्त "केशीमुनिजी" ने बोले ।
परदेशी ने धर्म सुणाया,
किण ने गुण होसी विवरो खोले ॥२७॥
दोपद चौपद जीवांने बहुगुण,
समण माहाण भिखारी रे जाणो ।

शुद्ध भाव सूं विन आरम्भ थी,
मुनि पन्या अधिको फल पावे।
जिम कोई रोगी रो रोग मिटावे,
(तो) वैद्यादिक गुण रो फल पावे ॥३३॥

१४—अधिकार साधुकी लब्धिसे साधु की प्राणरक्षाका

लब्धिधारी रा 'खेलादिक' सूँ,
सोले रोग शरीर सूँ जावे।
साधु ने रोग सूँ मरता बचावे,
(तो) ज्यां पुरुषांने भी पाप* बतावे।
अनुकम्पा सावज मत जाणो ॥१॥
पाप अठारह प्रभुजी भाख्या,

---

* जैसा कि वे कहते हैं :—
लब्धिधारी रा खेलादिक सूं,
सोलह ही रोग शरीर सूं जावे॥
वले साजे इण रोगां सुं साधु मरतो,
अनुकंपा आणी नहीं रोग गंवावे।
आ अनुकंपा सावज जाणो॥
(अनु० ढा० १ गा० २५)

लब्धिधारी ने पाप क्यों जायो ॥६॥

उत्तराध्ययन ग्यारवें मांई,

रोगी ने शिक्षा अजोग बतायो।

लब्धिधारी रा चरण फरस ने,

रोग मिट्या शिक्षा गुण पायो ॥७॥

रोग मिट्यां गुण चरणफरस गुण,

किणविध अवगुण कुगुरु बतावे।

गुणनें अवगुन रा थाप करी ने,

मिथ्यानी पोल में ढोल बजावे ॥८॥

१५—अधिकार मार्ग भूले हुएका साधु किस कारण रास्ता नहीं बतावे

अटवी रे मांहि गृहस्थी भूल्यां,

साधु ने मारग पूछण लागे।

किण कारण मुनि नाहि बतावे,

"अर्थ भाष्य" में देखो आगे।

अनुकम्पा सावज मन जागे ॥१॥

मुनि रे बताये मारग जानां,

चोर कदाचित् उणने लूटे।
सिंहादिक श्वापद दुःख देवे,
तिण उपसर्ग थी प्राण भी छूटे।
या, तिण रस्ते गृहस्थी जानां,
मृग आदिक जीवां ने मारे।
तिण कारण दयावन्त मुनीश्वर,
मार्ग बताया रो परिचय टारे।
इसड़ा सूत्र रा सरल अरथ ने,
अज्ञानी तो उलटा मोड़े।
अनुकम्पा कर मार्ग बतायां,
चार मास चारित्तर* तोड़े ॥ १
"भाष्य चूरणि" अरु मूल में देखो,

*-जैसे कि ये कहते हैं—
गृहस्थ भूलो ऊजड़ वन में, अटवी ने वले ऊजड़ जावे।
अनुकम्पा आणी साधु मार्ग बतावे, तो चार महीना रो चारित्र जावे ॥
आ अनुकम्पा सावद्य जाणो।
(अनु० ढा० १ गा० २७)

अनुकम्पा रो नाम ही नाहीं ।
तो पिण अनुकम्पा रा द्वेषी रे,
झूठ बोलण री लाज न कांई ॥ ५ ॥
छिनकारा मुनि सर्व जीवां रा,
अनुकम्पा रो प्राछित नाहीं ।
समदृष्टि तो सूतर माने,
कुगुरु री बात देवे छिटकाही ॥६॥

* प्रथम ढाल सम्पूर्णं *



अनुकम्पा कारण कोई (गृहस्थ)
सावज करे जो (कोई) काम।
(ते) कारण अनुकम्पा नहीं,
करुणा (अनुकम्पा) निरवद्य नाम ॥९॥

सावज कारण सेवनो, वन्दन सावज नांय।
अनुकम्पा तिमजानज्यो, निरमल ध्यान लगाय १०।
भाषा सुमनी धी करे, वन्दन नो उपदेश।
तिम अनुकम्पा नो करे, मुनि रे राग न द्वेष।११।
गेही पिण समझू हुये, विवेक मनमें लाय।
वन्दन अनुकम्पा करे, वैसो ही फल पाय।१२।
कुगुरु कुड़ी खेंच सूं, अनुकम्पा उत्थाप।
वन्दन रा नो लोलुपी, जोर सूं मांडे थाप।१३।
कारण कारज भेद ते, कुगुरु खोले नाय।
कारण ने आगे करि, करुणा देवि उठाय।१४।
वन्दन कारण प्रगट में, बहुविध आरंभ थाय।
कुगुरु देखे तोहि पिण; वन्दन वर्जे नाय।१५।
रस्ता री सेवा तणो, अतिशय लोभ वनाय।
गृहस्थी राखे साथ में, भोजन खाता जाय।१६।

दूसरी-ढाल

१—अधिकार जीवां री दया खातर दयावान मुनि ने बांधने छोड़ने का।

(तर्ज—होवे सामलज्यो नरनार)

डाभ मूंजादिक रे फांसे,
गाय भैंसादि बंध्या विमासे।
जो छोड़ं रखे दुःख पासे
अटवी में दौड़ी ने जासे ॥ १ ॥
रखे सिंहादिक याने खावे;
म्हारी अनुकम्पा उठ आवे।
अनुकम्पा घणी घट मांहि;
तेथी मुनिवर छोड़े नांहीं ॥ २ ॥
छोड़्या अनुकम्पा उठ जावे,
मुनिजीने प्रायछित आवे।

इम दांत्या सूँ तड़फे प्राणी,
रखे मर जावे इसड़ी जाणी ॥ ३ ॥
इण कारण बांने मांई,
अनुकम्पा घणी घट मांई ।
मरता जाणे तो बांने खांले,
दोष नाहीं अर्थ यूँ बोले ॥ ४ ॥
साधु जन रा पातरा मांही,
चिड़ियां उन्दिर पड़ियो आई ।
भेषधारी पिण काढ़णो केवे,
बिन काढ्या दया नहिं रेवे ॥ ५ ॥
(तो) अनुकम्पा थी छोड्यां पापो,
पहयो खोटो करो किम थापो ।
अनुकम्पा निरवद्य जाणो,
तिणरा साधु रे नहिं पचखाणो ॥ ६ ॥
साधू पातरा सूं जीव काढ़े,
तामें धर्म कहे धोड़े-धाड़े ।
ग्रस्ती यदि जीव छुड़ावे,
पाप लागा रो हल्लो उड़ावे ॥ ७ ॥
ग्रस्ती रे मूंज रा पासा,

पशु गंध्या पावे त्रासा।
जो उणने यो नाहिं खोले,
पाप लागे नूत्तर यों पोले ॥८॥
जो खोले तो पाप नूं बचियो,
हुवो अनुकम्पा रो रसियो।
भेषधारी उलटी सिखावे,
अरनी (रे) छोड़्यां पाप बनावे ॥९॥
तब उत्तम नर कोई प्राणी,
भेषधार्यां ने बाल्यो वाणी।
थारे पानरिक रे मांहीं,
जीव नड़क रयो दुःख पाई ॥१०॥
तिणने जीवनो काढ़ो के नांहीं
के मरवा देवो असंजति नाहीं।
कहे जीवनो काढ़ां में प्राणी,
नहिं काढ़्या पाप लेवो जाणी ॥११॥
साधु नहीं काढ़े तो पापी,
या तो ठीक तुमे पिण थापी।
(जो) जीव छोड़्यां में पाप न लागे,

उत्तर-(कोई) खोले तिण नें पाप बतावे,
(वलो) धर्म शरध्या मिथ्यात लगावे।
नर भचिया पाप कहे मोटो,
जाँरों हिरदो हुवो घणों खोटो ॥ २
थीवरकल्पी मुनि पिण खोले,
ठाणायंग चोभंगी रे ओले
द्वार खोल बाहर निकलणो,
थीवरकल्पी रा कल्प रो निरणो ॥ ३
पर री.........अनुकम्पा लावे,
द्वार खोल्या प्राछित नहीं आ
अगनी संगटाने मुनि टारे,
मनुजाँ ने तो साधु उबारे ॥ ४
पोते तो निकल झट आवे,
दूजाँ मरताँ री दया न ला
उणने तो निरदयी जाणो,
ठाणाअंग रो है परमाणो ॥ ५
अनुकम्पा रो दण्ड न आवे,
ज्ञानीजन परमारथ पावे।

अनुकम्पा रो दण्ड*बतावे,
अणहूँता ही अरथ लगावे ॥ ६ ॥
भोला ने बहु भरमाया,
कूड़ा-कूड़ा अरथ बनाया ।
अनुकम्पा में पाप ने गायो,
हलाहल कलियुग चलि आयो ॥ ७ ॥

अधिकार अपराधीको निरपराधी कहनेका

कोई चोर अने परदारी,
हत्या कीनी मनुज री भारी ।
अपराधी राजा ठहरायो,
मारण योग्य जगत दरसायो ॥ १ ॥
वधवा योग्यने 'वध्या' कहावे,
"वज्झापाणा" पाठमें गावे ।
मुनि मध्यस्थ भावना भावे,

---

* जैसा कि वे कहते हैं ।
अनुकम्पा किया दण्ड पावे पन्नारथ जिन्हा पावे ।
निरापराधे मारो टहंशं. जिन आप्नो दयालो रेण्हो ॥
(अनु० ढा० २ यान)

जाने ज्ञानी न्याय बनावे ।
मतमार मुनि नित केवे,
तेथी "माहण" पद प्रभु देवे ॥ ७ ॥
मतमार कह्याँ पाप नाहीं,
भव्य ! समझो हिरदा रे माँहीं ।
'मतमार' में पाप जो केवे,
मिथ्यामत रो पद वो लेवे ॥ ८ ॥
साधु थी अनेरा जो प्राणी,
थापे हिंसक खेंचाताणी ।
वाने मत मारण नहि केणो,
ये कुगुरु तणा छे वेणों ॥ ९ ॥
जगजीव राखण रे काजे,
सत-शास्त्र कह्या जिनराजे ।
प्रश्नव्याकरण सूत्तर देखो,
संवरद्वारे, कह्यो जिन लेखो ॥१० ॥
चार भावना मुनि नित भावे,
ते थी संवर गुण यढ़ जावे ।
मैत्री प्रमोद करुणा जाणों,

मध्यास्थ भावी······वखाणी ॥ ११ ॥
मैत्रिभाव सभी पै लावे,
गुणिजन से हर्ष बढ़ावे ।
करुणा दुःखिया-जीवों री लावे,
यथा योग्य मिटावण चावे ॥ १२ ॥
खोटा-कर्म करे कोई जाणी,
चोरी जारी जा हत्या मन आणी ।
हिंसक क्रूर-कर्मी री कारी,
देवे दुःख जगत ने भारी ॥ १३ ॥
एवा दुष्ट देखे मुनि प्राणी,
मध्यस्थ भाव लावे गुणखाणी ।
मारण योग्य ऐसो नहि बोले,
"अनुकम्पा" "बचन" नहि खोले ॥ १४ ॥
करवा योग्य कार्य जिम जाणी,
समभाव है सदा मून ठाणी ।
अनुमोदना (न) अनुकम्पा जिम देवे,
[illegible] विरुद्ध कार्य जिम सेवे ॥ १५ ॥
यह मध्यस्थ भावना जाणी,

हणरो सुगडाअंग वखाणो ।
दुष्ट जीवों रो यहाँ अधिकारो,
अध्ययन पाँचवें जाणो विचारो ॥ १६ ॥
ऊँधा अरथ करी भ्रम पाड़े,
नाखे मिथ्यामत रो खाड़े ।
"कहैं साधु थी अनेरा प्राणी,
जाने हिंसक लेखो जाणी" ॥ १७ ॥
(कहैं जिणने) मच्छमार कहैं उण री वाणी,
मारे कतणे हिंसा लागी ॥
'मच्छमार' जीव नहिं देखो,
ऐसा कुमति थापे लेखो ॥ १८ ॥
तिणे सूत्र प्रमाण दिखालो,
सभा जीव दुष्ट मत जाणो ।
सुर वाणी रो पाल्यो लेखो,
"ठाणांग" सूत्र में देखो ॥ १९ ॥
सुविध अशन वगैरा दानं,
पर मेर वगैरा स्वर्गां मानं ।
असन्नी विविध संवेगी,

(तो) भद्रिक अर्थ री होवे हाणी।
तिम हिंसक सर्व नहिं प्राणी,
अति-दुष्ट हिंसक लेवो जाणी ॥ २५ ॥
वध्याने वध्या न वतावे,
निरदोषी कह्या दोष आवे।
या मध्यस्थ भावना भाई,
दुरगुण री उपेक्षा बताई ॥ २६ ॥
करुणारो बात यहाँ नाई,
"सुगडाअँग" टीका रे माई।
इणरो ऊँधो अर्थ केई ताणे,
'मतमार' में पाप वखाणे ॥ २७ ॥
नाम सुगडाअँग रा लेवै,
खोटी जुगत्याँ मन सूँ देवे।
तिण हेत कियो विस्तारो,
शुद्ध-श्रद्धा थो है निस्तारो ॥ २८ ।



४-अधिकार जीवणा मरणा वांछणोका

जीवणो आपणो मनमें आनो,
भोजन-पान करे शुद्ध ज्ञानी।
उत्तराध्येन छवीस रे माँई,
छे कारण में यात या आई ॥ १ ॥
जो विन अवसर अन्न त्यागे,
(तो) आत्महत्या मुनिने लागे।
जीवन हेते आहार रो करणो,
सूतर में कोनो यो निरणो ॥ २ ॥
अवसर जाण मरण रे काजे,
तजे आहार धर्म शुद्ध साजे।
यों जीवनो मरणो चावे,
पाप न लागे सूत्र बताये ॥ ३ ॥
राजमती रहनेमीने भाषे,
धिक्कार तू जीवन राखे।
मरणो तुमने श्रेयकारी,
धर्म लाभ हुये तुझ भारी ॥ ४ ॥
अज्ञानी अनुकम्पा थी मागा,

ऊँधा अरथ करण यूँ लागा।
"आपणो जीवणो* साधू वंछे,
(तो) पाक-कर्म रो होवे संचे" ॥ ५ ॥
करुणा थी परजीव बचावे,
निणने पाप सँताप लगावे।
इणमें साख सँथारा री देवे,
ऊँधा अरथ सूँ दुरगति लेवे ॥ ६ ॥
पूजा-श्लाघा सँथारा में देखो,
जीवणो चावे कोई विशेखो।
अतिचार सँथारा रो भाख्यो,
पिण नहिं अनुकम्पा रो दाख्यो ॥ ७ ॥
महिमा पूजा नहिं पावे,
तथा कष्ट शरीर में आवे।
तब मरण आशंसा लावे,

---

*जैसे कि वे कहते हैं।
आपणो वंछे तो हो पापो, परनो पुन घाले संतापो।
मरणो जीवणो वंछे आसानो, समभाव राखैते सुजानो॥
(अ० ढाल २ गाथा ४१)

भोला ने नांखे झखझोले

उपद्रव मिटण कोई चावे,

निण मोंहीं है पाप पतावे ॥ ३ ॥

"संवरद्वारे" जिनजी भाख्यो,

'खेमंकर' मुनिगुण दाख्य ।

उपद्रव मेटे ते खेमंकर,

ते जीवाँ रो जाणो हितंकर ॥ ४ ॥

श्री वीर रा गुण इम भाखे,

आदर कुँवर गोशाला ने दाखे ।

त्रस-थावर (रे) खेम करंता,

शान्ति करणशील भगवन्ता ॥ ५ ॥

पर-उपद्रव मेटण चावे,

निणमें तो पाप न थावे

शीत तापादि उपद्रव कोई,

निज पे आयो मुनि लियो जोई ॥ ६ ॥

होवो-मनहोवो मुनि नहिं केवे,

आरत-ध्यान जाण मौन रेवे ।

आरत-ध्यान रो तीजो भेदो,

रोग आयाँ करे कोई लेखो ॥ ७ ॥

रोग रो निरोग जो चावे,
आरत ध्यान प्रभूजी बतावे ।
और मुनियाँ रो रोग मिटावे,
ते तो आज्ञा मांहिं कहावे ॥ ८ ॥

जिम पर-उपकार री जाणो,
पाप बैठे ना कुमति पिछाणो ।
इणां वन्दना मुनि नहिं चावे,
चावे तो दूषण पावे ॥ ९ ॥

ए आचरण आगमहि जाणो,
'सूयगडांग' सूत्र पिछाणो ।
कोई वन्दना मुनिने देवे,
दोष निशीथ सूत्र महि केवे ॥ १० ॥

'भगवति' निरवद्य जिम जाणो,
पर ना वंदना न दया रो ठाणो ।
श्री संयम पूरो गुण कहिये,
ते वंदना दोष किम कहिये ॥ ११ ॥

६—अधिकार नौकाका पानी बतानेका

साधु बैठा नावामें आई,
नावड़िये नाव चलाई ।
नाव फूटी माँय आवे पाणी,
ऊपरा-ऊपरी जल सूँ भराणी ॥ १ ॥
आना पानी बताबा रो नेमो
तेथी मुनी बतावे केनो ।
अवसर डूबण केरो आवे,
जलनाले निकल मुनि जावे ॥ २
विधिमे उतरवा नहिं घाट,
"आहारियंरियेजा" पाठ ।
जलना सूँ निकलने जाणो,
डूबजाने रो नाहिं बखाणो ॥ ३ ॥
एवा सरल-अर्थने छोड़ी,
खोटी तार्कों सूँ हा सूँ जोड़ी ।
(कहे) "मनुज बचावा पापे,
तेथी (मुनि) जल न बतावे आपे ॥

नो दृष्टव्य सनसों रे भाई
पर री अनुकम्पा धर्म रे माहिं ॥ ९ ॥
मनुजांने बचाया में धर्मों,
यो ठाणायङ्ग रो मर्मो ।
निज (अनुकम्पा) काजे न पाणी बनावे,
(निम) परकाजे पिग नाहिं दिखावे ॥ १० ॥
पाणी बनावा रो कल्प नाहीं,
मनुजरक्षा धर्म रे माहीं ।
जीव बचियां न ग्रन में भट्ठो
'निग रो मान्यो आचारङ्गो' ॥ ११ ॥
"अनुकम्पा किणरी न करणी"*
एसी आचारंगे न बरणी ।
शंका होवे तो स्तर देखो,
नाव री बनायां उठे लेखो ॥ १२ ॥
* द्वितीय ढाल सम्पूर्णम् *

* जैसे कि वे कहते हैं:—
आप डबे अनेरा प्राणी
अनुकम्पा किणरी नहिं आणी ।
(अनु० ढाल २ गा० १६)

तीसरी-ढाल



१ अधिकार मेघरथ राजाका परेवा पर दया करनेका।

(तर्ज—विछिया नी)

इन्द्र करी परसंसिया,
मेघरथ मोटो महाराय— रे जीवां।
दयावन्त दानेश्वरी,
शरणागत देवे सहाय—रे जीवां॥ १॥

मोह अनुकम्पा न जाणिये,
नहिं मोह तणो यह काम—रे जीवां।
परकाश अन्धेरा ज्यूँ जुवा,
दोयां रा न्यारा नाम—रे० मो०॥ २॥
तिण काले एक देवता,
दयाभाव देखण रे काज—रे जीवां।

रूप परेवो बाज नो,
तिण कीनो पैंकिण साज—रे० मो० ॥ ३ ॥
पड़ियो राय री गोद में,
भय थी तड़फे तस काय—रे जीवां।
शरणो दियो महारायजी,
भय मतपायो कहि वाय-रेजीवां, मो०॥४॥
बाज कहे भख माहरो,
मुझ भूखा नो यह शिकार—रे जीवां।
और कछु लेऊँ नहीं,
मोने आपो म्हारो आहार-रे० मो० ॥ ५ ॥
यो शरणागत माहरे,
और मांग तू वस्तु रसाल—रे जीवां।
जे मांगे ते आपशूँ,
हूँ जीवदया प्रतिपाल-रे जीवां, मो० ॥६॥
मांस आपो निज देह नो,
इणरे बराबर तोले—रे जीवां।
हर्षित हो राय इम कहे,
यह तो भलो कह्यो थें बोल-रे जीवां,मो०॥७॥

तुरत तराजू मांड ने,

राय खण्डन लागो काय—रे जीवां ।

हाहाकार हूओ घणो,

अन्तेवर.अति विलखायरे जीवां,मो० ॥८॥

उत्तर दीयो राजवी,

नहिं मोह तणो यहां काम—रे जीवां ।

क्षत्री धर्म छै म्हारो,

धर्म राखे के धारो ध्यान-रे जीवां,मो० ॥९॥

सब समझाया ज्ञान सूं,

बिलखाया नाना जाय—रे जीवां ।

इसड़ा धर्म जगतमें,

हुओ वली हांसा को रे जीवां मो०॥१०॥

निज नो मरणो वांछता,

ने ना जाणा धर्म रा काम—रे जीवां ।

प्राण करीने रा रखिया,

ने शुद्ध धर्म नाम-रे जीवां मो० ॥११॥

तन छेदो मन छेदो नहीं,

जाण्या जाणा राज रे जीवां ।

देव बोले इण पर वाय-रे जीवां।
अनुव्रत पांचो निर्मला,
दया-धर्म धारे चितचाय-रेजीवां, मो० ॥१॥
व्रत तोड़ हिंसा करसी नहीं
अनुकम्पा न छोड़सी आज-रेजीवां।
(जाव) धर्म न छोड़सी ताहरो
तो हूँ करसूँ मोटो अकाजरेजीवां मो० ॥२॥
वचन सुणी डरियो नहीं
इम चिन्तवे चित्त मुझार-रेजीवां।
धर्म बोध इणरे नहीं
तेथी पाप करण सूँ झार- रे जीवां मो०॥३॥
सुमति नजी कुमती भजी
तेहथी धर्म छुड़ावण चाय-रेजीवां।
मैं मर्म जाण्यो छै एहनो
तेथी धर्म छोड़्यो किम जाय रे जीवां मो०॥४॥
पाप है घातक जगतमें
दुःख देवे करे अकाज रे जीवां।
जगवच्छल जिन-धर्म है

मरतो नहिं राख्यो एक—रे जीवां मो०॥८॥
एहवी अणहूँति थाप उठायने
अनुकम्पामें थापे पाप—रे जीवां।
जारे मोह उदे अति आकरो
तेहथी खोटी करे छे थाप—रे जीवां मो०॥९॥
झाझा रावण धर्म छोड्यो नहीं
तेहथी मोह करुणा री थाप—रे जीवां।
त्यांने बुधवन्त कहे इण परे
इक हेतु रो देवां जाब—रे जीवां मो०॥१०॥
"रावण सीताने कहे
तू मुजने न करे स्वीकार—रे जीवां।
तेथी मरसे नर आन नालदा
थारे नहिं दयारो प्यार—रे जीवां मो०॥११॥
दया धर्म सुण मन वस्यो
हूँ तो सगला ने चाहूं क्षेम—रे जीवां।
थारे हिरदे खोटो चालना
म्हारे हिरदे सांचो नेम—रे जीवां मो०॥१२॥
शील न सीता खण्ड्यो

जीव रक्षा धर्म रे माँय—रे० मो० ॥१७॥
कोई देव कहे श्रावक भणी
तू दे जिन धर्मने छोड़—रेजीवां।
नहिं तो सायवी गुरणी नाहरी
जारो शीलने नाखसूँ तोड़—रे० मो०॥१८॥
धर्म न छोड़े तेहथी
कोई मूर्ख उठावे भरम—रे जीवां।
शील बचायामें पाप है
तिणरे हेते न छोड्यो धर्म—रे० मो०॥१९॥
(थलि) देव कहे धर्म न छोड़सी
झूठ चोरी रो करस्यूँ पाप—रे जीवां।
तब धर्म न छोड़े तेहथी
कोई मूढ़ करे एहवी थाप—रे० मो०॥२०॥
धर्म त्याग चोरी न छुड़ावनां
चोरी झूठ छोड़ावा में पाप—रे जीवां।
या मूरख री परूपणा
इम ज्ञानी जाणेसाफ रे ०मो० ॥२१॥
इम अठाराही पाप रो

छोड़ो धर्मने भेष री लाज—रे० मो० ॥२६॥

३—अधिकार "माता बचानेसे चुलणी पियाके व्रतादिका भंग नहीं हुआ

जरणक नी परे जाणज्यो,

चुलणीपिया नी बात—रेजीवां ।

पुत्र मार तला कर छांटना,

अनुकम्पा राखो साक्षात—रेजीवां मो० ॥१॥

अपराधीने नहिं मारणो,

कीधो पोसा माहीं नेम—रेजीवां ।

तेथी पुत्र रा मारणहार पे,

अनुकम्पा राखी घर प्रेम—रेजीवां मो० ॥२॥

मूढ़मती उल्टी कहे,

जारे दया नहिं दिल मांय—रेजीवां ।

करुणा न की अंगजात नी,

एवी खोटी बोले बाय—रेजीवां मो० ॥३॥

जो देव इणी विध बोलता,

थारा पुत्र बचायामें धर्म—रेजीवां ।

इम सुण चुलणीपिया कोपियो,
यो तो पुरुष अनारज थाय—रेजीवां।
पकड़ं, मारूं एहने,
इम चिन्ती लारे धाय—रेजीवां मो० ॥९॥
देव गयो आकाश में,
इणरे थाँभो आयो हाथ—रे...
कोलाहल कीधो घणो,
तब आई भद्रा मात—रेजीवां ,मो० ॥ १० ॥
वच्छ ! विरूप देख्यो तुमे,
नहिं हुई पुत्राँ रो घात—रेजीवाँ।
पुरुष मारण तुम ऊठिया,
व्रत-नेम भागा साक्षात—रेजीवाँ, मो० ॥११॥
इहाँ झूठा बोला इम कहे,
जाँरे नहिं अनुकम्पा सूं प्रेम—रेजीवाँ।
"अनुकम्पा करी जननी तणी,
ते सूं भागा व्रत नेम"—रेजीवां, मो० ॥१२॥
घेटा हो इण पर कहे,
मिथ्यात रा चढ़िया पूर—रेजीवाँ।

अनुकम्पा थी व्रत भागा कहे,
ते बूडा काली-धार—रे जीवां।
यही भोला ने भरमाय नें,
पकड़ डुबयो हार—रेजीवां, मो०॥१८॥
"भग्गवए भग्गनियम" रो,
वलि "भग्ग पोषध" रो अर्थ—रेजीवां।
टीका में कियो इण भाँत थो,
थें खेंच करो क्यों व्यर्थ—रे जीवां, मो० ॥१९॥
कोप करी ने दोड़ियो,
पुरुष मारण रे परिणाम—रे जीवां।
अनुव्रत भागो तेहथी,
करुणा न रही तिण ठाम—रे जीवां, मो॥२०॥
अपराधी पिण नहिं मारणो,
या पोषध रा मर्याद—रे जीवां।
भाव हुवा मारण तणा,
व्रत भागो तजो हठवाद—रे०मो० ॥२१॥
क्रोध करण रा त्याग था,
पुरुष पर आयो क्रोध—रे जीवां।

शूरादेव श्रावक तणी,

चुलणीपिया सम वात—रेजीवां ।

देव कष्ट दियो पुत्राँ तणो,

तिनमें विशेष छे इण भाँत—रे० मो० ॥२६॥

जो तूँ दया-धर्म छोडे नहीं,

तो थारी देह रे माँय—रेजीवां ।

सोले रोग मैं घालसूँ,

तूँ मरने दुर्गत जाय—रेजीवां, मो०॥२७॥

इम सुण कोप थी दोड़ियो,

चुलणीपिया सम जाग—रेजीवां ।

व्रत-नियम भागा कह्या,

ते समझ ने तज दो ताण—रेजीवां, मो० ॥२८॥

पोषा सामायक में तुमें,

एवी करो छो थाप—रेजीवां ।

देह रक्षा क्रिया भागे नहीं*,

आगार कह्यो तुम साफ—रे० मो० ॥२९॥

* जैसा कि वे "श्रावक धर्म-विचार" में श्रावक की सामायिक व्रत की ढालमें कहते हैं: -

सुम कथने शूरादेव रे,
देह रक्षा थी भागा न व्रत—रेजीवां।
हीये अनुकम्पा किणरी करा,
तिण थी भागा इणरा व्रत—रे जीवां, मो० ॥१०॥
इण कथने थें जानलो,
चुलणीपिया नी (पिण) वात—रे जीवां।
जननी अनुकम्पा थकी,
नहिं हुई व्रत री घात—रे जीवां, मो० ॥११॥

शरीर कष्टादिक तेहना,
जतन करे सामायक मांयजी
लाय चोरादिक रा भय थकी,
एकांत स्थानक अथवा मे आयजी ॥२४॥
आगरो तो आगार राखियो,
चोर रो नहीं छे आगार जी।
चोर ने त्याग्या मामाई मुझे,
त्यां ने किणविध मेलावे बहार जी ॥
मिथ्यात्व व्रत आराधिये ॥ २५ ॥
लाय चोरादिक रा भय थकी,
राख्या है द्रव्य ने मायजी।

हिंसा करण ने दोढ़ियो,
  थली मोघ आयो निगयार—रे जीवां।
अजतना व्योपार थी,
  व्रत नेम पोषव टूटी कार—रे० मो० ॥ ३२ ॥
व्रत भागे हिंसा थकी,
  यो निश्चय लीजो जाण—रे जीवां।

पाखती कपड़ादिक हुवे घणा।
  त्यांँ ने तो बाहर न ले जावे तायजी ॥ २८ ॥
राख्या ते द्रव्य ले जावता,
  समाई रो भंग न थायजी
त्यागा छे त्यां ने ले जावता,
  सामायो रो व्रत भाग जायजी ॥ २६ ॥
ग्यारहवें व्रत की ढाल में भी लिखा हैः—

पोषा ने सामायिक व्रत ना,
  सरखा छे पचखाणजी।
सामायिक तो मुहूर्त एकनी,
  पोषो दिवसरात रो जाणजो ॥ ७ ॥
पोषा ने सामायिक व्रत में,
  यां दोयां में सरखो छे आगारजी ॥ ८ ॥

महल अन्तेवर ताहरा,
अगनि में बले परतख—रे जीवां।
तुम स्वामी छो एहना,
ज्ञानादिक नी परं (याने) रख—रे० मो० ॥ ४ ॥
तब, नमीऋषिजी इम कहे,
ज्ञानादिक गुण छे मुझ—रे जीवां।
एथी बीजी वस्तु नहिं माहरे,
निश्चय-नयरी बनाई सूझ - रेजीवां. मो० ॥५॥
मुझनो ते तो बले नहीं,
बले ते न म्हारो होय रे जीवां।
यह मिथिला बलता थकाँ,
ज्ञानादिक नाश न होय रे जीवां. मो० ॥६॥
केई अज्ञानी इम कहे,
अनुकम्पा री करवा यान रे जीवां।
"नमीराज ऋषि आणी नहीं,
मोह अनुकम्पा री बान"—रेजीवां. मो० ॥७॥
(उत्तर) अनुकम्पा रो प्रश्न छे नहीं,
नहिं उत्तर में तेनी बान—रे जीवां।

थाँ झूठा गाल बजाविया,
थाँरै मोह उदय मिथ्यात—रे जीवां, मो० ॥८॥
(जो) अन्तेवर रक्षा ना करी,
तेहथी अनुकम्पा में पाप—रेजीवां
एथी करे कोई थापना,
तो उत्तर सुणजो साफ—रे जीवां, मो० ॥ ९ ॥
हिंसा, झूठ, चोरी तणा,
नमी (जी) न करावे त्याग—रे जीवां।
वस्तर पिण राखे नहीं,
संग में न रहे महाभाग—रे जीवां, मो० ॥१०॥
निज हित में तत्पर रहे,
पर साधु रो न करे काज—रे जीवां
प्रत्येकबोधी मुनि जिके,
पर रो न बंछे साज—रे जीवां, मो० ॥११॥
या प्रत्येकबोधी रो नाम ले,
कोई मूर्ख करे एहवी थाप—रे जीवां।
जो कार्य नमीऋषि ना करे,
तिण में मोहतणो छे पाप—रे जीवां, मो० ॥१२॥

इण लेखे (तो) दीक्षा देण नें,
  वलि विविध करावन नेम—रे जीवां।
ते मोह पाप में ठहरसी,
तेने ज्ञानी तो माने केम रेजीवां, मो० ॥१३॥
दीक्षा, त्याग, व्यावच तणा,
  याँ कार्य में दोष न कोय - रे जीवां।
तिन परजीव रक्षा में जाणज्यो,
  थीवरकल्पीकरे सय कोय—रे० मो० ॥१४॥
जिणकल्पी प्रत्येकबोधि नो,
  जिण कामाँ रो कल्प न होय रे जीवां।
त्याँरे देखा-देखी कोई ना करे,
  निर्दयी समझो सोय रेजीवां, मो० ॥१५॥
ठाणायंग में भाषियो,
  करुणा तणो अधिकार रे जीवां।
(वली) छती शक्ति व्यावच ना करे,
यांवे महा मोहणी रो भार - रे० मो० ॥१६॥
थीवर कल्पी रा कल्प रो,
  जिन एहवो भाष्यो मर्म रे जीवां।

शमसाणे काउसग कियो,
सोमल आयो तिहाँ चाल रे जीवां
माथे पाल बाँधी माटी तणी,
माँहि घाल्या खीरा लाल रे जीवां, मो० ॥३॥
कष्ट सह्यो वेदना घनी,
मुनि मोक्ष गया निरधार रे जीवां।
वेई मंदमती नो इम कहे,
"नेम करुणा न करी लिगार* —रे० मो० ॥४॥
पहले अनुकम्पा आणी नहीं,
और साधु न मेल्या साथ रे जीवां।

* जैसा कि वे कहते हैं: -
कष्ट सह्यो वेदना अति घणी,
नेमी करुणा न आणी लिगार रे। १८ ॥
श्री नेमि जिनेश्वर आगला
हुंतो गजसुकुमाल नो घात रे।
पहिले अनुकंपा आणी नहीं
और साधु न मेल्या साथ रे ॥ ११ ॥
(अनुकम्पा ढाल -३)

झूठा बोलता सरनो नाय—रे० मो० ॥११॥
जब ज्वाब न आवे एहनो,
आड़ा-अवला गाल्ह बजाय—रे जीवां।
म्लेच्छ शास्त्र खुटा थका,
डूंगर थी टोल गुड़ाय—रे जीवां, मो० ॥१२॥
पार्श्व-प्रभु दीक्षा ग्रही,
काउसग्ग किधो वन माय—रे जीवां।
जब कमठे मेह वरसाविओ,
उपसर्ग दीधो आय—रे जीवां, मो० ॥१३॥
तब धरणेन्द्र पद्मावती,
[illegible] लोकां [illegible]।
इन्द्रादिक [illegible]
(अनु० [illegible])

* जैसा कि वे कहते हैं:
दुःख देता देखा भगवान ने
अन्तर न आण्या [illegible] रे।
जन्हांए देव हूंता तथा
सिर किहरी न आण्या [illegible] रे।
(अनु० ढाल ३ गाथा २३)

श्रीमती अमर कुमर वली,

भील सेठ आदिक नी वात— रेजीवां ।

देव साय करी (तुमे) मानो खरो,

विच पड़िया ये सक्षात्—रेजीवां मो० ॥१६॥

यह था सम-दृष्टि देवता,

जिन-धर्म दिपावणहार—रे जीवां ।

नवकार महिमा कारणे,

संकट मेट कियो उपकार—रे० मो० ॥१७॥

कियो कनक-सिंहासन तत्खेवा ।

ऊपर अमर कुमर प्रति पैसारं,

इन आण जपो थी नवकारं ॥ ८ ॥

बछड़ा चरावतो जिहवारं,

नदी पूर आयो गुण्यो नवकारं ।

थई ततखीण सरिता दोय डारं,

इन आण जपो थी नवकारं ॥९॥

सेठ समुद्र में डूबन्तो,

नवकार गुण्यो धर चित्त शान्तो ।

सुर जहाज उठाय मेलो पारं,

इन आण जपो थी नवकारं ॥१०॥

उपसर्ग मेट्या साक्षात—रे जीवां।
तुम कथने पिण हुवो धर्म यो,
मान लेवो छोड़ मिथ्यात—रे० मो० ॥२१॥
"तो सब उपसर्ग वीरना,
देव पेम न मेट्या जाय"—रे जीवां।
एवी शंका कोई करे,
जाँरे सुध-बुध हिरदे नाय—रे० मो० ॥२२॥
निह्नैवादी अर्थविपरा,
मिटना देख्या निज ज्ञान—रे जीवां।
(ते) विघन मेट्या देवाँ हर्ष सूँ,
धर्म सेवा नो है शुभ ध्यान—रे० मो० ॥२३॥
जो होनहार टले नहीं,
ते देव न मेटे टार—रे जीवां।
त्यौंरो नाम लेइ करे मूरखा,
(उपसर्ग) मेट्याँ पाप अपार—रे० मो० ॥२४॥
मो श्रावकों उपसर्ग ना टले,
तिन महिमा मूरख स्वाम—रे जीवां।
होनहार मोटा रे देव है,

त्यांनै द्वेष घणो कृष्ण तणो,
उदय आयो मिथ्यात रो पाप—रे जीवां।
तेथी अनुकंपा में पाप छे,
एवो (कोई) मंद करे छे थाप—रे० मो० ॥२॥
त्यांनै ज्ञानी कहे समझायवा,
इन्द्र जेजे न करे काम—रे जीवां।
तिण में पाप कह्यो नो विचार लो,
केइ काम रा लेऊँ नाम—रे० मो० ॥३॥
श्रीकृष्ण नरेश्वर महामती,
जाँए पड़हो दीनो फिराय—रे जीवां।
जो दीक्षा लेवो श्री नेम पे,
मैं पिछला री करूँ सहाय—रे० मो० ॥४॥
सहस्र-पुरुष संयम लियो,
यो परतख महा-उपकार—रेजीवां।
पिण इन्द्र पड़हो फेर्यो नहीं,
तिणरो बुधवन्त करो विचार—रे० मो०॥५॥
जो इन्द्र काम कियो नहीं,
तिणसूँ कृष्णने कहे (कांई) पाप—रेजीवां।

सावद्य ने निरवद्य वली,
   अनुकंपा रा भेद दोय—रे जीवां ।
इन्द्र कया नहिं तुम भणो,
   थें भाखो क्यों निर्बुध होय—रे० मो०॥११॥
तब तो झटके बोल दे,
   म्हारे इन्द्र सूँ काँई काम—रे जीवां ।
म्हें सूत्र से कराँ पखणा,
   म्हारा गुराँ रो राखाँ नाम—रे० मो० ॥१२॥
तो समझो रे समझो जरा,
   अनुकम्पा न सावद्य होय—रेजीवां ।
सूत्र में न भाख्यो केवली,
   पछि इन्द्र कयो नहिं तोय—रे० मो० ॥१३॥
अणहुँती बात उठायने,
   मत करो अनुकम्पा री घात—रेजीवां ।
इन्द्र रो नाम लेई-लेई,
   मत कर्म बाँधो साक्षात—रे० मो० ॥१४॥



याने पेहला पिग वर्ज्यो नहीं,

जागता था संग्राम में धान—रेजीवां ।

युद्ध मिटाया पाप है,

तेथी कहो न मेटण धान''—रे० भो० ॥३॥

(उत्तर) भोला भरमावग नगो,

थो तो परतख माँड्यो फन्द—रेजीवां ।

ज्ञानी पूछे तेहने,

तब मुगड़ो हो जावे मन्द—रे० भो० ॥४॥

जो युद्ध मेटण धोर ना गया,

[illegible]—रे० [illegible] ॥५॥

[illegible]

[illegible] ।

[illegible]

[illegible] रे० [illegible] ॥६॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] रे० [illegible] ॥७॥

[illegible]

पलि साधु न मेल्या साथ"—रे० मो० ॥९॥
तो इमहिज समजो भाव थी,
संग्राम मेटण में धर्म रे जीवां।
न्याय रीत समझाविया,
शान्ति हुए न बन्धे कर्म—रे० मो० ॥१०॥
सब जीव खेमंकर वीरजी,
"सुगडायँग" माँय देख—रे जीवां।
भय मेटे सब जीव रा,
अभयंकर विरुद विशेख—रे० मो० ॥११॥
भगवन्त विचरे देश में,
सौ-सौ कोसाँ रे माँय—रे जीवां।
मनुष्याँ रे उपद्रव ना रहे,
पिण होसी तो मिटे ताँय रे० मो० ॥१२
तिन चेड़ा-कोणिक संग्राम में,
न्याय मिटाया मोटा-धर्म रे जीवां।
मिटतो न देख्यो ज्ञान में,
प्रभु ना गया समझो मर्म—रे० मो० ॥१३॥
अनुकम्पा उठायवा,

भूखा राखे भोजन ना दिये,
श्रावक होवें दया हीण—रे जीवां।
साधु आहार न देवे गृहस्थ ने,
ते तो कल्प रासण परवीण—रे० मो०॥१७॥
"साधु-श्रावक दोनों तणी,
अनुकम्पा प्रवृति एक"—रे जीवां।
यूंयों (केई) करे प्ररूपणा,
उत्तर पूछ्यां पलटता देख—रे० मो०॥१८॥
साधु उपधि में उलभिया,
उंदरादिक जीव जाण—रे जीवां।
(साधु) अनुकम्पा आणी ने छोड़ दे,
नहिं छोड्या थी होवे हाण—रे०मो०॥१९॥
गेही (गृहस्थ) रे रस्सीमें उलझिया
गायादिक प्राणी जाण—रे जीवां।
गेही दयासे छोड़ दे,
नहिं छोड्यां थी होवे हाण—रे० मो०॥२०॥
धर्म बतावे साधने,
गेहीने बतावे पाप—रे जीवां

फर्क पड्यो किण कारणे
खोटी श्रद्धा दीखे साफ—रे० मो० ॥२१॥

"साधु श्रावक री एक रीत है"
मूंढा थी बोले एम—रे जीवां।
दोनों सरीखा काममें
तुमे फर्क बनावो केम—रे० मो० ॥२२॥

जीव मरे साधु योग थी,
गृहस्थ बताया धर्म—रे जीवां।
गेही गेही ने जीव बचाय है
तिणमें तो बतावो अधर्म—रे० मो० ॥२

जीव बच्या दोनों जगा
दोनों रा टलिया पाप—रे जीवां।
इन दोनों सरिखा काममें
उलट पलट करे खोटी थाप—रे० मो०॥२

धर्म बतावे एकमें
दूजामें केवे पाप—रे जीवां।
यो कुटिल-पन्थ कुगुरां तणो

गर्दै धन्न हासल मणो. ज्ञानी करे उपाय ।
उपदेशे अत माल थी देवे कष्ट छुडाय ॥४॥
साधु वस्त्र थी साधर्मी. गृहस्थ वस्त्र थी गृहस्थ ।
मांस आरम्भ मिटाय ने, समजावी करे स्वस्थ ॥५॥
कुशल शिक्षा में सन्दर्शन. पापपन्थ हटाय ।
असंजती रो नाम ले. खोटा पंथ लगाय ॥६॥
मारगवालो असंजती. असंजती मारयो जाय ।
एक देवे सातावेदना. एक (मरा) दुखे घबराय ॥७॥
आरम्भ राग ध्यान थी. दोनों पावे पाप ।
पाप टलावे वेदना. ने ज्ञानी मन माफ ॥८॥
(कहे) "हिंसक पाप छुडाय दां. मरे ने भुगतो कर्म ।
दुख मेट काई नेहनो. म्हें नहि मानां धर्म" ॥९॥
या श्रद्धा कुगुरु तणी. मिथ्या जाणो साफ ।
मन शुद्धि माने नहीं. उदय मोहनी पाप ॥१०॥
जीव बचावा उपर. खोटा देवे न्याय ।
(ने)युक्ति थी खण्डन किया. मिथ्या-मत मिट जाय

चौथी ढाल ।

(कहे) "नाड़ो भरियो हो डेंडक माछला,
तिण पर भैंसो आयो चलाय हो भविकजन ॥
तिणने हंकाल्या दुःख थी मरे,
नहीं हंकाल्या मरे तसकाय हो भविकजन ॥
करो परिक्षा सत धर्म री ॥१॥

"धर्मी छोड़ाये केहने
कर्म करी दुख पाय हो भविकजन ।
लाय लागी संसारमें,
पीछे पड़िया पाप बंधाय हो" भ० करो० ॥२॥

(उत्तर) इम बोलीने भरमाविया,
खोटा लगाया न्याय हो भ० ।
ज्ञानी कहे हिवे सांभलो,
इण भरमने देवां मिटाय हो भ० करो ॥३॥

भैंस्याने जातां देखने
दयावन्त दया लाय हो भ० ।


भैंस
घास खिलाने
वाला

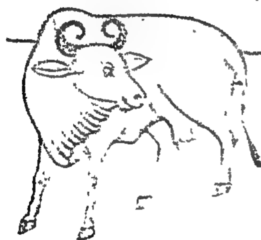
चाथा ढाल ।

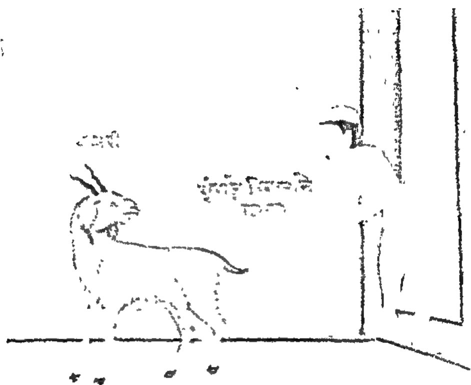
(कहे) "नाड़ो भरियो हो डेंडक माछला,
तिण पर भेंस्यो आयो चलाय हो भविकजन ॥
तिणने हंकाल्या दुःख थो मरे,
नहीं हंकाल्या मरे तसकाय हो भविकजन ॥
करो परिक्षा सन धर्म री ॥१॥

"धर्मी छोड़ावे वेहने
कर्म करी दुख पाय हो भविकजन ।
लाव लागी संसारमें,
पीचे पड़िया पाप बंधाय हो" भ० करो० ॥२॥

(उत्तर) इम भोलाने भरमायवा,
खो-। लगाया न्याय हो भ० ।
ज्ञानी कहे हिवे सांभलो,
इण भरमने देवां मिटाय हो भ० करो ॥३॥

भेंस्याने जातां देखने
दयावन्त दया लाय हो भ० ।


बैल



॥ ऊ ॥

॥ जल जंतु रक्षा ॥

ढाल चौथी गाथा १५, १६ का भाव चित्र।



धाड़ा में पाणी थांइका, जीव घणा तिण मांय हो ॥ भ० ॥
भरिया डडक माछला पाणी पिवणआंइताय हो ॥ भ० । १५ ॥
करुणावन्ते धोवन धानको, गायने दो दो पाय हो ॥ भ० ।
पाप टाल्या दोनां तणा, इनमें धरम हुवा के नाय हो । भ० ॥ १६

चोर हिंसक लम्पट मणा
पाप छोड़ावां हो म्हारी श्रद्धा री रेश''॥शु०॥६॥
इसड़ा कुहेतु केलवे,
जीवरक्षा में हो घनावे पाप ।
उत्तर इणरो सांभलो,
तेथी मिटे हो मिथ्या सन्ताप ॥शु०॥७॥
चोर अदत्त ले पारको,
ते धन ने हो दुःख-सुख नथी कांय ।
धन रा घणी ने दुःख ऊपजे,
इष्ट वियोगे हो आरत बहु होय ॥शु०॥८॥
तेथी अदत्त-पाप प्रभु भाखियो,
धनहर ने हो मुनि दे उपदेश ।
स्त्री हो पड़ी कूवां मांही आय ।
थांरो पाप–धर्म नहिंसाधुने,
बचा मूवा हो तीनों अव्रत मांय ॥भ०॥८॥
धन रो धनी राजी हुवो धन रह्यो,
जीव बचिया ते पिण हर्षित थाय ।
साधु तरण तारण नहीं तेहना,
नारीने हो पिण नहीं डुबोई आय ॥भ०॥६॥
(अनुकम्पा ढाल -५)

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

बकरा रे कर्ज चुके घणो,
  ऋण-भेदक हो पुत्तर मम जाण।
साधु पिना मम तेह ने,
  किम वरजे हो कहो चतुर सुजान॥गु०॥१४॥
हिंसक ने वरजे नहीं,
  करम ऋण रो हो क्यों बांधे तूं भार।"
इम भोला ने भरमायवा,
  रच दीनो हो कूड़ी-कूड़ो*ड़ार॥गु०॥१५॥
कहे ज्ञानी तुमे कुहेतु थी,
  मिथ्यापख नो हो कीनो या थाप।
बकरो दुःख थी तड़फड़े,
  दुःख पावे हो तेने जनि सन्ताप॥गु०॥१६॥
शान्ति भाव उणरे नहीं,
  तीव्र आरत हो ध्यावे रुद्र ध्यान।

---

* जैसा कि ये कहते हैं:—
  जे बकरा रो जीवणुं,
    वांछे नहीं लिगार।
  तिण ऊपर दृष्टान्त ने,

तेथी हल्का करम भारी हुवे,
मन्द-रस ना हो तीव्र-रस पहिचान॥शु०॥१७॥
अल्पस्थिति महास्थिति करे,
पाप भोगतां हो बांधे माठा कर्म ।
एवी करकश-वेदनी वेदना,
अरड़ावे हो ज्ञानी जाणे मर्म ॥शु०॥१८॥

सांभलजो सुखकार ॥ ६ ॥
साहुकार रे दोय सुत
एक कपूत अवधार ।
ऋण काढी आगा तणूं,
माथे करे अपार ॥ ७ ॥
दूजो सुत जग दीपतो,
यश संसार मझार ।
काढ्यो आगां रो करज,
उतारे तिण वार ॥ ८ ॥
कहो केहने परखे पिता
दोय पुत्र में देख ।
यों कर्ज करे समु,
के ऋण-मेटन पेख ॥ ९ ॥
॥ ढाल ३२ मी ॥
(ममता मत चितड़ा ए देशी)

एवा कर्मबन्ध ना काम में,

कर्म-छूटण हो लेवे मिथ्या नाम ।

न्याय अन्याय तोले नहीं,

परतख दीसे हो माठा परिणाम ॥१९॥

सो बकरा कसाई हणता थका,

मुनिवरजी हो तिहां दे उपदेश ।

कर्ज माथे सुन अधिक करंतो ।

थार थार पिना परजंतोरे, समझू नर विरला ॥

करड़ो ज्ञानों रा माथे कांय कीजे,

प्रत्यक्ष दुख पामीजे रे ॥ सम० ॥ १ ॥

अधिक माथा रो कर्ज उतारे,

जनक नाम नहिं धारे रे ॥

पिता समान साधु पिछाणो,

बकरो रजपूत थे सूत माण्डो रे ॥ सम० ॥ २ ॥

कर्म्म रूप ऋण माथे कुण करतो,

आगला कर्म्म कुण अपहरतो रे ॥ सम० ॥

कर्म्म ऋण रजपूत माथे करे छै,

बकरा संचित-कर्म्म भोगवे छे रे ॥ ३ ॥

साधु रजपूत ने बजे सुहाय,

कर्म्म करज करे कांय रे ॥ सम० ॥

ते घात टालण बकरा तणी,
कसाई रा हो मेटण पाप कलेश ॥२
करकश वेदना ऊपज्यां,
बकरा ध्यावे हो महा आरत ध्यान ।
यलि रुद्र-ध्यान पिण ऊपजे,
"ठाणाअँग" (में) हो जोवो परध्यान॥२
पूर्व कर्म दोनों भोगवे,
नवा बांधे हो दोनों वैरानुबन्ध ।
मुनि उपकारी बेहुना,
उपदेशे हो टाले बेहुना द्वन्द्व ॥२२॥
(कहे) "हिंसक पाप छुड़ायवा,
में तो देवाँ हो धर्म रो उपदेश ।

कर्म्म बंध्या पशु शीना मार्नी,
पर भव में दुःख पामी है ॥ ४ ॥
मरघर धणी जिन ने समझायो,
जिणरो जिणरो बंदणी मुनिरायो है ॥ मम० ॥
बकरा जीवण नहीं दे उपदेश,
कह्या भोजन बुद्धिवन्त रेम है ॥ ५ ॥
(जिनमुनि रामायण)

इण मिथ्या-पख नै छोड़ दो,
सत्-श्रद्धा रो हो मन आणो ख्याल ॥३२॥
निज्जरा भर्म मिटायवा,
एक हेतू हो सुनो चतुर सुजाण।
मास-खमण रे पारणे,
गोचरी आया हो मुनिजी गुणखाण ॥३३॥
कोई मूरख मन में चिन्तवे,
आहार वेराया हो निज्जरा मन्द होय।
नहिं वेरायां निज्जरा घणी,
तप वधसी हो मुनिने गुण जोय ॥शु०॥३४॥
जिण सुपात्रदान न ओलख्यो,
ते मूढ़-मति हो एवो करे विचार।
मुनि जांचे छे आहार ने,
देवगवाला ने हो हुवे लाभ अपार॥शु०॥३५॥
कदा आहार मुनि ने मिले नहीं,
समभावे हो निज्जरा वहु होय।
त्यांने पिण आहार आपनां,
दाता रे हो धर्म रो फल जोय ॥शु०॥३६॥

एवो कुहेतू मेलवो,
भोला आगे हो करे मन री थाप ॥शु०॥२०॥
(उत्तर) हिवे ज्ञानी कहे भवि सांभलो,
बचिया-मरिया री हो सरखी नहीं वात।
बकरा री रक्षा कारणे,
उपदेशे हो मुनिजी साक्षात् ॥शुद्ध०॥२१॥
नारी मारण (मुनि) कामी नहीं,
मारण में हो नहीं पर-उपकार।
आत्मघात करे (कोई) पापिणी,
महा मोहवश हो मरे ते नार ॥शु०॥२२॥
त्याग हेते स्त्री मरे नहीं,
मोह कारण हो वा मरे मत-हीण।
तिणरी पिण घात छुडायवा,
उपदेशे हो मुनि धर्म-प्रवीण ॥शुद्ध॥२३॥
सुण उपदेश (कदा) बच गई,
तेथी टलिया हो महा-मोहनीकर्म।
आत्महत्या टल गई,
गुण निपज्यो हो यो धर्म रो मर्म॥शु०॥२४॥

पकरो नारी पनिया थका,
गुण निपजे हो टले पाप विकार ।
इणथाने गुण नहिं नीपजे,
सुगमन थी हो करो जरा विचार ॥५५॥

मरणो पचायणो एक है,
एनों जाणो हो विकर्मा रा येण ।
जारे धान नहीं धर्म-प्राण रो,
जाण कूडा हो हिया रा नैण ॥अनु०॥५६॥

मुनि उपकारी वेदना,
वेदू जण ना हो मेटणा भाटा कर्म ।
जो श्रद्धा पामे में वेदू,
तो पामे हो संसारो-धर्म ॥अनु०॥५७॥

आत्म-रूह हलै वेदना,
श्रद्धा गोणी हा धर्म-उपासो होय ।
इस निरवद्य मुनि वेदना,
उपकारी हो मुनि वेदना जोय ॥अनु०॥५८॥

कोई कर्म-उदय वेद जगा,
संवर श्रद्धा हो पावे नहिं होय ।

(तिम) हिंसा छूट्या बच्या जीवड़ा,
उपकारी हो मुनि रक्षक जोय ॥शुद्ध०॥६८॥
जीव मारण में हिंसा कही,
नहीं मारे हो दया रा परिणाम ।
मरता जीव बचावियां
मनसा वाचा हो दया रो काम ॥शुद्ध०॥६९॥
* केइक इणमें इम कहे,
"जीवाँ काजे हो नहिं दाँ उपदेश ।
एक हिंसक समझायने,
नहिं मेटाँ हो घणा जीवां रा क्लेश" ॥७०॥

* जैसा कि वे कहते हैं :—
केइक अज्ञानी इम कहे,
छः काया काजे हो देवां धर्म उपदेश ।
एकण जीव ने समझावियां,
मिट जावे हो घणा जीवां रा क्लेश ॥
भव्य जीवां तुमें जिन धर्म ओलखो ॥१६॥
छः काय घरे शान्ति हुवे,
पखोभास हो अन्य-तीर्थी धर्म ।
त्यां भेद न पायो जिन धर्म रो,
ते तो भूल्या हो उदय आया अशुभ कर्म ॥१७॥
(अनुकम्पा ढाल—५)

एवा अनघड़ हो घड़ावे ढोल ।
मिथ्या-उदय जे जीवरे,
तेना मुख थी हो एवा निकले बोल ॥७५॥
व्यवहार शान्ति परजीव ने,
निश्चे थी हो निज री ते हाय ।
व्यवहार शान्ति उथापना,
निश्चे पिग हो खोय बैठा सोय ॥शु०॥७६॥
आगे जिन अनन्ता हुवा,
छः काया रा हो शान्ति करतार ।
दुःख मेटण उपदेश थी,
जगवच्छल हो जग ना सुखकार ॥शु०॥७७॥
जगनाथ, जगबन्धु कह्या,
नन्दी-सूत्रे हो गाथा प्रथम मांय ।
सब जीव राखण उपदेश थी,
सुख थापे हो बन्धू पद पाय ॥शुद्ध०॥७८॥

कहता रे हो नहीं आवे त्यांरा पार ।
ने आप तरया और तारिया;
छःकाया रे हो शान्ति न हुई लिगार ॥२१॥
(अनुकम्पा ढाल—५)

शान्तिनाथ प्रभु सोळवाँ,
शान्तिकरणा हो सब लोक के मांय।
गर्भावास में ऊपना,
मरगनवाँ हो गुण आरा माण ॥जु०॥७९॥
कहीं-कहीं ने किसना कहै,
छः काया रै हो शान्तिनाथ रा नाम।
जो शान्ति न होती छः काय रै,
शान्तिनाथ हो किम होता इनाम॥८०॥
मिथ्या हेतु लगावता,
खोटि "भाणूं" हो श्रद्धा री ताण।
अन्तःकरण से ओळखो,
सम्यग ज्ञान री मिथ्या री पाण ॥जु०॥८१॥
पडनाँ थूं न बेदर्दी,
अनुकम्पा हो देखो मुखराय।
जिनेश्वर रा धाम में,
अनुकम्पा हो दीसी मुखदाय ॥जु०॥८२॥
जिन शासन शुभ दर्शियो,
करे संतनी हो मूर्तिमंत गुणराय।

परदेशी अति पापियो,

पाप करने हो अति हर्षित थाय ॥गु०॥८३॥

अधर्मी थो राजवो,

अधर्म नी हो करे निशदिन थाप।

कठिन नीर एक सम गणे,

गाढ़-गाढ़ा हो स्वामी कर रयो पाप ॥८४॥

थांतो नर पशु पंखो ने,

(भिक्षु आदि को) भूमि आड़ी हो छेदी हर्षाय।

विनय-भाव निगमें नहीं,

तेथी गुरुजन (मात पिता आदि)

हो आदर नहिं पाय ॥ गुरु० ॥८५॥

देश दुःखी इण राय थी,

करड़ा लेवे हो हासिल दुःख दाय।

तेने धर्म सुनाविया,

बहु गुणकर हो होसी मुनिराय ॥गु०॥८६॥

गुण होसी परदेशी राय ने,

पशु-पंखी हो नर ने गुण थाय।

श्रमण महाण भीखारी ने,

बहु गुणवर री होसी हुलसाण ॥जु०॥८७॥
देश ते बहु गुण ऊपजसी,
संजमी री कायां होसी हूर।
राग १, जोग २, मिश्र ३, देश ४ ते,
गुण देवे री गर्व आणो मनूर ॥जु०॥८८॥
जीव मारण परिणाम थी,
राजा ने हो माठा लागे पाप।
(ते) उपदेश थी हाय आवसी,
गुण [illegible] री [illegible] भाग ॥जु०॥८९॥
राग उपजण रा काम थी,
मनुष्यादिक ने उपजे राग कु [illegible]।
[illegible] [illegible] [illegible] करे,
[illegible] उपर हो राग उपज [illegible] ॥९०॥
[illegible] [illegible] राग कु [illegible] फिर आवसी,
[illegible] उपर हो फिर आया [illegible]।
(केई) [illegible] ने बहुगुण [illegible],
पूर्व [illegible] री [illegible] उपदेश ॥जु०॥९१॥
[illegible] [illegible] [illegible] करे,

राजा परदेशी जिनप्रधान और केशी श्रमण।

विष देखने के लिए है चखने के लिए नहीं।

[illegible] गाथा ८१, ६० का [illegible] लिख।

[illegible] लोकिकस्यको [illegible]

[illegible]

[illegible]

गुण

[illegible]

मनुष्यादि

[illegible]

राजा [illegible]

[illegible]

राजा [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

राजा परदेशी, चित्तप्रधान और केशी श्रमण।

चित्र देखने के लिए है पढ़ने के लिए नहीं।

ढाल पाचवीं गाथा ८९, ९० का भाव चित्र।

"तं जइणं देवाणुप्पिया पदेसिस्सरणो धम्ममाइक्खेज्जा बहु-गुणतरं खलु होज्जा पदेसिस्सरणो तेसिणं बहूणय दुपय चउप्पय मिग पसु पक्खि सरीसिवाणं।"

"जीव मारण परिणामथी,
राजारे हो मोटा लागे पाप॥

ते) उपदेशथी टल जावसी,
गुणपामो हो परदेशी भूप ॥गु०॥८९॥

वाय उपद्रव ना कारण थी,
मनुष्यादिक ने उपजे घणा दुःख॥

तेथी पाप कर्म सवी टले,
राजा ऊपगार हो घणो उपजे रे ॥ गु० ॥९०॥

तेथी बांधे हो ऐसा पाप-कर्म।
वृत्ति-छेद राय छोड़सी,
उपदेशो हो स्वामी निर्मलधर्म ॥गु० ०२॥
वृत्ति-तूटा दुखिया थका,
श्रमणादि हो करे हाय-विलाप।
निशदिन कोपे राय पे,
खोटा लेश्या हो खोटा बाँधे पाप ॥०३॥
ते सगला ही शान्ती पावसी,
मिट जासी हो खोटा परिणाम।
तेथी महागुण श्रमण-माहण रे,
भीखारी रे हो होसी गुण रो धाम ॥०४॥
देश दुःखी राजा कियो,
करड़ा-हाँसिल हो बांधे करड़ा पाप।
ते छोड़ देशो उपदेश थी,
तेथी टलसी हो नेना पाप-सन्ताप ॥गु०॥०५॥
देशवासी राजा थकी,
नित्य पावे हो गाढ़ा सन्ताप।
राजा पर कोपे घणा,

तेथी पल्ले हो घणा गाढ़ा पाप ॥शु॥९६॥
देश कलह मिट जावसी,
स्वजामी हो मेला पाप विचार ।
देश में बहुगुण निपजसी,
तुमे करो हो स्वामी धर्म उपकार ॥९७॥
जिन विलसी करी शुभ-भाव थी,
शुध श्रद्धा री हो तुमे करो पिछाण ।
(जो) समचारी-श्रावक छोड़का,
मर्यादित घर हो गुण रत्नाँ री खाण ॥९८॥
जो जीव, भिखारी, देश री,
करुणा में हो नहिं श्रद्धनो धर्म ।
(जो) अधर्म आगे जिन जिम कही,
जिन वचनां री हो ते नो जाणनो मर्म ॥९९॥
जीव बचावण कारणे,
उपदेशं द्या जिन श्रद्धनो पाप ।
भीनासी गुरु आगले,
जिनरो करुणा हो धर्मदिल में मारि ॥१००॥
स्वामी ! हिंसा छोड़ावो मानणी,

[illegible] প্রমাণ [illegible], [illegible] [illegible] কথা

প্রমাণ [illegible] ।

[illegible]

केशी श्रमण, चित्त प्रधान, परदेशी राजा तथा देश।

चित्र देखने के लिए है वंदने के लिए नहीं।

ढाल पांचवीं गाथा १५, १६, १७ का भाव चित्र।

"तं जइ णं देवाणुप्पिया! पएसिस्स बहुगुणतरं होरया सयस्स वियणं जणवयस्स।"

"देशदुखी राजा कियो,
करड़ा हांसिल हो वधि करड़ा पाप॥
ते छोड़ देशी उपदेशथी,
तेथी टलसी हो तेना पाप-संताप॥सु०॥१५॥
"देशवासी राजा थकी,
नित्य पावे हो गाढा संताप॥
राजा पर कोपे घणा,
तेथी बंधे हो घणागाढा पाप॥सु०॥१६॥
"देशकलह मिट जायसी,
टल जासी हो मैला पाप विचार॥
देशने बहु गुण निपजसी,
तुमे करो हो स्वामी धर्म उचार॥सु०॥१७॥

चितजो री हो श्रद्धा थी एक।
(तिथो) विनती मानी भाव थी,
चार थातां री हो चलागो लेख ॥शु०॥११०॥
छोड़ो रे छोड़ो मिथ्यात ने,
जीवरक्षा री हो तुमे श्रद्धो धर्म।
त्यागो कथन कुगुरु तणो,
खोटो घाल्यो हो अनुकम्पा में भर्म ॥१११॥
कोई पतिव्रता सती तणो,
एक पापी हो खण्डे शील विशेष।
देहत्याग मांड्यो सती,
तीहां मुनिजन हो दीनो उपदेश ॥११२॥
प्रबोध पापी पामियो,
सती नार ना हो रख्या शील ने प्राण।
मुनि उपकारी देहुना,
तुमे समझो हो समझो नि सुजाण ॥११३॥
एक मौनव्रती मुनिराज री,
कोई पापी हो करतो थो घात।
(तिणने) उपदेश देई समझावियो

रक्षा कीधी हो मुनि नो मिथ्यात रे ॥१

जो बकरो बच्या पाप शुद्धसी,

तिगरे लेखे हो मुनि बचिया रो पाप।

जो मुनि बच्या बकरा कहै,

तो बकरो बचिया हो दया-धर्म है साफ ॥१

जोड़ कीधी अनुकम्पा तणी,

ढाल जोड़ी हो राजलदेसर मांय।

भवि मन शुद्ध आदरया,

श्रद्धा सूं हो निश्चय सुख पाय ॥१

इति नवम ढाल सम्पूर्ण



दोहा

साधु जीव मारे नहीं, पर ने न कहे मार ।
भलो न जाणे मारियां, तिकरण शुद्ध विचार ॥१॥
हणे, हणावे, भल गणे, परजीवां रा प्राण ।
तीन करण हिंसा कही, श्री जिन वचन प्रमाण ॥२॥
बोले, बोलावे, भल कहे, सावद्य झूठा वेण ।
तीनों करणे झूठ है, खोलो अन्तर नेण ॥३॥
जिम सत बोले साधुजी, पर ने कहे तू बोल ।
भल जाणे सत बोलियां, तीनों करण अमोल ॥४॥
तिम साधु बचावे जीव ने, पर ने कहे बचाय ।
बचियां अनुमोदन करे, तिकरण शुद्ध कहाय ॥५॥
(कहे) "सावद्य-सत्य न बोलणो, तिम न बचाणो जीव
अनुकम्पा सावद्य हुवे," या कुगुरां री नींव ॥६॥
(उत्तर) सावद्य-निरवद्य सूत्रमें सत्य रा भाख्या भेद
तिण अनुकम्पा रा नहीं, मत हो खाली खेद ॥७॥
जिण बोले परजीव ने, दुख उपजे सुख नांय ।
ते सत ने सावद्य कह्यो, सुयगडांग रे मांय ॥८॥
पर पीड़ाकारी नहीं, हितकारी सुखदाय ।

ते सब निरवद्य जाणज्यो, जिन सासन रे मांय॥९॥
अनुकम्पा पर-जीव ना, प्राण बचावण हार ।
दुःख तिण थी उपजे नहीं,निरवद्य निश्चे धार ॥१०॥
भय मेट्यो परजीव नो, दान अभय प्रभु गाय ।
तिण में पाप बनावियो, जैनी नाम धराय ॥११॥
अभयदान नहिं ओलख्यो, दीनी दया उठाय ।
भोला ने भरमावया, कूड़ा चोज लगाय ॥१२॥
(कहे) "जीवबचावे मुनि नहीं, पर ने न कहे बचाव
भलो न जाणे बचावियां" इम खोटा खेले दाव ॥१३॥

—※—

ढाल-छठी

(तर्ज—चतुर नर छोड़ो कुगुरु नो संग)

इण साधां रा भेख में जी,
बोले एहवो वाय
"छकाय रक्षा ना करांजी,
जीव बचावां नाइ ॥
चतुर नर समझो ज्ञान विचार॥१॥
एहवी करे परूपणा जी,
पिण बोलि यन्य न होइ।
बदल जाय पूछ्यां थका जी.
ने भोला ने खबर न कोय ॥चतुर०॥ २॥
थारे पाणी रे पानरे जी.
माखी पड़िया जाय।
दु:ख पावे अति तड़फड़े जी.
जुदा होवे जीव काय ॥चतुर०॥३॥
साधु देखे तिण अवसरे जी.

(जो) पाप कह्यो भगवान ने जी,
(तो) पोते क्यां छोड़ी रीति ?
उन्दिर माखा बचाविया (जो)
थारो कृग माने परतीत ॥चतुर०॥१०॥
गोसालाने बचायवा में,
पाप कह्यो साक्षात ।
(तो) माखां मरता देखने जी,
क्यों काढ़ो निज हाथ ॥चतुर०॥११॥
इम कह्यां जाब न ऊपजे जी,
जब खोटो काढ़े थाप ।
(कहे) "उपधि हम साधु तणी जी,
जामें जीव कोई मर जाय ॥चतुर०॥१२॥
तो हिंसा लागे साध ने जी,
(ते) टालण बचावां जीव ।
दूजा नाय बचावणा जी,
या म्हारी श्रद्धा री नींव" ॥चतुर०॥१३॥
(उत्तर) (थारो) नेसराय री भूमि में जी,
(थारा) पाटा रे निकट में आय ।

उन्दर चिड़िया बचावनां जी,
शंके नाहीं लिगार।
श्रावक ने बेठो क्रिया में,
पाप री करे पुकार ॥ चतुर० ॥ १९ ॥
इनरी समज पड़े नहीं,
ज्यांमे समकित पावे केम
छकिया मोह मिथ्यात में जी,
बोले मतवाला जेम ॥ चतुर० ॥२०॥
(कहे) ' मायां ने उन्दर कारणों जी,
बानरादिक थी बार।
पाटा पर श्रावक मरे जी,
(तो) बेठो न करां लिगार'' ॥चतुर०॥२१॥
(उत्तर) श्रावक बेठो ना करांजी,
ऊँदर छाड़ो जाय।
आ थोंरी श्रद्धा माहरा जी,
मिले न थारो न्याय ॥ चतुर० ॥२२॥
(या) परनरा पाप मिले नहीं जी,
नावड़ा छांहड़ी जेम।

न्यायमार्ग ज्यां ओलख्यो जी,
ते विकल्पां री मानें केम ॥चतुर०॥२३॥
(कहे) "पेट दुखे सो श्रावकां जी,
जुदा होवे जीव काय।
(थें) हाथ फेरो पेट ऊपरें जी,
सो श्रावक बच जाय ॥चतुर० ॥२४॥
(जो) जीव बचाया में धर्म छे तो,
साधु ने फेरणो हात।
(जो) हाथ साधु फेरे नहीं,
तो मिथ्या थांरी बात" ॥चतुर०॥२५॥
(उत्तर) साधु कहे हिये सांभलो जी,
इण कुयुक्ति रो न्याय।
(जो) हाथ फेरयां निज जीव बचे,
(तो) निज रो फेर बच जाय ॥चतुर०॥२६॥
हाथ फेरन रो साधु ने जी,
श्रावक केसो केम।
हठवादी समझे नहीं जी,
श्रावक जाणे (धर्म रो) नेम ॥चतुर०॥२७॥

(कहे) "लब्धि आमोसही साधुरेजी,
  फरस्यां दुःख मिट जाय" ।
(इरार) तो (वह) चरण मुनि रा फरसती जी,
  ततखिण चोखो थाय ॥ चतुर० ॥ २८ ॥
चरण साधु रा फरसणा जी,
  श्रावक रो आचार ।
हाथ फेरण रो कहे नहीं जी,
  थें झूठ करो उच्चार ॥ चतुर० ॥ २९ ॥
लब्धि मुनीरी देह में जी,
  जो फरसे मुनि काय ।
(तो) रोग मिटे साता होवे जी,
  मुनि ने दोष न थाय ॥ चतुर० ॥ ३० ॥
(जो) चरण फरस दुखड़ो मिटेजी,
  या जिन आज्ञा रे मांय ।
तिहाँ हाथ फेरण कारण नहीं जी,
  थारा मन ने लो समझाय ॥
(थें झूठी उठाई चाय) ॥ चतुर० ॥ ३१ ॥
  कुयुक्त्यां बहु केलवो जी,

भोलां दो भरमाय ।
ज्ञानी न्याय बताय दे जद,
भरम तुरत मिट जाय ॥ चतुर० ॥ ३२ ॥
(कहे) "उंदिर मांय छोड़ावणो जी,
मिन्ना मारण धाय"
एवो कल्कर थापना जी,
भोला दिया फंसाय ॥ चतुर० ॥ ३३ ॥
(उत्तर) आवश्यक-सूत्र देखलो जी
ध्यान आगारा रे मांय ।
उन्दरादिक ने मारवा जी,
बिल्ली झपटो आय ॥ चतुर० ॥ ३४ ॥
आगे सरक बचावनां जी,
काउसग भागे नाय ।
(वलि) टीका ने निर्युक्ति में जी,
प्रगट दियो बताय ॥ चतुर० ॥ ३५ ॥
हजारों वर्षां तणी जी,
निर्युक्ति निरधार ।
चवदा सौ वर्षा तणी जी,

(यो) टीका में विस्तार ॥ चतुर० ॥ ३६ ॥
आचारजआगे हुआ जी,
ज्ञान गुणां रा धार ।
इंद्रादिक पचायवा में,
पाप न कह्यो लिगार ॥ चतुर० ॥ ३७ ॥
पाट सताविस तुमे कह्यो जी,
प्रभु आज्ञा रा धार।
तेनो कथी निर्युक्ति में जी,
यो भाख्यो निरधार ॥ चतुर० ॥ ३८ ॥
ध्यान में जीव पचावनाँ जी,
काउसग भंग न होय ।
आवश्यक निर्युक्ति तणो जी,
निरणो लेओ जोय ॥ चतुर० ॥ ३९ ॥
अठारे से संवत पूरवे जी,
जीव पचावन माँय ।
कोई आचारज नहीं कह्यो जी,
पाप करम बन्धाय ॥ चतुर० ॥ ४० ॥
अपुठो इम भाषियो मिनो,

करे मुवा री घात ।
ध्यान खोल बचावतां जी,
दोष नहीं तिलमात ॥ चतुर० ॥ ४१ ॥
(कहे) "मृगादिक ने बचायलो जी,
मिनकी ने छुडकाय ।
श्रावक मरे मुए आगले जी,
तिणने बचायो के नाय" ॥ चतुर० ॥४२॥
(उत्तर) मरतो जाण बचाविया जी,
दोष मुनि ने न कोय ।
निशीथ अर्थ में देखलो जी,
भरम क्रिया रो खोय ॥ चतुर० ॥ ४३ ॥
श्रावक बचाय धर्म छे जी,
साधु भी देवे बचाय ।
अवसर ठाम-कुठाम को जी
कल्प रो ध्यान लगाय ॥ चतुर० ॥४४॥
धर्म देशना (दया) धर्म में जी,
पिण देवे कल्पने ठाय ।
(तिम) जीव बचावणों धर्म में पिण,

करे कल्प थो काम ॥ चतुर० ॥४५॥
चिड़ियो मुओ थारा स्थान में जी,
थारे अटक्यो सज्झाय रो काम।
परठो के परठो नहीं जी,
तब उत्तर देवे नाम॥ चतुर० ॥ ४६ ॥
"चिड़ियाँ ने ता परठदाँ जी,
जाणी धर्म रो साय।"
(तो) कुत्तो मरयो थारा थान में जी,
तेने परठो के नाय? ॥ चतुर० ॥ ४७ ॥
"साधू बाजाँ म्हें जैन रा जी,
कुत्ता घीसाँ केम?"
(तो) कुत्ता ने चिड़िया तणो थारे,
रयो न सरखो नेम ॥ चतुर० ४८॥
(तिम) जीव बचावा में जाणज्यो जी,
ज्ञान से न्याय विचार।
अवसर अण-अवसर तणो जी,
साधु तणो आचार ॥ चतुर० ॥ ४९ ॥
(कहे) "गाड़ा हेठे मरे डावड़ोजी,

तुमे साधू लेवो उठाय।
श्रावक मरतो जाण ने जी,
तिण ने उठावो के नाय" ॥
(उत्तर) म्हे तो जीव बचायवा में,
धर्म रो श्रद्धाँ काम।
श्रावक ने लड़का तणो जी,
म्हारे न भेद रो ठाम ॥ चतुर० ॥ ५१ ॥
(कहे) "लट, गजायां, कानरा जी,
डांडा थी चींथी जाय।
त्यां ने बचावा तणो मुनि,
क्यों नहिं करे उपाय ॥ चतुर० ॥ ५२ ॥
जो लड़काने बचावसी जी,
तो लटादि लेसी बचाय
(जो) लट गजाई रक्षा न करे जी,
तो लड़का बचावे कायँ" ॥ चतुर० ॥५३॥
(उत्तर) दोनां बचाया धर्म छे जी,
थें झूठा रच्या तोफान।
मिथ्या पंथ चलायवा जी,

भूख गया छे भान ॥ चतुर० ॥ ५४ ॥
(वलि) रक्षता, लट, गलाय, नो जी,
मरतो नहीं छे त्याय ।
लट्‌को मरतो पंचेन्द्री ते,
लट सम कहो किम थाय॥ चतुर० ॥ ५५ ॥
आपद होवे तो बचावले जी,
कीड़ा मकौड़ा रा प्राण ।
अज्ञानय बचाई ना मरे,
जांरी मूर्ख करे कोई ताण ॥चतुर० ॥५६ ॥
द्रव्य-क्षेत्र ना अवसरे जी,
उपदेश दे मुनिराय ।
विन अवसर नो ना दिये जी,
(तेथी) उपदेश अधर्म में नांय ॥चतुर० ॥५७॥
(तिम) अवसर होवे साध रो जी,
जीवां ने लेवे बचाय ।
विन अवसर रक्षा न हुवे तो,
रक्षामें पाप न थाय ॥ चतुर० ॥ ५८ ॥
उपदेश १, रक्षा२, धर्म में जी,

दोयां में शुद्ध परिणाम ।
पिण अवसर होवे जद सद्दे जी,
श्रद्धे आछो काम ॥ चतुर० ॥ ५९ ॥
उपदेश बताने धर्म में जी,
जीव बचायां पाप ।
[पा] खोटो श्रद्धा तेहनी जो,
ज्ञानी जाणे साफ ॥ चतुर० ॥ ६० ॥
लड़का लट सरिखा कहे जी,
(ते) मूरख, मूढ़ गवाँर ।
जैनी नाम धरायने जो,
भ्रष्ट किया नरनार ॥ चतुर० ॥ ६१ ॥
कीड़ा, मकोड़ा, मनुज नी जी,
सरखी बतावे घात ।
(ते) भेष लई भारी हुआ जी,
धर्म री कर रया घात ॥ चतुर० ॥ ६२ ॥
चउनाणी शुध संयमी जी,
वीर जगत गुरु राय ।
गोसालाने बचावियो जी,

अनुकम्पा हिये लाय ॥ चतुर० ॥ ६३ ॥
(जो) जीव बचावणो पाप में जी,
गोसालो बचायो केम।
इसड़ो न आयो पूछणो जी,
तब झूठ बोल्या नाम लेन ॥ चतुर० ॥ ६४ ॥
(कहे) "गोसाला ने बचावियो जी,
चूक गया महावीर।
पाप लागो श्री वीर ने,
म्हारी श्रद्धा बड़ी गंभीर" ॥ चतुर० ॥६५॥
(वलि कहे) "साधां ने लब्धि न फोड़णी जी,
सूत्र भगोती रे मांय।
लब्धी फोड़ बचावियो जी,
जेथी पाप कर्म बन्धाय" ॥ चतुर० ॥ ६६ ॥
(उत्तर) इसड़ी आप बतावसो जी,
लब्धि फोड़ी नाय।
ते तिण पाप एकंत में,
थारी श्रद्धा रे मांय ॥ चतुर० ॥ ६७ ॥
(जेथी) झूठ बोल लगाविया जी,

लब्धि फेरे नाम।
अनुकम्पा उठायवा जी,
यो मिथ्या-मत रो काम ॥ चातुर० ॥ २८
[इम] मनुष्य लब्धि रा नाम ले जी,
भोलाँ ने दे भरमाय।
पिण सांची कोई मत जाणज्यो जी,
अंद छुणां जिम न्याय ॥ चातुर० ॥ २९॥
शीतल लेश्या लब्धि नो जी,
दोष न सूतर मांय।
सुखदाई तुम ना होवे जी,
(पर्यो) शीत-हिंसा नहिं थाय ॥ चातुर०॥ ३०
अंग उपासक ग्रन्थ में कह्यो,
लब्धि रो दोष न कोय।
ते विण पाप बताइयो जी,
यो कपट कुगुरु रो जाय ॥ चातुर० ॥ ३१ ॥
दोष होवे जे लब्धि थी ते,
प्रगट बताया नाम।
इणरो नाम न भाखियो थे,

तजो कपट रो काम ॥ चातुर० ॥ ७२ ॥
[कहे] "उष्ण ने शीतल एक छेजी,
तेजू लब्धि रा भेद"
मद छकिया इम ऊचरे जी,
[ति] सुणनाँ उपजे खेद ॥ चातुर० ॥ ७३ ॥
(उत्तर) शीतल थी शान्ति होवे जी,
जीव न विणसे कोय।
उष्ण थी जीव मरे घणा जी,
एक किसो विध होय ॥ चातुर० ॥ ७४ ॥
(कहे) "अग्नि पाणी भेला होवे जी,
जीव घणा मर जाय।
[तिम] तेजू शीतल लब्धि मिल्याँ जी,
घात जीवाँ री थाय" ॥चातुर०॥ ७५ ॥
[उत्तर] तेजू लेश्या पद्गल भणी जी।
अचित कह्या जिनराय।
सूत्र भगोती में देखलो थें,
खोटा लगावो न्याय ॥चतुर०॥७६॥
हिंसादी कुकर्म थी जी,

खोटी-लेश्या थाय ।
जीव रक्षा रा भावमें जी,
भली लेश्या सुखदाय ॥चतुर०॥७७॥
मोठी-लेश्यामें ना कह्यो जी,
जीव रक्षा रो काम ।
उत्तराध्येन चोंतिस में जी,
लक्षण द्वार रे ठाम ॥चातुर०॥७८॥
सदा शुद्ध-लेश्या वीर में जी,
पाप कह्यो किम होय ।
आचार ंगे देखलो जी,
प्रभु पाप न कीनो कोय ॥चातुर ०॥७९॥
[कहे] "राग हु ंतो तब वीर में जी,
लियो गोसाल बचाय ।
'छदमस्थपणे चूकिया' म्हें,"
पाप केवां इण न्याय ' ॥चातुर०॥८०॥
[उत्तर] छदमस्थ राग रो नाम लेने,
पड़िया पाप रे कूप
अरिहन्त आसातना करी जी,

गोसालाने बचावियो जी,
पाप जाणता इयाम।
तो सर्व साधां ने वर्जता जी,
इसड़ो न करजो काम ॥ चतुर० ॥ ८

केवल ज्ञान में प्रभु कयो जी,
अनुकम्पा रो धर्म।
गोसालाने बचावियो प्रभु,
प्रकट करयो यो मर्म ॥ चतुर० ॥८

दोष न लेश प्रभु कयोजी,
गोसाल बचाया माँय।
वीतराग गोपे नहीं जी,
प्रकट देवे बुझाय ॥ चतुर० ॥ ८८ ॥

गोतमने प्रभुजी कयोजी,
आनन्द लेवो खमाय।
प्राछित ले निर्मल हुवो ज्यूं,
दोष थांरा मिट जाय ॥ चतुर० ॥ ८९ ॥

गोतम दोष मिटावया जी,
प्रकट कयो प्रभु आय।

खोटा न्याय लगावता जी,
कह्या कठा लग जाय ॥ चतुर० ॥ ९९ ॥
(उत्तर) आयुष आयो तेहनो जी,
देख्यो श्री जिनराज ।
निश्चय टाल्यो न टल्यो (जी),
ज्यां सारया आतम काज ॥ चतुर० ॥१००॥
(कहे) "गोतमादिक गणधर हुंताजी,
छद्मस्थ लब्धि ना धार ।
ज्यारें क्यों न बचाविया जी,
शीतल लेश्यां निकार" ॥ चतुर० ॥ १०१ ॥
(उत्तर) जिन नहिं जिन समा कह्या जी,
गोतमादि गुणधार ।
जाणे आयु सर्व नो जी
घटि होनहार निरधार ॥ चतुर० ॥ १०२ ॥
धर्मघोष मुनि जाणियो जी,
धर्म रुची विरतन्त ।
सर्वार्थ-सिद्ध में ऊपजिया वे,
पूरणवर था महन्त ॥ चतुर० ॥ १०३

श्रावक शरणं
गोसाला ...
साधु-श्रावक रे
सक्यो गोस
मिथ्यातो मिथ्या
हुआ गोसाल ...
मिथ्यात पथियो ...
खोटी धारी
श्रावक गोसाला रे
प्रश्न री नहि करे ...
कन्द मूल रिण आ म ...
या सूत्र-भगोती में
तप तो मराडो
खोटी करया थाय
अनुकम्पा रा द्वेष थी
जीव बचाया
धरि कष्ट करी
"दो साधु ...

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

आयुष मुनि रो जाणता जी,
गोतमादि गुण धार।
विहार मुन्याँ ने करावता जी,
(यारेपिण) जामें दोष न एक लिगार ॥१०४॥
(मुनि) निश्चे देख्यो ज्ञान में जी,
ते किम टाल्यो जाय।
ते जाणी ज्ञानी-मुनी जी,
न मयया त्यां ने बचाय ॥ चतुर० ॥१०५॥
मो कोमां वेर न ऊपजे जी,
अरिहंत अतिशय विशेष।
समवसरण में ऊपनो ते,
होणहार री रेप ॥ चतुर० ॥ १०६ ॥
निश्चय होण रा नाम से जी,
गोशाल्ड बचाया में पाप,
उलटा न्याय लगायने जी,
यें कर रया खोटी थाप ॥ चतुर० ॥ १०७ ॥
सत हेतु सुण समझमो जी,
जामें शुद्ध विवेक।

पक्षपात नव पालनो जी,

निरमल समकित एक ॥ चतुर० ॥ १०८ ॥

मिथ्या-खण्डन ने करी जी,

जोड़ जुगत सर न्याय ।

शुद्ध भावे श्रद्धा थका जी,

आनन्द मंगल थाय ॥ चतुर० ॥ १०९ ॥

संवत उगणीसे नवे जी,

छोगाँली रे साल ।

आषाढ़ शुक्ला पंचमी जी,

वरते मंगल माल ॥ चतुर० ॥ ११०

इति ढाल सम्पूर्ण ।



पक्षपात तज पामसी जी,
  निरमल समकित पंथ ॥ चतुर० ॥ १०८ ॥
मिथ्या-खण्डण ने कारी जी,
  जोड़ जुगत धर न्याय ।
शुद्ध भावे श्रद्धया थका जी,
  आनन्द मंगल थाय ॥ चतुर० ॥ १०९ ॥
संवत उगणीसे मणे जी,
  चोपाँसी रे साल ।
आषाढ़ शुक्ला पंचमी जी,
  वरते मंगल माल ॥ चतुर ॥ ११० ॥

छठी ढाल सम्पूर्ण ।



दोहा

सबल निबल ने मारता, देख्या दीन दयाल ।
जिनवर धर्म परूपियो, जीव दया प्रतिपाल ॥१॥
निरपख जीव बचायवा, सबलां ने समझाय ।
ज्यामें पाप बतावियो, केइक कुमति चलाय ॥२॥
मांसादिक छुड़ाय दे, अचित वस्तु रे साथ ।
एकान्त पाप तिणमें कहे, केइ कुबुद्धि उठाय ॥३॥
कहे मिश्र श्रद्धां नहीं, श्रद्धयां हो मिथ्यात ।
धर्म पाप एकान्त है, यो खोटो पखपात ॥४॥
अल्प-पाप बहु-निर्जरा, सूत्र भगोती देख ।
मूलपाठ प्रभु भाखियो, (तियो)कूड़ोयारोलेख॥५॥
द्वेष अनुकम्पा-दान रो, ज्यांरि है घट मांय ।
तिणने सम-पथ लायवा, ज्ञानी इम समझाय ॥६॥
ऋतु चौमासो आवियो, वर्षा वर्षे जोर ।
हट गजाई इंडका, उपन्या लाख किरोर ॥७॥

एक वेश्या एक साधुरा, भक्त नो मन हुलसाय ।
तिण वेलामें नीसरया, बेठा गाड़ी मांय ॥८॥
साधुभक्त नो साधुरा, दर्शन केरं काम ।
वेश्या अभिलाषी तिको, जावे वेश्या धाम ॥९॥
गाड़ी चलता चग दिया, जीव अनन्ता जाय ।
इतनामें विजली पड़ी, दोइ मुवा ते मांय ॥१०॥
धर्मी पापी कोण छे, इण दोणां रे मांय ।
हिंसा थाने सारखी, देवो अर्थ बनाय ॥११॥
तब नो ते चट ऊचरे, मारा दर्शन काम ।
आता रस्तामें मुआ, तिणरा शुध परिणाम ॥१२॥
धर्म लाभ तिणने हुवो, हिंसा तणो तो पाप ।
गाड़ी आरंभ थी हुवो, यूं बोले ते साफ ॥१३॥
वेश्या अर्थे नीकल्यो, तिण में धर्म न कोय ।
एकान्त-पाप री काम ए, यो साँचो लो जोय ॥१४॥
वेश्या अर्थी जाणज्यो, एकान्त-पाप रे मांय ।
दर्श(न)अर्थि गाड़ी चढ्यो, धर्म-पाप बेहुथाय॥१५॥
मन्दमति यों बोलिया, तब ज्ञानी कहे एम ।
मिश्रतुमे नाहंमानता,(हिवे)बोलो बदलोकेम ॥१६॥
तब पाछा ते यों कहे, दर्शन धर्म रो काम ।
गाड़ी चढ़नो पाप में, इम जूदा बेहुठाम ॥१७॥

हाल-सातवाँ

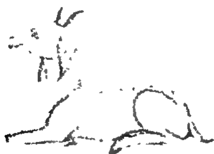
[illegible]

कल्पवृक्ष आगे दस मानवाँ,
भुगत युगलयां रो मनो नहिं जाय ।
मनडूं मेंने ल्हेरांदिला,
अणिम सत्तू धी रो होवो भुगत मिठाय ॥
भविजन जिनवर ओलखो ॥ १ ॥
कल्पवृक्ष (और) भुगतां युग रो,
करणा में रो बनावे पाप ।
या धरती मन्दा मलो,
नांटो होवे रो क्षानो ने न्याय ॥ भ० ॥२॥
इस पृथाल पाप पसरया,
नहिं छाड़े रो कुगुरु काल्डा लाग ।
इण अवसर रो प्रश्न पूछिया,
धर्मा में रो जावे दूर भाग ॥ भ० ॥३॥

भोलाजन भेला करी,
  खोटा हेतू री थोथा गाल बजाय।
घर में घुस घुरकाय ने,
  इण विध थी हो रया पन्थ चलाय ॥भ०॥४॥
सुणो दृष्टान्त हिवे तेहना,
  किणविध बोले हो ते आल-पंपाल।
बुद्धवन्त बुद्ध थी परख ले,
  निरबुद्धी हो फंसे माया जाल ॥ भ० ॥५॥
(कहे) "सो मनुष्य ने मरता राखिया,
  मूला गाजर हो जमीकन्द खवाय।
(पले) मरता राखिया सो मानवी,
  काचो पाणी हो त्यांने अणगलपाय" ॥भ०॥६॥
इम भोलां (नि· भरमायवा,
  गाजर मूलां रो हो मुख आणे नाम।
पर्णी होको, मांस, मुरदा तणो,
  नाम लेवे हो भ्रम घालण काम ॥भ०॥७॥
फासु-अन्न थी मरता राखिया,
  तिण रो तो हो छिपावे नाम।

जाणे खोटी-श्रद्धा चोड़े पड़े,
जद बिगड़े हो ऊंधा-पन्थ रो काम॥भ०॥८॥
कोई जीव मारे पंचेन्द्री,
भूख दुखड़ो हो मिटावण काम।
(तिणने) समझाय अचित अन्न से,
पाप मिटायो हो कोई शुभ परिणाम॥भ०॥९॥
जीव बचायो पंचेन्द्री,
तिण रो टलियो हो दुःख आरत पाप।
मारणवाला ने टल्यो,
हिंसाकारी हो मोटो कर्म सन्ताप॥भ०॥१०॥
इम मारतां ने मारणहार रे,
शान्ति करता हो सायक बुद्धिमान।
एकान्त-पाप तिण में कहे,
ते तो भूल्या हो जिन-धर्म रो भान॥भ०॥११॥
जीव बचे आरंभ मिटे,
तिण में तिण हो बतावे पाप।
ते जीव बचे आरंभ हुवे,
(एवा) प्रश्न पूछे हो खोटो नीयत साफ॥१२॥

देने वाला



॥ बकरी और भूंगे की दया ॥

ढाल सातवीं गाथा. ९. १० का भाव चित्र।



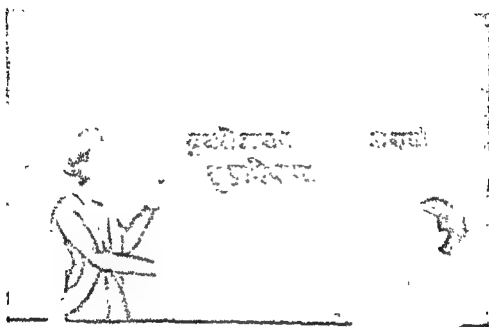
कोई डाव मारे रे जीवड़ा [illegible] दुखड़ा हे [illegible]
[illegible] में [illegible] हे [illegible]
[illegible] रे जीवड़ा [illegible] हे [illegible] ॥
[illegible] हे [illegible] ॥ १०

॥ हुक्का छुड़ाना ॥

ढाल सातवीं गाथा १८ का भाव चित्र ।



"पेट दुख थो होको पीवता, अवित औषधे हो दीनो होको छोड़ाय ।
आरंभ टल्यो छहु कायनो, इण काममें हो हुवो धर्मकेनाय ॥ १८ ॥



कोई ज्ञानी पूछे तेहने

एक रोगी होरयो अति दुखपाय।

तियां आयो वैद्य चलायने

मंमाई पाड़यारीतियारं चितमें चाय ॥२३॥

दयावंते सेज उपाय थी

रोगी ना हो दीना रोग मिटाय ॥

मंमाई थी मरतो नर बच्यो

पाप धर्म रो हो देवो भेद पताय ॥२४॥

(कोई) भद्रिक अनुकम्पा करं,

अल्पारम्भी हो हलूकर्मी जोय ।

महारम्भी महा-परिग्रही,

तिणरे घट में हो करुणा किम होय ॥२५॥

मोटी हिंसा त्रस-काय नो,

थावर नो हो छोटी सूत्र में जोय ।

आवश्यक, उपासक दशा,

भगोती में हो प्रभु भाखो सोय ॥ २६॥

मोटी हिंसा झूठ चोरी री,

श्रावक रे हो व्रत री मर्याद ।



मांस आहार नरक (रो) हेतु है,
ठाणाअंग हो ठवाई रे मांय।
ऐ साधु बाजा जैन रा,
मांस खादे हो साधुना उठ जाय" ३२॥
मांस पाणी एक सरीखा,
मूंढा थी हो तुम्हें करता एम।
(पोते) काम पड्यो जद दड़लिया,
परतीतो हो थारो आवे केम ॥भवि०॥३३॥
पाणी, मांस अचित थेहू,
पाणी पीवो हो मांस खावो नाय।
तो सरखा हिवे ना रह्या,
किम भोलों ने हो नाख्या भर्म रे मांय ॥३४॥
पाणी पीवे संजम पले,
मांस खादे हो साधु नरक में जाय।
(तेथी) सानों दृष्टान्त सरिखा नहीं,
योग्य-अयोग्य हो त्या में अन्तर थाय ॥३५॥
जो सम परणामी साधु रे,
पाणी मांस में हो बहुलो अन्तर होय।

मांस न खावे साधुजी,
फासुक पिण हो जागे नरक रो स्थान।
अन्न, मांस सरीखो नहीं,
साधु श्रावक हो करे अन्न-जल पान ॥४१॥
जो श्रावक मांस खावे नहीं,
दूजा ने हो खवावे केम।
अनुकम्पा उठायवा,
जणहूंतो हो थो घाल्यां येन ॥४२॥
अचित तो येहू सारखा,
मांस खाया हो होवे संजम रो घात।
पाणी पीया संजम पले,
(तो) ऊथप गई हो सारी हेतु री बात ॥४३॥
ए खोटा दृष्टान्त कुगुरु तणा,
ते दीया हो मेटण दया धर्म।
ते सम्दृष्टि श्रद्धे नहीं,
चोड़े जागे हो खोटी श्रद्धा रो मर्म ॥४ ॥
जीवां री रक्षा जो करे,
मिट जावे हो तेना राग ने द्वेष। -

भूख मरतो हणे पंचेन्द्री,
करुणा कर हो तेने दे समझाय।
कासुक सूँ खवो देय ने,
जीव-रक्षा हो इणविध पिण थाय ॥५०॥
माहण माहण उपदेश थी,
बचाया हो पर-जीवां रा प्राण।
या सत्य-वचन आराधना,
जीवरक्षा हो हुई परधान॥भवि०॥५१॥
चोर लूटे धन पारको,
धन धणी हो मरणे-मारणं थाय।
समझाय चोरी छोड़ाय दी,
दोनां री हो रक्षा हुई इण न्याय ॥५२॥
शील खण्डे एक लम्पटी,
शीलवती हो खण्डन लागी काय।
लम्पट ने समझावियो,
प्राण बचिया हो सती रा धर्म रे साथ ॥५३॥
धन अर्थे हणे एक सेठ ने,
धन धणी हो दोनों परिग्रहो त्याग।

झूठ चोरी व्यभिचारकरी,
नाम लेकर हो तुमे घालो भर्म ।
झूठा हेतु लगाय ने,
छोड़ दोनी हो तुमे लाज रु शर्म ॥५९॥
जीवदया-द्वेषी कहे,*
मरता राखे हो मैथुन सेवाय ।
निणरो उत्तर होवे सांभलो,
मिट जावे हो थांरी पक्षपात ॥भ०॥६०॥
एक विधवा थारा पन्थ री,
निज पूजजी रा हो दर्शन री चाय ।
वीरा पूज्य रह्या परगाम में,
खरची विन हो दर्शन नहिं पाय ॥६१॥
व्यभिचार थी पैसो जोड़ने,
दर्शन काजे हो आई पूज्यजी रे पास ।
भावना भाई (माल) घेराविया,

---

* जैसा कि वे कहते हैं :-

जीव मारे झूठ बोलने, चोरी करनेका परजीव बचाय ।
धले फरे अकारज एहवो, मरता राखे हो मैथुन सेवाय ॥२१॥
(अनुकम्पा ढाल—७)

दर्शन दान रा हो तिणरे धर्म रो धाम ।
घटी आरम्भ आश्रव सही,
तिण विना हो तिणरो किम चले काम" ६७

(उत्तर) तो समझो इण दृष्टान्त थी,
मैथुन सेवे हो जीव रक्षा रे काज ।
ते परथम नारी सारखी,
नहिं विवेक हो नहीं तिण रे लाज ॥ ६८ ॥

कोई जीव बचावे गुण भरी,
घटी आदिक हो मेतन रे साय ।
अनुकम्पा तस निरमली,
आरम्भ तो हो अणसरते कराय ॥ ६९ ॥

व्यभिचार घटी सारीखो नहीं,
इम समझो हो सब कर्म कुकर्म ।
समझे विवेकी विवेक में,
अणसमझू रे हो उपजे अति भर्म ॥ ७० ॥

शील खण्ड दर्शण कही कुण करे,
तो जीव बचावे हो कुण मैथुन सेव ।
कुहेतु कुगुरु रा काटवा,

मन्दमति हो सुण ने दुःख पाय।
जीव दया रा द्वेषिया,
ऊंधी मति थी हो दुरगत में जाय ॥ ८४ ॥
मनिमारो*जाझा राय (श्रेणिक) री,
या भाखी हो सूतर में वात।
पाप कहे श्रेणिक भणी,
ते तो बोले हो चोड़े झूठ मिथ्यात ॥ ८५ ॥
"अमारी" धर्म जिन भाखियो,
नृप पाल्यो हो पलायो जग (देश) मांय।
तेमां पाप कहे ते पापिया,
भोलां ने हो नाख्यां फन्द रे मांय ॥ ८६ ॥
(कहे) वीरजी नाय सिलावियो,
पड़हो फेरजे हो थारा राज रे मांय।

---

* जैसा कि वे कहते हैं:—
श्रेणिकराय पड़हो फिराविया,
यह तो जाणो हो मोटा राजाँ री रीत।
भगवन्त न सराह्यो तेहने,
तो किम आवे हो तिण री प्रतीत ॥ २७ ॥
(अनुकम्पा ढाल-७)

वो दुपम राजा श्रेणिक तणां,
   आज्ञाकारी हो सुणायो जाय ॥९२॥
श्रेणिक ने प्रभु ना कह्यो,
   घोषण करजे हो म्हारा स्थान रे काज ।
तो पाप हुवो तुम कथन थी,
   सेजा रो हो वीर ने दीनो साज ॥९३॥
वलि मोटा होता राजवी,
   स्थान घोषणा (रो) हो नहीं चाली चाल ।
तो श्रेणिक घोषणा किम करी,
   न्याय तोलो हो हिरदे साक्षात ॥९४॥
श्रीकृष्ण करी उद्घोषणा,
   दीक्षा लेवो हो श्री नेम रे पास ।
साख करूं पिछला तणा,
   ज्ञात में हो यो पाठ है खास ॥९५॥
आज्ञा न दीधी श्री नेमजी,
   उद्घोषणा हो करी नगरी मंझार ।
(तो) थारे लेखे पाप हुवो घणा,
   दीक्षा दलाली (में)हो नहीं धर्म लिगार ॥९६॥
अन्य नृप री चाली नहीं,

श्रेणिक ने प्रभु नहिं कह्यो,
घोषण कीजे हो म्हारे स्थान रे काम।
आव-जाव कार्य करण रो,
गृहस्थो ने हो केणो वर्ज्यो श्याम ॥१०२॥
समदृष्टि निर्मल भाव थी,
स्थान-दलाली हो कीवी श्रेणिक राय।
तिणरे विवेक अति निरमलो,
कारण काज हो समझे मन माँय ॥१०३॥
उद्घोषण आज्ञा में नहीं,
दीक्षा-दलाली हो निर्मल परिणाम।
धर्म-दलाली नीपजी,
समदृष्टी हो करे एहवा काम ॥१०४॥
नाम गोत्र सुणे साधु रो,
अति फल कह्यो हो सूतर रे माँय।
कोणिक सुणतो (प्रभु) वारता,
भक्ती रो हो फल मोटो पाय ॥१०५॥
चारजी नाय सिखावियो
मुझ वार्ता हो नित लीजे, मंगाय
वली न जणाई आमना,

'जमर' 'पंवार' 'झाला' भणां,
 समर्थ योधवाळां तणो सरणो बिसवास ॥१११॥
'राजा' 'राठौड़' 'भाटी' भणा,
 कारण योधा हा ढहु ईतर धणाय।
असरफियां आप हूँ,
 धर्म दुरजनां रो धर्म रो धार पाट ॥११२॥
'अजमाओ' नाम दया भणो,
 दांत भाला रो दमन संहरदार।
है दोयणा रो पिण धरो,
 सल्लियारा रो पापणा रा सार ॥११३॥
पर नै सता ध्यान देणा,
 हाथा रंगा रा पर नै पत्यां भाम।
मल्लियारां निम पर नै पत्यां,
 एक सरिता रो मोनो मे धाम ॥११४॥
हां सं धर्म पेखा तुम्हें,
 गंजा में हां पनाणो पाप।
सांटा धरा रे तृप भणां,
 मिथ्यावादी रो तृप दोषो रो मार॥११५॥
(क.र) "मतिमार थी नाम करता नहीं",

तीर्थंकर पखी मोटका,
ज्यांरे सामे हो धर्म किणो पचखाण।
मनिमार घोषणा नहीं करी,
थारा सुख थी हो (थारो) उपध गईयान ॥१२०॥
जो रोग मोटा राजा मरी,
तो पखी हो पाली नहीं केम।
अनुकम्पा रा द्वेष थी,
नहिं सूझे हो निज बोल्या रो नेम ॥१२१॥
'मनिमारो' ने 'दीक्षा' री घोषणा,
राजरीती हो केवल ते नांय।
समदृष्टी राजा तणी,
कृष्ण, श्रेणिक हो कोधी सूत्र रे मांय॥१२२॥
दीक्षा रा उद्घोषणा,
कृष्ण छांडी हो दूजा राजा री नाय।
(पिण) निषेध नहीं इण थान री,
करी होती हो कोई समदृष्टिराय॥१२३॥
प्रत्यदत्त पखी भणी,
चिन मुनि हो समझावण आय।
आरज कर्म ने आदरो,

जीव देह छोड़ाविया,
　*मरिया मरसी हो फरक नहिं कोय॥१२९॥
(उत्तर) भोला ने भड़काविया,
　दृष्टान्त नो हो रची मायाजाल।
(हिवे) करड़ो उत्तर दिन दिया,
　नहीं कटे हो थांरी जाल कराल॥१३०॥
काँटा थी कांटो काढ़णो,
　तेथी सुणने हो मन करज्यो रीस।
कुहेतु शल्य उधारवा,
　करड़ा दृष्टान्त हो देऊं विश्वा वीस॥१३१॥
दो धायां अनुरागण तुम तणी,
　पूज्य दर्शण हो गई गेल रे मांय।
किणविध आई धायां तुम्हें,
　पूज्य पूछ्या हो धायां कह्यो सुणाय॥१३२॥

---

* जैसा कि वे कहते हैं:—
एकन सेवलो आस्रव पांचमो,
　तो सब हुआ हो चोथो आस्रव सेवाय।
केइ पहलो सेई ने धन पाप में,
　धर्म हुवो हो ते तो नरिये थाय॥८०॥२४
(अनु० ढाल—३)

बताओ हो थांरी श्रद्धा ने देख ॥१३७॥
सेव्यां आश्रव एक दोवमां,
तो दूजी आई हो पांचों आश्रव नीय ।
दोयां रो भेद बताय दो,
आश्रव सरखा हो थारे केवा रो देव ॥१३८॥
सुण घबराया पूछवा,
उत्तर देवा हो ऊंडे श्रद्धा री टेक ।
(दोनों) सरीखा कयां आवे नहीं,
शंक निन्द हो (लागे) कलंक री रेख ॥१३९॥
हरता दर्शाविर चालिया,
गंगा देखो हो साथा दरसन सार ।
निर्णो बुद्ध ना निरमला
तेने दुखा हो धमकर अपार ॥१४०॥
पाजी कुलक्षणा नार ए,
दरसन काज हो थाया आश्रवद्वार
सेव्यां ना महापापणा,
(विवेक)विकलणो र हो धम नाही निगार ॥१४१॥
नय बोल्या निहां समकित
थारो श्रद्धा हो थाने ...

दर्शन रा हो भाव किण विध होय।
वात असम्भवनी दिसै,
दृष्टान्ते हो कदा मानां मोय ॥१४७॥
तो मनि खोटी तेहनी,
कुकर्मिणी हो मोटो कीनो अन्याय।
पाप सेव्यो अति मोटको,
फिट-फिट हो हुवे जगत रे माय ॥१४८॥
(वलि) लोभ मिट्यो नहिं तेहनो,
तीव्र पड़ियो हो फिरर मोह जंजाल।
तेथी पापणी दूजो नार है,
दर्शन रो हो थोथो आल-पंपाल" ॥१४९॥
न्यायपक्षी तब बोलियो,
सेवारो हो थारे दीखे राग।
तेथी सिद्धा बोलिया,
(पिण) जीवरक्षा में हो दीनो सन्य ने त्याग॥१५०॥
कथन विचारो तुम तणा,
दो वेश्या रो हो थां लीनो नाम।
गेणाने व्यभिचार थो,
जीवरक्षा रो हो त्यां कीदो काम ॥१५१॥

कहता खोटो हो देवे दृष्टान्त गूढ़ ।
सांपां री रक्षा उथापवा,
खोटो कथनो री हो मांडे अगम रूढ़ ॥१६६॥
(कहे) "एक देख्या मायज कूल (लाभ) करी,
मारत नाखो हो है दीखै पर सांप ।
दूजो कर्तव्य करो आपणो,
मरता राख्या हो मानव जीव छोड़ाय ॥१६७॥
एक आपणो खोटो कर्तव्य करी,
निज रे लाग्या हो दोनों विध कर्म ।
ने दूजो छुड़ाया तेहने,
उणें लहे हो हुवा पापने धर्म" ॥१६८॥
एवो खोटो न्याय लगाय ने,
आप मने हा करे खोटी थाप ।
पिछु विध पाप पेटो किया,
दूजो रे हो कहो धर्म ने पाप ॥१६९॥
हांवे कथन हमारो सांभलो,
में (तो) नहीं करां हो धर्म-पाप रो थाप ।
मिथ्याहेतु मिथ्यामति कथे,
तेने उत्तर हो म्हें देवाँ साफ ॥१७०॥

(एक) नारो कुकर्म सेव ने,
  अरक्ष आणो हो लाई घर मांय।
दूजी सेवी व्यभिचार ने,
  द्रव्य खरचे हो साधु सेवा रे मांय ॥१७१॥
धन आणो खोटा धून करी,
  तिण रे लग्या हो दोनों विध कर्म।
तो दूजी सेवा करी थांहरी,
  थारे लेखे हो हुयो पाप ने धर्म ॥१७२॥
पाप गिणे व्यभिचार में,
  उणरी सेवा में हो ते न गिणे धर्म।
पोते श्रद्धा री खपर पोने नहीं,
  दया उठावा हो बांधे भारी-कर्म ॥१७३॥
इम कह्या न्याय न ऊपजे,
  चर्चा में हो अटके ठामोठाम।
तो पिण निर्णय ना करे,
  जीवरक्षा में हो लेवे पाप रो नाम ॥१७४॥
जीव, द्रव्य, अनादी शासतो,
  प्राण-पजा हो पलटे वारंवार।
ते प्राणों री घात हिंसा कही,

रक्षा में हो दया कही सुखकार ॥१७५॥
ते रक्षा करे समभाव थी,
समदृष्टि हो संवर गुण पाय ।
मोक्षमार्ग रक्षा कही,
मोक्ष-अर्थी हो करे अति हुलाय ॥१७६॥
पृथ्व्यादिक छहुं काय ना,
प्राणरक्षा में हो कहे पाप अजाण ।
जाँ हिंसा-रक्षा जाणी नहीं,
खोटी कर रया हो निजमन री ताण ॥१७७॥
(वलि) त्रसथावर नहीं सारखा,
जांरा प्राणां में हो कह्यो फरक अपार ।
तेथी हिंसा मांही फरक छे,
स्थूल सूक्ष्म हो सूत्तर निरधार ॥१७८॥
निज शक्य अशक्य रा भेद ने,
हिंसा रक्षा में हो समझो चतुर सुजाण ।
(वेई) समुचय नाम बताय ने,
शक्य छोड़ने हो करे अशक्य (री)ताण ॥१७९॥
थावर रक्षा करी ना सके,
त्रस जीवाँ री हो करे हेर ते साय ।

जिण री [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥१८०॥

विविध भाव [illegible] करै,

परिग्रह [illegible] रा ममता रै [illegible] ।

जैसे [illegible] रा [illegible] रा [illegible] [illegible],

[illegible] [illegible] रा [illegible] [illegible] ॥१८१॥

[illegible] [illegible] [illegible] (कुण) [illegible],

इण बात रा [illegible] [illegible] [illegible] ।

बाह्य [illegible] परिग्रह [illegible] रा,

[illegible] (जे) [illegible] रा [illegible] [illegible] [illegible] ॥१८२॥

(कई) ममता [illegible] [illegible] है,

[illegible] रा [illegible] रा [illegible] [illegible] ।

[illegible] [illegible] रै [illegible],

(परिग्रह) [illegible] ममता रा [illegible] [illegible] [illegible] ॥१८३॥

[illegible] [illegible] [illegible],

परिग्रह उपधि रा भिन्न-भिन्न न एक ।

ममता रो परिग्रह [illegible],

उपकारे रा उपधि ने लेश ॥१८४॥

उपकार ममता एक है,

इम बोले हो कुगुरु निशंक।
सूत्र वचन उत्थाप ने,
मिथ्यात रा हो मारे माठा-डंक ॥१८५॥
दान, शीयल, तप भावना,
मोक्षमारग हो चारों सुखकार।
अभयदान भय मेटे कह्यो,
जो देवे हो पावे भवपार ॥१८६॥
अनुकम्पा अर्थ प्रकाशिनी,
ढाल जोड़ी हो चूरू शहर मँझार।
उगनीसें छियांसी लगे,
श्रावग सतनी हो सुखदायी सार ॥१८७॥

सातवीं ढाल सम्पूर्ण।



ढाल--आठवीं



(तर्ज—अनुकम्पा सावज मत जाणो)

द्रव्यलाय में बले जद प्राणी,
आरत-ध्यान पावे दुख भारी ।
बिल-बिलता रुद्र-ध्यान जो ध्यावे,
अनन्त संसार वधे दुखकारी ॥
चतुर धरम रो निर्णय कीजे ॥१॥
कोई दयावन्त दया दिल धारी,
अग्नि में बलता ने जो बचावे ।
द्रव्य भाव दया तिणरे हुई,
विवरो सुणो तिणरो शुद्ध भावे ॥च०॥२॥
द्रव्ये तो उणरा प्राण री रक्षा,
भावे खोटा ध्यान घटाया ।
यह उपकार इणभव परभव रो,
विवेक विकल यों भेद न पाया ॥च०॥३॥
द्रव्य आगसे बलता राख्या,
भाव आग तिणरी टल जावे ।

द्रव्य, भाव रो नाहीं निवेरो ।
दयाहीन कुपन्थ चलायो,
त्यां कुगति सन्मुख दियो डेरो ॥चतु०॥९॥
स्वारथत्यागी परउपकारी,
दुखी दर्दां रो दर्द मिटावे ।
ते पिण माठा-ध्यान मिटावण,
तिण में पाप मिथ्याती बतावे ॥चतु०॥१०॥
(कहै) "साधु गृहस्थ ने ओषध देने,
दुःख आरत निणरो न मिटावे ।
तेथी पाप में गृहस्थ ने केवां,
साधु न करे ते पाप में आवे" ॥च०॥११॥
(उत्तर) चौमासे उत्पत्ति जीवां री जाणो,
गामानुगाम विहार न करणां ।
त्रिविधे (त्रिविधे) साधू त्यागज कीधा,
सूत्र में साधु ने बतायो निरणो ॥च०॥१२॥
साधु न करे ते पाप में गावो,
तो चौमासे (में) साधु ने आणां न जाणो ।
गेही चौमासा में वन्दण जावे,
(तो) तिणमें एकान्त-पाप बताणो॥च०॥१३॥

छोड़ावा में म्हें धर्म तो जाणां ।
(पिण) सगले ठिकाने जाय ने हिंसा,
छोड़ावा रो उद्यम किम ठाणां ॥"॥२८॥
तो इमहिज समझो रे भाई,
कोड़ादि रक्षा धर्ममें जाणां
मार्गादिक में सगले ठिकाणे,
बचावण रो उद्यम किम ठाणां ॥च०॥२९॥
हिंसा छुड़ावा सगले न जावां,
तिम ही जीव बचावा रो जाणो ।
जीवरक्षा रो द्वेष धरी ने,
मिथ्यामति क्यों ऊंधो ताणो ॥च०॥३०॥
आपणा व्रत री रक्षा करे और,
परजीवां रा प्राण बचावे ।
हिंसक थी मरता जाणी ने,
उपदेश देई जीव छुड़ावे ॥चतुर०॥३१॥
हिंसादि अकृत्य करता देखी,
भेषधारी कहे म्हे समझावां ।
गृहस्थ पग हेटे जीव आवे तो,
तिण ने तो, कहे म्हें नाय बतावां ॥३२॥

बोल बदल मिथ्यामत सेवे ॥चतु०॥३७॥

(कहे) "हिंसादि अकृत्य करता देखो,

उपदेश देई में हिंसा छुड़ावां।

अकृत्य करता रा पाप मेटण में,

फुरती करां में देर न लावां" ॥चतु०॥३८॥

*डफोरसंख ज्यों बात या थारी,

काम पड़्या से झट नट जावो।

गृहस्थी रा पग हेटे जीव मरे जद,

हिंसा छोड़ावण तुम नहीं चावो ॥३९॥

तेल ढुलण दृष्टान्त रे न्याय,,

पगतल जीव बतावणो खोटो।

ते दृष्टान्त थी थारी श्रद्धा में,

हिंसा छुड़ावण में होसी टोटो ॥४०॥

युक्ति पे युक्ति सुणो चित लाई,

जीव बचावणो धर्म रे भाई।

जो जीव बचावा में पाप बतावे,

वाने उत्तर (यो) दो समझाई ॥४१॥

---

*जो कहते हैं, पर करते नहीं, उन्हें डफोरसंख कहा जाता है।—संग्राहक

जो अग्नि उठे तो लाय लागे है,

(तब) गृहस्थ ने अनरथ रो पाप थावे ॥४३॥

जिणने धर्म ने पाप छुड़ायो,

अनरथ होता ने अटकायो।

जो जिणने तुमे धर्म नहीं तो,

हिंसा छुड़ावां यूं झूठ सुणावो ॥४४॥

हिंसा छुड़ावां यूं मुख से बोले,

तेल सूं होतो हिंसा न छुड़ावे।

यह खोटी श्रद्धा उघाड़ी दीसे,

अन्तर अंधारो नजर न आवे ॥४५॥

(कहे) "पग से मरता जीव तुमे बचावो,

तेल से मरता नो थें न बचावो"।

(उत्तर) खोटा बोलो मन रे भैते थें,

म्हारे तेल पगां रो सरीखो दावो ॥४६॥

पग से मरता ने तेल से मरता,

मुनि जीवां री रक्षा में धर्म बतावे।

म्हारी तो श्रद्धा कठेह न अटके,

तो अणहुंता सन्त पर ते कलंक चढ़ावे॥४७॥

कठे कहे "हिंसक (ने) समझावां,"

धारा हेतु रो भाख्युं लेखो ॥ चतुर०॥५०॥
करता विहार मारग में धारा,
श्रावक मामा मिलया आवे।
मार्ग छोड़ो ने उजड़ जावे,
त्रसथावर री हिंसा थावे ॥चतुर०॥५१॥
श्रावक ने उतपंथ जाता,
त्रसथावर (री) हिंसा करता देखा।
(जो) हिंसा छुड़ाया में धर्म थें मानो,
तो श्रावक ने वर्जणो इण लेखे ॥५२॥
हिंसा छोड़ावणो मुख से बोले,
थोथा बादल जिम ते गाजे।
श्रावक वन (उजाड़) में जीव ने चोंथे,
मौन साजे वर्जता क्यों लाजे ॥चतुर०॥५३॥
कहो बकरा हणता ने समझावां,
(वहां तो कसाई) समझे निश्चय नहिं जाणी
श्रावक ने वन में हिंसा था न वर्जे,
जहां छूटे हिंसा त्रसथावर प्राणी ॥चतु०॥५४॥
कसाई केणो माने न माने,
श्रावक तो थारा अनुरागी।

जीव बचाया में पाप बतावे।
तो तेहिज हेतु थी हिंसा छुड़ाया में,
तेनों श्रद्धा में कूपग आवे॥ चतुर० ॥२८॥
(कोई) अन्धा पुरुष ग्रामान्तर जातां,
आंख बिना हिंसा किम टाले।
कीड़ी मकोड़ा मरता जावे,
त्रसथावर (जीव)पर पग देई चाले॥च०॥२९॥
थें पिण सहजे मारग ही जावो,
अन्धा ने हिंसा करता देखो।
पग-पग हिंसा थें न छुड़ावो,
(तेथी) खोटा थांरुण रो तुम लेखो॥च०॥३ ॥
(त्या जीव. ने) अनाथ अनाथ ने हिंसा छुड़ाणी

कीड़ी मोकादिक प्राणी जावे
त्रसथावर जीवा रा घमसाण होवे ॥बि०॥२६
थेपधारो सहजे मार्ग ही जाना
अंधा रा पग सूं मरता जीवाने देखे।
यह पग-पग जीवा ने नहीं बचावे,
तो खोटो श्रद्धा जाणज्यो इन लेखे ॥बि०॥२७॥

(अनुकम्पा ढाल—)

पड़त मरे हिंसा बहु थावे ॥चतुर०॥६३॥
गृहस्थ रे ज्ञान न पाप लागण रो,
ते कदा थारे समझ में आवो।
थें हिंसा देखो छोड़ावणो थेवो,
[तो] आगे टुरता हिंसा थां क्यों न मुकावो ॥६४॥
[कहे] "गृहस्थ री उपधी सूं जीव मरे छे,
सर ठांइ बतावा ने क्यों नहिं जावो*।"
तो उत्तर सिद्धो थारा हतुरो
हिंसा छुड़ावा ने थें [क्यों] नहीं धावो ॥६५॥
किणहिक ठौर हिंसा छुड़ावे,
किणहिक ठौर शंका मन आणे।
मिथ्या उदय थी समझ पड़े नहीं,
अज्ञानी जन नो ऊंधी ताण ॥चतुर०॥६६॥

---

* जैसा कि वे कहते हैं
इत्यादिक गृहस्थ रे अनेक उपधि सु
त्रसथावर जीव मुवा ने मरसी।
एक पग हेठे जीव बतावे,
त्यां ने सगलो ही ठौर बतावणा पड़सी ॥ ३॥
(अनुकम्पा ढाल—८)

अवसर थो हिंसा छुड़ावे,
अवसर जीव बचावा जावे ॥चतुर०॥७१॥
जीव बचावणो हिंसा छुड़ावणो,
दोनां रो एक ही समझो लेखो ।
एक में धर्म दूजा में पापो,
इम श्रद्धे ने मिथ्यामति देखो॥चतुर०॥७२॥
गृहस्थी रा पग हेठे जीव आवे तो,
साधु बचावे तो पाप न चाल्यो ।
भेषधारी तिणमें पाप बतावे,
परतख वांतो कुगुरां घाल्यो ॥चतुर०॥७३॥
(कहे) "समवसरण जन आता ने जाता,
केई रा पग से जीव मर जाता ।
जो जीव बचाया में धर्म होवे तो,
भगवन्त कहेता न हीने बचाता ॥चतुर०॥७४॥
नन्दण मनिहार डेडको होय ने,
वीर वन्दण जाता मारग मांयो ।
तिणने चांप मार्यो श्रेणिक ना घोड़ै,
वीर साधु सामांमेल्ह क्यों न बचायो"॥७५॥
"तिणे जीव बचाया में पाप बतावे"

हिंसा छोडायां सूं धर्म बतावे,
   जीव बचायां पाप जो केवे ।
ऊंधी श्रद्धा रा पग-पग अटके,
   काल करी-करी दुर्गति भेटे ॥चतुर० ॥८१॥
श्रावक रो मारग तो अलगो मेलो,
   साधां रा धर्मप्रमुख लावे ।
द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव रे अवसर,
   साधु धर्म किया गुण पावे ॥ चतुर०॥८२॥
सज्झाय, ध्यान, तप विहार विचरणो,
   व्याख्यान, वाचन धर्म रो कामो ।
बल बुद्धि और क्षेत्र काल रे,
   विवेक करे साधु गुण धामो ॥चतुर०॥८३॥
विन अवसर ये नांय करे तो,
   सज्झाय ध्यान न पाप में आवे ।
(तिम) विन अवसर जीव नाय छुडावा,
   (तिणी) जीव छोडावणो पाप न थावे ॥८४॥
कदा चेई एम पल्पे,
   साधु-श्रावक (री) अनुकम्पा एको ।
साधु करे तिम श्रावक ने करणी,

पिण काम पड़े जब फिरता ही देखो ॥८५॥
साधु, साधु थी मरता जीव बचावे,
पाप टले अनुकम्पा गावे।
श्रावक, श्रावक थी मरता जीव बचावे,
झटपट तेने पाप बतावे ॥चतुर० ॥८६॥
श्रावक श्रावक ने(मरता) जीव बचाय,
(तो) किसा पाप लागे किसा व्रत भागे।
तिण रो तो उत्तर मूल न आवे,
थोथा गाल बजावा लागे ॥ चतुर० ॥८७॥
सिद्धान्त (रा) बल बिना बोले अज्ञानी,
संभोग (रो) नाम अनुकम्पा में लावे।
गालां रा गोला मुख से चलावे,
ते न्याय सुणी अविवेकी चिढ़ जावे ॥च०॥८८॥
साधु रे संभोग श्रावक से नाहीं,
(तेथी) जीव बचाया में पाप बताओ।
(तो) श्रावक साधु ने जीव बचावे,
तिण में तो धर्म तुमे क्यों गावो ॥८९॥
जद कहे म्हारी हिंसा टलाई,
(तेथी) धर्म रा काम किया सुखदाई।

(नो) श्रावक श्रावक ने (मरता) जोव
(नो) यो पिण धर्म मानो क्यों न काई॥९०॥
साद् थी मरता जीव बचाया,
श्रावक थी मरता निम ही बचाया।
एक में धर्म ने दूजा में पापां,
ई झगड़ा थारा श्रद्धा में मांचिया॥च०॥९१॥
थारा प्रकार रा संभोग भाख्या,
सूत्र समायंग मांई देखो।
जीव बचाया संभोग लागे,
इसो नाही सूत्तर में लेखो॥चतु०॥९२॥
श्रावक, श्रावक ने जीव बचाय,
पाप लागे यो मन काढ्यो कूरो।
तिण लेखे जीवां रा भेद मिलाया,
थांरी श्रद्धा में (होसी) पाप रो पूरो॥९३॥
(कहे) "जीवां रा भेद तो ज्ञान रे खातिर,
(वली) दया रे खातिर म्हें पिण बतावाँ।
भूत भविष्य में जीव बचाया,
धर्म रो काम म्हें कहि समझावाँ॥च०॥९४॥
वर्तमान (काल) पग हेठे आया बचाया,

इण श्रद्धा रो निर्णय न काढ़े अज्ञानी,
  इम भेलप किधो संयोग सारखा।
पाप छुड़ायां संयोग में नाहीं,
  साहु रो तो धर्म भवि निरणो ॥प०॥१००॥
नहीं मारण ने जीव बचाया,
  संयोग लागे ऐसा बतावे।
तो पाप छुड़ावण परतख बतावो,
  भागलपणो थांरी श्रद्धा में आवे ॥प०॥१०१॥
लाय लागी गृहस्थ जब देखे,
  (तो) तुर्त बुझावे रक्षा मन धारी।
इण रक्षा रो काम गृहस्थ करे छे,
  तिण में एकान्त पाप कहे स्वांगधारी॥१०२॥
(कहे) "लाय में बले जारे करज चुके छे,
  (बांध्या) कर्म छुटण री निर्जरा भारी।
तिण पहुं ज्यांने जो कोई काढ़े,
  यह होवे पाप तणो अधिकारी" ॥१०३॥
इम परतां रे कर्म कटना बतावे,
  काढ़णवाला ने पाप बतावे।
स्यांरो तो तब परतीती आवे,

वली हलुकर्मीपणो गुणां में,
तुमे कह्यो धारा ग्रन्थ में दाख्या॥च०॥१०९॥
अल्पारम्भी गुण श्रावक केरो,
उवाइ सुगडांग में देखो।
महारम्भी श्रावक नहीं होवे,
(तेथी) अल्पारम्भी श्रावक रो लेखो॥११०॥
न्याय लगावे ने महा अवगुण में,
सूत्र मांही जिन इणविध भाख्यो।
(अत्यन्त) ज्ञानावर्णी आदि कर्म रो कर्त्ता,
तेथी महाकर्मा प्रभु दाख्यो ॥ १११ ॥
महा क्रियावन्त तेने जाणो,
महा आश्रव कर्मबन्ध नो करना।
परजीव ने महा वेदनदाता,
एहवा दुर्गुण नो ने धरना ॥ च० ११२ ॥
न्याय बुझावे तेना गुण नो,
भगवती मांही इणविध बोले।
अल्पकर्म ज्ञानावर्णादि,
तेथी हलुकर्मा इण तोले ॥ च० ॥ ११३ ॥
अल्पक्रिया अल्प आश्रवी ते छे,

थारा भ्रम-विध्वंसन माहीं,

अल्पारम्भी ने स्वर्ग * बतायो ।

अल्पारम्भे महारम्भ नाहीं,

यो पिण गुण है थे हीज गायो ॥व०॥२१९

जद्रि थे न्हाना जीव बचाया रा,

द्वेष थी तुम इहाँ अवगुण बोलो ।

"अल्पारंभ रो गुण ने नाहीं",

[यो] तत्व छोड़्यो तुम हिरदामें तोलो॥२२०।

अल्पारंभ श्रावक [रा] गुण बोले,

निरारंभी साधु [रा] गुण जाणो ।

तेथी साधु-श्रावक रो धर्म है जुदो,

दो विध धर्म (जिन) सूत्र बखाणो ।व०॥२२१।

---

* [illegible] वे कहते हैं —

[illegible] गुण [illegible]

[illegible]

[illegible] गुण [illegible] हुवे छे ।

(भ्रम-विध्वंसन—पृ० [illegible])

* [illegible] वे कहते हैं —

[illegible]

[illegible] गुण छे ॥

(भ्रम-विध्वंसन—पृ० [illegible])

अतिचार टलवा री धर्म है भागे ॥१२३॥
साधु रा मातपितादि गृहस्थो,
(जाने) साधु जिमावे तो दूषण लागे।
गृहस्थो (अपना) मनुष्याँ ने भूखा राखे तो,
दूषण लागे पेलो व्रत भागे ॥चतुर०॥१२७॥
गृहस्थी, गृहस्थी रो थापण नहिं देवे,
दूजो तीजो व्रत तिण रो भागे।
थापण देई साधु न केवे,
पिण गृहस्थ दिया व्रत रेवे सागे ॥च०॥१२८॥
इम अनेक बोल साधु रे दूषण,
ते गृहस्थी रे व्रत रक्षा रा ढाबो।
(तिथो) गृहस्थ ने साधु रो आगार जुदो.
एक कहे ते मिथ्यात रा धाबो ॥च०॥१२९॥
सुगे (वीतराग) धर्म आई पड़ने पापी.
एकान्त पाप नो निगने न देवे।
लाय में काई मनुष्य बचाया.
एकान्त पापी रो पद देवे ॥चतु०॥१३०॥
(इम) उलटी कथनी करी-करी ने.
भोला ने फुरन्द चढ़ाया।

अग्नि थी बलता मनुष्य निकाले।
दोयां रो एक ही लेखो बतावे,
ते अन्याय रे मारग चाले ॥चतुर०॥१३६॥
कुगुरु रा मत रा श्रावक श्राविका,
अग्नि तो नित ही लगावे बुझावे।
(ते) मनुष्य रा मारण जेसा महापापी,
थारी श्रद्धा रे लेखे थावे ॥चतुर०॥१३७॥
मोटी नें मोटी मनुष्य री हिंसा,
अग्नि री हिंसा सूक्ष्म भाखी।
लाय बुझावे ते अलगारंभी,
भगवती सूत्र के तिण री साखी ॥१३८॥
बकरा बचावण मनुष्य ने मारे,
अग्नि थी बलता मनुष्य बचावे।
दोयां ने सरीखा कुगुरु केवे,
ते महा मिथ्यात्वि चोडे दावे ॥च०॥१३९॥
बकरा बचावण मनुष्य ने मारे,
ते तो पापत्व छे कुकर्मी।
अग्नि थी बलता मनुष्य बचावे,
अल्पारम्भी ने दया धर्मी ॥च०॥१४०॥

दोहा

जीवहिंसा छे अति बुरो, तिण में दोष अनेक।
जीवरक्षा में गुण घणा सुणजो आणि विवेक ॥१॥

ढाल-नवमी

(तर्ज—यो भव रत्नचिन्तामणि सरिखो)

रक्षा देवी सब (ने) सुखदाई,
  या मुक्तिपुरी नी साई जो।
साठे नामे दया कही जिन,
  दशमां अंग रे माईं जी ॥
रक्षा धरम श्री जिनजी री वाणी ॥ १ ॥
त्रसथावर रे खेम री करता,
  अहिंसा दुःखहरता जी।
दोष तणो परे त्राण शरण या,
  गणधर एम उचरताजी ॥रक्षा०॥२॥
'निर्वाण'[1] 'निर्वृत्ति'[2] नाम है इणरो,
  'समाधि'[3] 'शक्ति'[4] स्वरूपा जी।

'शांति' जग प्रसिद्ध (ले) कहता,
  'कान्ति' अद्भुत रूपीजो ॥रक्षा०॥३॥
'[illegible]ति' आनन्द रे हेतुपणा थी,
  'विरति' नाम [illegible] जो।
'अनुकम्पा' अनुमान थी उपजो,
  शुभ कर मे 'गुण' जो ॥ रक्षा०॥४॥
[illegible] री रक्षा था 'दया' कहीजे,
  'मुक्ति' अरु 'शांति' (आत्मा री शान्ति) उच्चरीजे
'[illegible]' आराधना [illegible],
  [illegible] ॥रक्षा०॥५॥
सर्व [illegible],
  [illegible] ।
[illegible],
  [illegible] ॥रक्षा०॥६॥
[illegible]

[१६]
तेथी 'बोधि' कहिये जो।
[१७] [१८] [१९] [२०] [२१]
'बुद्धि' 'धृति' 'समृद्धि' 'ऋद्धि' वृद्धि,
[२२]
'स्थिति' शाश्वतो एथी लहिये जो ॥र०॥७॥
[२३]
'पुष्टि' पुण्य रो उपचय इण थी,
[२४]
समृद्धि लावे 'नन्दा' जो।
जीवां रे कल्याण रो कर्ता,
[२५]
'भद्रा' भणे मुनिन्दा जो ॥रक्षा०॥८॥
[२६]
'विशुद्धि' निर्मलता दाता,
[२७]
लब्धि रो दाता 'लब्धि' जो।
सब मत में प्रधानता इणरी,
[२८]
'विशिष्टदृष्टि' प्रसिद्धो जो ॥रक्षा०॥९॥
[२९]
'कल्याणा' कल्याण रो दाता
[३०]
'मंगलिक' विघ्न मिटावे जो।
[३१]
हर्ष करे तेथी यह 'प्रमोदा'

[४०]हिंसा उपरति 'संयम' कहिये,
[४१]'शीलपरोघर' जाणो जी।
[४२]'संवर' [४३]गुप्ति [४४]'व्यवसाय' नामे,
निश्चय स्वरूप थी जाणोजी ॥रक्षा०॥१५॥
[४५]'उच्छय' भाव उन्नतता समझो·
[४६]'यज्ञ' भाव पूजा देवां री जी।
गुण आश्रय रो स्थानक निर्मल,
[४७]'आयत्तन' नाम छे भारी जी॥रक्षा०॥१६॥
[४८]'यजन' अभयदान थी जाणो
जीवरक्षा रो उपायोजी।
नैथी यतना इण ने कहिये·
पर्याय नाम कहायो जी॥रक्षा०॥१७॥
जीव बचाया में पाप पनावे·
ते कुपन्थे पड़िया जी।
परतख पाठ देखे नहीं भोला,
हिरदा मिथ्यात से जड़ियाजी ॥र०॥१८॥

अथवा पूजा अर्थ अणो रो,
भाव से देव पूजिजे जो।
द्रव्य सावज पूजा हिंसा में,
ते इहां नाय गणीजे जो ॥ रक्षा० ॥ २३ ॥

५८ ५९ ६०
'विमल' 'प्रभासा' अरु 'निर्मलतर',
साठ नाम प्रभु भाख्या जो।
प्रवृत्ति और निवृत्ति रा योगे,
भिन्न-भिन्न नाम ये दाख्या जो ॥र०॥२४॥
नहिं हणनो निवृत्ति जाणो,
परवततो गुण रक्षा जो।
प्रवृत्ति निवृत्ति दोनों ओलखाया,
यां (साठ) नामां रो दीनी शिक्षा जो ॥२५॥
त्रिविधे-त्रिविधे छः काय न हणनो,
हणने तो धर्म बतावे जो।
त्रिविधे-त्रिविधे ज वरक्षा करण ने,
पाप कहि धर्म लजावे जो ॥ रक्षा० ॥२६॥
नहिं हणनो ने रक्षा करणो,
ते प्रभु आज्ञा आराधो जो।

(प.ई) "रक्षा करणो मारो पर आणे,
(पी०) रक्षा में पाप बतावे जी।
[illegible] धर्मशास्त्र में [illegible],
[illegible] धर्म में पाप में [illegible] जी" ॥
[illegible] ॥[illegible]॥
[illegible] रक्षा में [illegible],
[illegible]
[illegible] पाप बतायो,
[illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] के [illegible],
[illegible]।
[illegible]
[illegible] ॥[illegible]॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥[illegible]॥
[illegible]
[illegible]

(तो) मरणवालो पिण पाप थी बचियो,
तेनो करुणा में पाप क्यों गावोजी॥र०॥५९॥
हिंसक (री) करुणा में धर्म बतावे,
मरणेवाला री में पापो जी।
या खोटी श्रद्धा परतख दीसे,
जे थापे ते पामे सन्तापो जी ॥रक्षा०॥६०॥
(कहे) "छकाया रा शस्त्र जीव अव्रती,
(त्यांरो) जीवणो-मरणो न चावे जी।"
तो पाणी थी उन्दिर मारया काढ़ो,
(तेथी] थारी श्रद्धा खोटी थावेजी ॥रक्षा०॥६१॥
(कहे) 'म्हें तो जीवणो मरणो न चावाँ,
पाप टालणो चावां जी।"
(उत्तर) तो जीवरक्षा पिण पाप टालण में,
स्व-पर नो पाप पचावा जी ॥रक्षा०॥६२॥
मारण ने मरणेवाला रो,
पाप छोड़ावा बचावां जी।
मरणेवाला री दया किया सूं,
घातक रा पाप छुड़ावां जी ॥रक्षा०॥६३॥
जीव गरीब अनाथ दुखी री,

मरता जीव ने कोई बचावे,
  जामें पाप बतावे जी ।
ते पाप बताया समकित नावे,
  जांरा मूल-उत्तर गुण जावे जी ॥रक्षा०॥६९॥
(जो कहे) "त्रिविधे-त्रिविधे जीव-रक्षा न करणी"
  (उत्तर) तो हिंसक री हिंसा छोड़ाया जी
मरता जीवां री रक्षा होनी,
  थारी श्रद्धा सूं पाप कमाया जी ॥रक्षा०॥७०॥
"बीच में पड़ पाप नहीं छोड़ावणां,"
  इसड़ो थे धर्म बतावो जी ।
तो हिंसक पाप करे तिण बीच में
  उपदेश देण क्यों जावो जी ॥ रक्षा० ॥७१॥
इण कारण जीव-हिंसा करे कोई,
  अहित अबोध ते पावे जी ।
जीवरक्षा थी समकित पावे,
  अहित त्रिकाल न थावे जी ॥रक्षा०॥७२॥
जीवहिंसा प्रभु खोटी बताई,
  (आठ) कर्मा री गांठ बंधावे जी ।
जीवरक्षा प्रभु आछी भाखी,

[illegible]

[illegible]

[ग] [illegible] दिखावा,

[illegible]

[घ] [illegible]

श्रावक के दिखावे हो।

जिन में [illegible] पाप [illegible]

निण में एकान्त पाप पनावे,
ते एकान्त मिथ्याकर्मी जो ॥रक्षा०॥ ९७ ॥
कोई जीवाँ रा दुःख मेट्या में,
एकान्त पाप पनावे जो
त्यांने जाण मिले जिन धर्म रो,
(तब) किण विध मारग लावे जो ॥रक्षा०॥९८॥
लोह नो गोलो अग्नि तपायो,
ते अग्निवर्ण कर नातो जी ।
[ते] पकड़ संडासा लायो निण पासे,
(कहे) वलतो गोलो झेलो हाथो जा ॥र०॥९९॥
(जाप) दयाहीण हाथ पाछो खेंच्यो,
तब जाण पुरुष कहे त्यांने जो ।
थें हाथ पाछो खींचो किन कारण,
थारो श्रद्धा मन राखो छाने जो ॥र०।१००॥
जाद कहे गोलो म्हें हाथ में त्यां तो,
(म्हारो) हाथ बले दुःख पावां जी ।
(तो थारा) हाथ बालना ने जो म्हें वरजां,
तो धर्मी के पापो कहावां जो ॥र०॥१०१॥
(कहे) "(म्हारा) हाथ बलता ने जो कोई बरजे —

अनन्त जीवाँ रा प्राण हूँ लिर्यां,
   हवे रे कोई जिनराज जी।
पृथ्वी पाणी वनस्पति, त्रसाँ,
   जिनजी रो सीधो मारग जी ॥रक्षा०॥१०७॥
(कहे) "धर्म रे कारण हिंसा कीधाँ,
   दोष थोड़ो सो लागे जी।"
तो साधु काजे हिंसा करता ने,
   जिन धर में धर्म कठा हालोजी॥रक्षा०॥१०८
'सुयगडाङ्ग' रा माग छै ने,
   तेउआगर धर्म बतावे जी।
धर्म रे काजे हिंसा हुई पाप,
   जैनें मिथ्यात्व पर्वी न बतायाजी॥रक्षा०॥१०९॥
(कहे) "दर्शन धर्म अर हिंसा पाप रो,
   दोनों मानां न्यारा जी।"
(उत्तर) तो सापणी पन्नवणा धर्म में,
   हिंसा पाप में धारो जी ॥रक्षा०॥११०॥
उघाड़े मुख बोल्यो (थाँने) आहार आमंत्रे,
   (बलि) मुख खुले बोल बैरावे जी।
जीव असंख्य, हण्या तुम काजे,

शुरू कियो चोमासो जी ।
कोठारयां शुद्ध श्रद्धा धारी,
पामी ज्ञान प्रकाशो जी ॥रक्षा० ॥१२९॥

इति नवमी ढाल सम्पूर्णम् ।

ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः



दयादान प्रतिपादक

श्रीगब्बूलालजी महाराज

विरचित—

पद्य-संग्रह

॥ [illegible] कृत दान ढाल ॥

दानके गुण को कैसे जान
दान से पावोगे कल्याण ॥टेर॥
प्रथम श्री ऋषभदेव भगवान,
हुए [illegible] गुणवान ।
सभी ने दिया है वर्षी दान,
शास्त्रमें है जिसका परमान ॥

दोहा

एक क्रोड़ आठ लाख सोनैया
हाथसे देते दान ।
दुःख मिटाया दुखी जीवका,
पाया पद निर्वाण ॥
इसीसे समझो सकल जहाना ॥दान०॥१॥
सूत्र ठाणायंग मझार,
दान फरमाया दस प्रकार ।
पूरा अर्थ लो हिरदयमें धार,
तिरने चाहो यदि संसार ॥

दोहा

अनुकम्पा संग्रह भय, कालुणि लज्जा जान ।
गारव अधर्म धर्म आठवां, काहीइ कृत दान

युक्तियाँ खोटी मनसे लगाय ।
सदा ही अपना स्वार्थ चाय,
औरको देना दिया उठाय ॥

दोहा

अनन्त संसार बढ़ाय के,
जावे जन्म को हार ।
प्राणीमात्रसे ये ध यँधे है,
देखो शास्त्र मँझार ॥
दसवें अंगमें है यह ज्ञान ॥दान०॥७॥

क्षमादि धर्म्म निभाने काज,
मुनीको है संजमका साज ।
अशनादिक चतुर्दश जानो,
फासुक निर्दोषा मानो ॥

दोहा

भव परम्परा घटायके,
बाँधे पुण्य अपार ॥
स्वर्गादिकको कह्यो पावे,
पावें मोक्ष दुवार ॥
यही करना भवका कल्याण ॥दान०॥८॥

ईं सुन्दर चन्दन इंद पाया,
सुंदर आंगन दरवाजा ।
महाराजा दासीका पानी,
दांतरूप जसोमति रानी ॥

दोहा

नेम राजुल दो गये,
पारसमें जिन राज ।
तोरण जाकर पशु बचाये,
अभयदानके काज ॥
मोक्ष गये करके अक्षयध्यान ॥दान०॥९॥
धन्ना शालिभद्र कुमार,
दानसे पाये सुख अपार ।
सुबाहु कुंवर आदि सुखदाय,
गये जो स्वर्ग मोक्ष सुख पाय ॥

दोहा

अनन्त जीव जो तर गए,
भव संसार महान ।
सभी तरनका सुखको चाहो,
देओ सुपात्र दान ॥

कहां तक मैं कर सकूं बयान ॥दान०॥१०॥

धर्म दान है दो परकार,
सुपात्र अभयदान विचार
कह दिया सुपात्र दानका हाल,
सुनो अब अभयदानकी चाल ॥

दोहा

मरण भय सबसे बड़ा,
मरना न चाहे कोय।
मरण भय जो कोइ मिटावे,
तन धन देकर सोय ॥
कमावे जगमें धर्म महान ॥दान० ॥११॥

श्रेष्ट ये सब दानोंमें दान,
कहा अंग दुसरेमें भगवान।
इसीसे हुए हैं शांतीनाथ,
सुनो मेघरथ राजाकी बात ॥

दोहा

भय पाया परेवड़ा,
आया गोद मंझार।
अपना तन दे उसे बचाया,

[illegible]

[illegible] ॥

[illegible]

[illegible] ।

[illegible]

[illegible] ॥

दोहा

[illegible]

आया [illegible] पाय [illegible]

[illegible]

पाया [illegible]

[illegible] दान [illegible] ॥दान०॥६॥

[illegible] मुनि [illegible]

[illegible] दान ।

[illegible]

[illegible] ॥

दोहा

मुनि [illegible]

लिया है [illegible] भार ।

करते ऐसे काम।
वीतरागका आशय छोड़ो,
करते अपना नाम॥
धाम नरकोंके लो पहिचान॥दान०॥१६॥
अपना पेट भरनके काज,
प्रथम ही बांधो गाढी पाज।
बोलन मुखसे न आई लाज,
आपही बन बैठे हैं जहाज॥
दोहा॥
हम सिवाय संसारके,
सब कुपात्र नर नार।
पात्र हमारे भरदो पूरण,
बोले वारंवार॥
औरको देना पाप महान॥दान०॥ १७॥
हमको दिया धर्म फल पाय,
औरको दिया पाप बनजाय।
भूलसे दो दूसरेको दान,
: से करलो पछतान॥

दोहा ॥

ऐसी बात अनेक बनाकर,
फसा दिये नर नार।
समझाना हो गया है मुश्किल,
चाहे आप करतार ॥
आती इनकी करुणा महान ॥दान० ॥१८॥

ढाल दूसरी

म्हाने आवे अनुकम्पा किस विध,
तिरसी रे थांरी आतमा।
प्रभु कृपा करीने सद्‌बुद्धि,
देवो मोरे आनमा ॥ टेर ॥
शासन नायक वीर प्रभू जो,
चौबिसमां जिनराज।
साधु साध्वी श्रावक श्राविका,
सुमिरण करते आज ॥
मर्यादित और कलिकाल में,

यही तिरणकी जहाजरे ॥म्हा० ॥१॥
माताका उपकार परम है,
देव गुरू समान।
विनय भक्ति आज्ञाका पालन,
सुकृत मांय बखान ॥
स्वर्ग सुखोंका साधन समझो,
यही प्रभुकी बानरे ॥म्हा० ॥ २ ॥
तीन ज्ञान धर ये जय प्रभुजो,
गर्भावास दरम्यान।
जननी की अनुकम्पा करके,
धर दिया निश्चल ध्यान ॥
जोवन रहते संजम न लूं,
अभिग्रह पहिचानरे ॥ म्हा० ॥ ३ ॥
इस करणी में पाप बताते,
कलियुगके सरदार ॥
चार ज्ञान धर चूके कहकर,
चढावे सिर पर भार ॥
पाप कहैं वे पापी नर हैं,
पाखंड मतके धार रे ॥ म्हा० ॥ ४ ॥

सर्वज्ञ मुखसे सुना है मैंने,
सुन जम्बू अणगार ।
छद्मस्थपन में पाप न कीन्हा,
वीर एक भी बार ॥
आचारांग में सुधर्म स्वामी,
यह कीन्हा निर्धार रे ॥ म्हा० ॥ ५ ॥
कलीकाल के जन्मे कहते,
वीर गये हैं चूक ।
अनुकम्पाका द्वेषी वैरी,
झूठ मचाई हूक ।
अनन्त अवगुण वाद बोलकर,
हाथसे गये हैं सूतरे ॥ म्हा० ॥ ६ ॥
छे लेश्या छद्मस्थ वीर में
इसको करके थाप ।
चूका कहते वीर प्रभूको,
सूतर वचन उत्थाप ।
झूठी कथनी कथी अज्ञानी,
सुनके उपजे ताप रे ॥ म्हा० ॥ ७ ॥
हाथ जोड़ कर शीश नमाऊं,

सुनो वीर भगवान ।

निर्दय दुःखते दुःखी दासों,

मेरे दुःखते प्राण ॥

चोर भाव मुझसें मत आवो,

मांग प्रभुसे दान रे ॥ म्हा० ॥ ८ ॥

लेश्यावत लक्षण परमाया,

गणधरजी गुं गाय ।

चौतीसमा अध्येनको देखो,

सुणजो तुम हुल्लसाय ।

किंचित लक्षण तुमें सुनाऊं,

धारो हिरदय मांय रे ॥ म्हा० ॥ ९ ॥

हिंसा करता झूठ बोलता,

चोर लम्पट जानो ।

महा ममत्वा ममाई पूरा,

तीव्र आरम्भी मानो

मन वच काया रसे भोगता,

करे छकायकी हानी रे ॥ म्हा० ॥ १० ॥

सबका अहित करनेवाला,

ऋद्धिक दुर्गुण धरता ।
लक्षण नील लेश्याका ऐसे,
वीरने यथोक्त पाता ॥ म्हा० ॥ १४ ॥
टेढा बोले टेढा चाले,
टेढा ही करे काम ।
कपटी अपना दोष छिपावे,
मिथ्या दृष्टी नाम ॥
अनार्य वज्र सरीखा बोले,
करे चोरीका काम रे ॥ म्हा० ॥ १५ ॥
गुणी जनो का मत्सर धरता,
कपोत लेश्या मानी ।
ऐसी लेश्या वीरके कहते,
वे हैं बड़े अज्ञानी ।
कलीकाल की महिमा देखो,
कैसे हैं अभिमानी रे ॥ म्हा० ॥ १६ ॥
प्रशस्त लेश्या पावे मुनि में,
भगवती में फरमाया ।
प्रथम शतक उद्देशा पहिला,
पूरा भेद बताया ॥

महावीरके वचन अराधो,
सफल करो सब काया रे ॥ म्हा० ॥ १७ ॥
द्रव्य भावसे प्रशस्त लेश्या,
वीर प्रभू में आनो।
छ लेश्या पानेको अब तुम,
झूठो हठ मत तानो ॥
परभव निश्चय जाय नो सरे,
छोड़ देवो दुर्ध्यानोरे ॥ म्हा० ॥ १८ ॥
तीन भुवनमें रूप अनूपम,
कंचन वर्णी काया।
पद्मगंधसे सुगन्ध अनन्ता,
श्वासोच्छ्वास सुखदाय ॥
उज्वल लोही मांस प्रभूका,
यही अतिशय कहाय रे ॥ म्हा० ॥ १९
महावीर की छद्मस्थअवस्था,
कैसे करूं बखान ॥
बारा वर्ष छःमास अधिक में,
पाये केवल ज्ञान ॥
घोर तपस्या करी वीर प्रभु,

काटे कर्म महान रे ॥ म्हा० ॥ २० ॥
ग्यारा वर्ष के साधक पर्याय में,
सहन्या कष्ट अपार।
अन्न जल त्याग्यो अर्धे मासे,
भज निज धर्म सार ॥
धर्म ध्यान अरु शुक्ल ध्यान में,
प्रगटित कियो शुभ ज्ञान रे ॥ म्हा० ॥२१॥
किया न कोप किसी जीव पे,
किन्तु किया कल्याण।
पाली सुमती गुप्ति प्रेम से,
महाव्रत पांचों महान ॥
शील सत्य की ले आराधना,
सींचो ध्यान कमान रे ॥ म्हा० ॥ २२ ॥
देव मनुष्य तिर्यंच त्रास रे,
सहा परीषह भारी।
दुःख दिया नहिं किसी जीव को,
बन सब के हितकारी ॥
गुण अनन्ता कहां तक गाऊं,
अल्प बुद्धि है म्हारो रे ॥ म्हा० ॥ २३ ॥

ढाल तीसरी

दान की महिमा जाति भारी,

भाव शुद्ध से हैं सुखकारी ॥ टेर ॥

आज इस काले काल माईं,

निर्दयता रही जग छाई।

अनुकम्पा दान कौन देवे,

खोटी मौजा मे रेवे ॥

दोहा ॥

इण ऊपर कुगुरु मिले,

दी अनुकम्पा उठाय ॥

सहाय करे दुखिया की दान से,

इसमें पाप पनाय ॥

ऐसे हैं जैन—वेश धारी ॥ दान० ॥ १ ॥

साधु हम भरत खंड माईं,

सुपातर हमहिज हैं भाई

कुपात्तर और सभी जानो,

ऐसी तो कुगुरु

रिजु बालिका नदी किनारे,
ध्यायो शुक्र ध्यान।
नाश किया घनघाती कर्म जय,
प्रभु पाया केवल ज्ञान॥
बहुत जीव को तारे प्रभु ने,
पाये पद निर्वाण रे॥ म्हा० ॥ २४॥
अवधि मन पर्जय ज्ञान,
और पांचवाँ केवल ज्ञान।
जो जो भाव देखा चन मांही,
वही किया वृद्धमान॥
ऐसा प्रभु का सरणा लेवे,
निश्चय होत कल्याण रे॥ म्हा० ॥ २५
जवाहिर लाल जी पूज्य प्रसादे,
जोड़ी गब्बू लाल।
सरदार शहर के माय ने सरे,
छियासी के साल॥
गावे जो कोई नर नारी,
तो पावे मंगल माल रे॥ म्हा० २६॥

ढाल तीसरी

दान की महिमा जनि भारी,
भाव शुद्ध से हैं सुखकारी ॥ टेर ॥
आज इस काली काल माईं,
निर्दयता रही जग छाई।
अनुकम्पा दान कौन देवे,
खोटी मौजा मे रेवे ॥

दोहा ॥

इण उपर कुगुरू मिले,
दी अनुकम्पा उठाय ॥
सहाय करें दुखिया को दान से,
इसमें पाप बताय ॥
ऐसे हैं जैन—वेश धारी ॥ दान० ॥ १ ॥
साधु हम भरत खंड माईं,
सुपातर हमहिज हैं भाई।
कुपात्तर और सभी जानो,
ऐसी तो कुगुरु करे ताणो ॥

पाचवीं ढाल

ब्रह्मचारी होतो कहो, पारं वारियां रे ॥ टेर ॥

साधु स्थान में रात पड्यां,

मत आओ नारियां रे ॥ ब्र० ॥

उत्तराध्ययन सूत्र के मांय,

सोलमा अध्ययन है सुखदाय।

ज्यामें भाय गया जिन राय,

प्रथम गाथा देखो चित लाय॥

खोल हृदय किवाड़ियां रे ॥ ब्र० ॥ १ ॥

आचारंग की भावना देखो,

नववाड़ हृदय से पेखो ।

सुनिये प्रश्न व्याकरण को लेखो,

अब तो काम राग ने छेको ॥

सीख सुख कारियां रे ॥ ब्र० ॥ २ ॥

सहित मकान में रेवे,

और कया उनही कोकेवे ।
नशीथ सूत्र प्रायश्चित देवे,
अष्टम उद्देशे देख लेवे ॥
किया निरवारियां रे ॥ व्र० ॥ ३
जैनी साधू नाम धरावे,
सेवा थायों से कर वावे ।
नहीं शरम जरा पिण आवे,
पुरुष पास में नहीं रहावे ॥
या सेवा दुख कारियां रे ॥ व्र० ॥ ४
जिनेश्वर की आज्ञा को लोप,
मिथ्या धर्म को खूंटो रोप ॥
भोले नर नारो हे चोप (द)
वांधन वाले यहो गोप ॥
न किसी ने विचारियां रे ॥ व्र० ॥ ५ ॥
नारी स्वरूप शास्त्र में गाया,
जिसका पूरा भेद बताया ।
महा ज्ञानो ध्यानो डिगाया,
तुम तो हो कलिकाल के जाया ॥
है नागन सी नारियां रे ॥ व्र० ॥ ६ ॥

छठवीं ढाल

कुमति घट दर्शाई रे ॥ टेर ॥

अनुकम्पा दया को सावज्ज
ठेराई रे ॥ कुमति घट० ॥

आचारंग आदि बत्तीस सूतर,
सब ही जैन सिर धारा रे।
मूल पाठ अर्थ टीका अन्दर,
नहीं (यह) शब्द उचारा रे ॥ कु० ॥ १॥

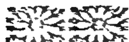
कई व्याकरण कोष किनेई,
प्रसिद्ध दुनियां माईं रे।
सावज्ज अनुकम्पा शब्द पाया,
न व्युत्पत्ति पाई रे ॥ कु० ॥ २ ॥

टीका चूर्णि भाष्य बहुत हैं,
अवचूरि दीपिका जानो रे।
न्याय अलंकार वेद पुरान में,
नहीं परमानो रे ॥ कु० ॥ ३ ॥

अनुकम्पा कहो करुणा कहो चाहे,
दया शब्द उचारो रे ।
तीनु ही शब्दका रक्षा करना,
अर्थ विचारो रे ॥ कु० ॥ ४ ॥
अपर कहते पापको भाई,
स शब्द आदि लगावे रे ॥
पाप सहित सावद्य शब्द बना है,
सो स्पष्ट दिखावे रे ॥ कु० ॥ ५ ॥
सहस्र किरण सूरज कहा अरु,
अंधेरा अति छाया रे ।
दोनों साथ में कभी नहीं रहते,
यही भ्रम माया रे ॥ कु० ॥ ६ ॥
शीतल चन्द्रमा कह दिया फिर,
अग्नि समा बतावे रे ।
मूढ़ धर्मी यों ही दया कह कर,
फिर सावद्य लगावे रे ॥ कु० ॥ ७ ॥
कारण कारज समझे नहीं मूरख,
बोथाने बहकावे रे ।
[illegible] ने सो कारज बताई,

दया उठावे रे ॥ कु० ॥ ८ ॥
साधु ने असाधु कहे तो,
मिथ्यात लग जावे रे।
वैसे ही कारण ने कारज बतावे,
तो मिथ्यात फैलावे रे ॥ कु० ॥ ९ ॥
गुरु भक्ति में तो लाभ बतावे,
दरशन करवा जावे रे ।
गाड़ी घोड़ा ऊंट रेल चढ़े जब;
जीव मर जावे रे ॥ कु० ॥ १० ॥
कारज तो गुरु भक्ति करना,
कारण असवारी जाणो रे ॥
कारणमें आरंभ पिण होवे,
लाभ कारज जाणों रे ॥कु० ॥ ११ ॥
तिर्यंच हो कर दया जो पाली,
श्रेणिक नृप घर जाया रे।
मेघरथ राजा दया जो पाली,
तीर्थंकर कहलाया रे ॥ कु० ॥ १२ ॥
हरण गमेष्यादि कई देवता,
दया जीवां की कीधीरे ।

मरते जीव बचावो रे।
जीव दया के प्रताप सभी दिन,
साता पावो रे ॥ कु० ॥ १८ ॥
मोह अनुकम्पा और सावद्य दया,
अब तो कहना छोड़ो रे।
पूर्व पाप का पश्चाताप करो ने,
कर्म को तोड़ो रे ॥ कु० ॥ १९ ॥
संवत उन्नीसौ साल निन्यासी,
सरदार शहर मांही रे।
असोज वदी अष्टमी दिन में,
जोड़ बनाई रे ॥ कु० ॥ २० ॥
पूज्य जवाहिरलाल प्रसादे,
'जैन बाल' सुख पाया रे।
दया धर्म का मर्म भाव से,
गाय सुनायो रे ॥ कु० ॥ २१ ॥



आहार मंगावे पाणी मंगावे,
बोझा अपना लोकावे रे ।
ओघा बदावे पात्र रङ्गावे,
वस्त्र सिवावे रे ॥ इच० ॥ ४ ॥
विहार करे जब राजसत्यों जी,
आगे आगे जावे रे ।
दोनों वक्त पलेपण करेने,
आसन बिछावे रे ॥ इच० ॥ ५ ॥
साधु जीमे सतिया परुसे,
या विध कहां से आई रे ।
किस गणधर ने किस शास्त्रमांही,
आज्ञा बताई रे ॥ इच० ॥ ६ ॥
महावीर का निन्दव होता,
जामाली विख्यातो रे ।
बीमार पड़ा जब चेलापासे,
सेजा बिछातो रे ॥ इच० ॥ ७ ॥
चौथे आरे में निन्दव होना,
यह काम नहीं करना रे ।
...व से बढ़ कर बातें,

अब करवाना रे ॥ इण० ॥ ८ ॥
अविधि से साधु स्थान में,
अगर आहार आवे रे ।
उनके बोल करे यदि वहां पर,
सो प्रायश्चित आवे रे ॥ इण० ॥ ९ ॥
व्यवहार सूत्र में साफ मना है,
देखो आंखे खोली रे ।
बिन कारण व्यावच नहिं करना,
सो फिरते गोली रे ॥ इण० ॥ १० ॥
गच्छाचार पइन्ना में लिखा,
आरज्जां आहार लावे रे ।
नपुंसक गच्छ कहा है यां,
जो आरजा लावे रे ॥ इण ॥ ११ ॥
सुख सेजा अध्ययन में जो,
ठाणायंग के मांई रे ।
साधु अपने हाथ से सारणा,
सोवे मसांई रे ॥ इण० ॥ १२ ॥
साधु हाथ का जिम्मा सूना,
फिर है बारा बारा रे ।

पुरुषा कार पराक्रम करके,
मुगती पधारो रे ॥ इच० ॥ १२ ॥

॥ गजल ॥

कलियुग के जो नाम धारी जैन,
श्रावक सुनिये जरा।
दर्द हमको होत है
करतून, तुम देखी जरा ॥ टेर ॥ १ ॥
लाकर दया गरीब की कोई,
दान अनुकम्पा करे।
उसको पाप बताते हो तुम,
कैसे वाक्य उचरे ॥ २ ॥
बचावे मरते जीव को,
अभय दान प्रभुजीने कहा।
धर्म के बदले में अब जो,
पाप ही तुम ने कहा ॥ ३ ॥
न्याय नीति युक्त कोई करे,
है इहलोत्थान है ।

स्वार्थ अन्दर लिपटाय के,
कहते पाप जो महान है ॥ ४ ॥
माता पिता का पुत्र पे,
उपकार शासतर में कहा।
पाप एकन्त तुमने तो
सेवा करने में कहा ॥ ५ ॥
पतित पावन जैन दर्शन,
के नियम विशाल हैं।
जिसके सहारे नर कोई,
चाले तो होवे न्याल है ॥ ६ ॥
राय परदेशी की निर्दयता,
बड़ी जो क्रूरता।
देखो न गई चित सारथी से,
उसकी बड़ी निष्ठुरता ॥ ७ ॥
प्रत्यक्ष ज्ञानी केशी स्वामी को,
कहे सरनाय के।
सदुपदेश देवो प्रभुजी,
हम पे कृपा लाय के ॥ ८ ॥
अनेक पशुपक्षी को पे,

मौत से ये मारता।
जीवों की रक्षा होवे और,
राजा बने दया पालता ॥ ९ ॥
मानी अदानी है राजा,
तकलीफ भिक्षु को देन है।
दीजिये अब ज्ञान ऐसा,
सबसे भलाई लेन है ॥ १० ॥
कठोर कर से इनकी प्रजा,
सारी बनी व्यकुल है।
संतोष सबको हो प्रभु जी,
इन्हें ज्ञान दो अनुकूल है ॥ ११ ॥
पास में मेरे वो आवें,
ज्ञान जरूर पायगा।
जो हजूर ये दास तेरा,
चरणों में इन्हें लायगा ॥ १२ ॥
अदद का पहना बना के,
लाया मुनी के पास में।
युक्तियां दे ज्ञान की,
मुरू किया मोह पास से ॥ १३ ॥

ज्ञानी धना ध्यानी धना,
दानी धना धना तपसी महा ।
दुख मिटाया सुखी बनाया,
धन गुरु केशी महा ॥ १४ ॥
मिथ्या श्रद्धा छोड़ के,
अब चित्त सम धन जाइये ।
होयगा कल्याण सबका,
ये बात हिरदे लाइये ॥ १५
साल अठ्यासी भादरा में,
पूज्य जवाहिर लालजी ।
सादस सन्त साथ में,
विराजे शेष काल भी ॥ १६
इति शुभम्



शुद्धि पत्र



पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
२४	११	मूल	मूल
२८	११	कृष्णजीका	कृष्णजीकी
३१	२	वां	(वां)
३२	१८	एयवो	एह्वो
४२	२	टांदा	दांदा
४४	१२	हूंसो	हूंसी
४७	३	दृष्टान	दृष्टांन
४७	१८	ठागा	ठागो
६७	१८	गान	गाथा ८
७१	१८	नियच	निर्वंन्द
८१	१८	आनो	आगो
९३	१	घोड़ो	घोड़ो
९५	१६	मननेन	मननेनेन
९७	४	दुदयो	दुयोयो

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
१८५	१८	डावडो	डावडा
१८७	६	जा	जो
१८९	१४	जाव	जीव
,,	,,	जा	जा
१९६	१८	पचया	पचाया
२०२	७	धम	धर्म
२०५	११	मारतां	मरतां
*२०९	४	याड़यारोतियारे—	पाडणरी निणरे
२१७	१८	करनेको	करने हो
२१९	११	३९	६९
,,	१५	हो	हो
२२४	५	सेणिक	श्रेणिक
,,	६	तुम्हें	म्हें
२२६	१०	तणा	तणी
२२७	१७	वारजो	वीरजो
२२९	७	वीरो	वीर
२३६	३	थारा	थांरो
२४१	११	उणों	उण

* कुछ प्रतियों में शुद्ध छपा है।